नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 314, नई दिल्ली, मंगलवार 13 जनवरी 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

जिस इंसान के पास आशा होती है, वह कभी पराजित नहीं होता है!

03 मकर संक्रांति से एक दिन पहले लोहड़ी पर्व मनाया जाता है,
06 दिल्ली सरकार, ट्रांसपोर्ट डिपार्टमेंट, सीएक्यूएम और नगर निगम की...
08 स्वदेशी जागरण मंच जिला कार्यालय में स्वामी विवेकानंद जी पर एक...

दिल्ली का सड़क नर्क: जाम - जहर - मौत का तांडव — अधिकारियों, अब शर्म करो!

दिल्ली की सड़कें खुला जेल खाना बन चुकी हैं — जाम में पिसो, असुरक्षित बसों में सफर करो, जहरीली हवा पीकर मरो!

संजय कुमार बाठला, परिवहन एवं पर्यावरण नीति विशेषज्ञ

- लाखों दिल्ली वासी रोज 2-3 घंटे जाम में सड़ते हैं,
- समय पर बस का नामोनिशान नहीं, और
- AQI 400 पार होते ही सांसें रुक जाती हैं।
- यह जनसंहार है, लापरवाही नहीं!
- 60,000 करोड़ रुपये सालाना का आर्थिक खून बह रहा,
- 17,000 मौतें प्रदूषण से।
- **आखिर कब तक सहेंगी जनता यह लूट?** अब विद्रोह का वक्त है — कारण उजागर, नुकसान बयान, दोषी बेनकाब!

जाम के राक्षस कारण: लापरवाही, भ्रष्टाचार और नीतिगत विफलता

- **दिल्ली का जाम क्यों नर्क?**
- अवैध पार्किंग,
- बिना फिटनेस वाली पुरानी बसें
- (DTC फ्लीट मात्र 5,336, जिनमें से आधी अव्यवस्थित),
- ई-रिक्शा माफिया की बाढ़ और
- ट्रैफिक सिग्नल की खिलवाड़!
- 2025 में जनवरी-मई तक 2,235 हादसे,
- **ट्रैफिक पुलिस के आंकड़े चीखते हैं**
- ई-रिक्शा अनियमित — जनवरी-अगस्त 2025 में 108 हादसे, 26 मौतें!
- **दिल्ली हाईकोर्ट चिल्ला रहा, GNCTD सोया हुआ। क्या यह साजिश है?**
- **सार्वजनिक सवारी का हाल?** DTC बसें घटकर 5,835 (2025 जुलाई तक), जरूरत 10,000+!
- देरी से यात्री तड़पते,
- overcrowding से दुर्घटनाएं।
- **प्रदूषण?**
- BS-III डीजल राक्षस,
- स्टबल बर्निंग,
- निर्माण धूल—AQI 380 तक पहुंचा,
- GRAP-3 हटाया गया लेकिन हवा जहरीली!
- **सुप्रीम कोर्ट ने EOL वाहनों पर बैन लगाया, फिर भी उल्लंघन!**
- अधिकारी कहां हैं?
- **भयानक नुकसान - दुष्प्रभाव:** जनता का खून - पसीना, मौतों का सैलाब
- **जाम का खौफनाक नुकसान** —सालाना 60,000 करोड़ रुपये डूब रहे, 2030 तक 98,000 करोड़!
- ईंधन बर्बादी,
- उत्पादकता शून्य,
- लॉजिस्टिक्स ठप।
- प्रतिदिन 4 मौतें सड़कों पर — 2025 जनवरी - मई में 577 शव!
- महिलाएं - बुजुर्ग असुरक्षित,
- ई-रिक्शा हादसे 130 घायल!
- **प्रदूषण का जहर**—2023 में 17,188 मौतें (15% कुल मौतें),
- PM2.5 फेफड़े खा रहा!
- अस्थमा, कैंसर, हृदय रोग — बच्चे-बुजुर्ग सबसे ज्यादा शिकार।
- सार्वजनिक सवारी की कमी से प्राइवेट वाहन बढ़े, प्रदूषण चरम पर।
- **यह महामारी है—जन स्वास्थ्य का कत्लेआम!**
- **आक्रामक जनहित समाधान:**
- तत्काल क्रांति लाओ, बहाने बंद!
- अब चुप्पी तोड़ो!
- स्मार्ट ट्रैफिक क्रांति — एआई सिग्नल, ANPR कैमरे से जाम 40% काटो, बेंगलुरु मॉडल अपनाओ।
- केंद्र का 23,850 करोड़ प्लान तुरंत लागू!
- सार्वजनिक सवारी पर हमला — DTC फ्लीट 13,760 तक बढ़ाओ (3,300+ ई-बसें तुरंत!),
- रीयल-टाइम ऐप अनिवार्य,
- 109 रूट रेशनलाइजेशन करो।
- ई-रिक्शा पर कैप,
- सेफ्टी चेक,
- बिना परमिट जब्ती!
- प्रदूषण पर सर्जिकल स्ट्राइक — GRAP सख्त,
- BS-III/IV डीजल जला दो,
- ग्रीन कॉरिडोर,
- एंटी-स्मॉग गन्स हर साइट पर।
- **जनता जागो** —
- कार पूलिंग,
- प्रदूषण रिपोर्टिंग ऐप यूज करो।

ये कदम 6 महीने में दिल्ली बदल देंगे!

जिम्मेदारी का घिनौना खेल: दोषी कौन — अब जवाब दो!

1. दिल्ली सरकार (GNCTD),
2. ट्रांसपोर्ट डिपार्टमेंट,
3. सीएक्यूएम,
4. MCD
5. — **तुम्हारी नाकामी से दिल्ली मर रही!**

सुप्रीम कोर्ट - हाईकोर्ट आदेश तोड़े,

1. GRAP उल्लंघन,
2. ई-रिक्शा अनियंत्रित!
3. केंद्र की नीतियां कागजों पर,
4. NCRTC चुप।

- **ट्रांसपोर्ट मिनिस्टर, क्या कहोगे** — फ्लीट घटाकर जनता को सौंपा?
- **सीएक्यूएम,** GRAP हटाकर हवा साफ?

जनता का कर्तव्य? हां, लेकिन मूल दोष तुम्हारा — लापरवाही से परेशानी! **कुर्सी बचाने बंद करो, काम शुरू करो वरना सड़कें उलट देंगी।**

परिवहन विशेष जनहित विशेष कॉलम

विदेशी पर्यटक भारतीय मंदिरों में ज़्यादा शांति महसूस करते हैं - क्यों?

संजय कुमार बाठला

क्या आप जानना चाहते हैं की आज हमारी भक्ति को हमारी जगह विदेशी पर्यटक अपना बना रहे है और हम उससे दूर भाग रहे हैं, आखिर क्यों?
* विदेशी पर्यटक संस्कृत नहीं जानते।
* वे कभी आरती करते हुए बड़े नहीं हुए।
* वे देवताओं के नाम भी नहीं जानते।
* और फिर भी जब वह किसी भारतीय मंदिर में बैठते हैं, तो अक्सर अपनी आँखें बंद कर लेते हैं, उनकी आंखों में आँसू आ जाते हैं।
* उनके आगे एक सन्नाटा छा जाता है।
* उनके दिल में कुछ हिलता है।
* जब की उसी मंदिर में कई भारतीय अंदर आते हैं,
* सेल्फी लेते हैं,
* मन्नतें मांगते हैं और
* चले जाते हैं,
* ऐसा क्यों हो रहा है?

दूसरी संस्कृतियों के लोग हमारे पवित्र स्थलों से हमसे ज़्यादा गहराई से क्यों जुड़ रहे हैं? यह विषय विदेशियों के बारे में नहीं है, यह हमारे लिए एक सच्चा आईना है।

1. विदेशी पर्यटक मंदिरों को समस्या - समाधान काउंटर की तरह नहीं देखते।
2. विदेशी लोग मंदिर में नई नौकरी, विदेशी वीज़ा या बेहतर शादी की दुआ मांगने नहीं जाते।
3. विदेशी पर्यटक महसूस करने जाते हैं, बस महसूस करने और कुछ नहीं।
4. विदेशी पर्यटक चमत्कार की उम्मीद नहीं करते, वे जवाब भी नहीं माँगते, वे बस बैठते हैं और शांति प्राप्त करते हैं।

लेकिन हम?
* हम एक सूची लेकर चलते हैं
* "भगवान, बस इस बार क्लियर करवा दो
* ""बस यह रिश्ता ठीक हो जाए"और जब ऐसा नहीं होता, तो हमें लगता है कि मंदिर ने हमें निराश किया।
* लेकिन सच तो यह है की मंदिर कोई एटीएम की मशीन नहीं है, हमारे मंदिर ऊर्जा के स्थान है।
* विदेशी इसे महसूस करते नजर आते हैं पर हम अक्सर भूल जाते हैं।

2. विदेशी पर्यटक को मंदिर में कोई जल्दी नजर नहीं आती है पर हम हमेशा मंदिर में भी समय देखते रहते है।
* हमारे मंदिर में किसी विदेशी को देखिए वे 20, 30, कभी-कभी 60 मिनट तक एक कोने में चुपचाप बैठे रहते हैं, कोई शोर नहीं, कोई हलचल नहीं, बस आँखें बंद और धीमी साँसें और बीच बीच में कभी-कभी वे पुजारी को भी आश्चर्य से देखते हैं, जैसे कोई बच्चा आग देखता है।
* और हम?
* हम देखते हैं कि कतार कितनी लंबी है।
* हम पूछते हैं, "कितने बजे तक खुला है?
* "हम जल्दी से नमस्ते करते हैं, जल्दी से घंटी बजाते हैं और भाग जाते हैं।
* विदेशी पर्यटक मंदिर को समय देते हैं और हम मंदिर में समय बचाने की कोशिश करते हैं।

3. विदेशी पर्यटक सिर्फ़ ईश्वर को नहीं, बल्कि अंतरिक्ष को भी महसूस करते हैं, जब वे मंदिर के अंदर जाते हैं, तो उन्हें पता भी नहीं होता कि गर्भगृह में कौन सा ईश्वर है लेकिन उन्हें कुछ महसूस होता है, पत्थर में, सन्नाटे में, शंख की ध्वनि में, फूलों की खुशबू में, घंटी की गूँज में, चंदन के धुएँ में और उनके लिए बस इतना ही काफी है।
* और हम हम अंदर जाते हैं, एक नज़र डालते हैं, और कहते हैं,"यह तो शिव का मंदिर था?" और चले जाते हैं।
* विदेशी पर्यटक दिव्यता का नाम नहीं लेते वे हमारे पूजा स्थलों में उसके साथ बैठते हैं।

4. विदेशी पर्यटक जो नहीं समझते उसका मज़ाक नहीं उड़ाते और हमारे कई भारतीय युवा रीति-रिवाजों पर हँसते हैं, जैसे
* "वे पत्थरों पर दूध क्यों डालते हैं?"
* "इन मंत्रों का क्या मतलब है?"
* "मंदिर के पुजारी इतने पिछड़े हैं।"
* जब की विदेशी पर्यटक इसे देखते हैं, सुनते हैं, समझने की कोशिश करते हैं और अगर वे नहीं समझते - तब भी वे सम्मान करते हैं। क्योंकि वे अनुभव करने आए हैं, आलोचना करने नहीं।

5. विदेशी पर्यटक अहंकार लेकर नहीं आते और हम रुतबे के साथ आते हैं।
* विदेशी लोग एक विनम्र साधक की तरह नंगे पैर चलते हैं।
* वे एक बच्चे की तरह हाथ जोड़ते हैं, उन्हें जाति, पहनावे या वर्ग की परवाह नहीं होती, उन्हें किसी गरीब या संत के पास बैठने में कोई आपत्ति नहीं होती।
* लेकिन कई भारतीय श्रेष्ठता के साथ आते हैं
* "पंडित को किनारे करो
* ""लाइन में क्यों खड़ा होना पड़े?
* ""यह मंदिर तो छोटा है।"
* सच तो यह है की मंदिर अहंकार को शांति नहीं देता यह उसे शांति देता है जो खाली हाथ आता है।

6. विदेशी पर्यटक मंदिर को पवित्र मानते हैं। हम अक्सर इसे एक संरचना के रूप में देखते हैं।
* विदेशी पर्यटक के लिए, जैसे ही वे मंदिर के अंदर कदम रखते हैं - यह सिर्फ़ एक जगह नहीं रह जाती, उनके लिए यह पवित्र भूमि है, एक द्वार, एक उपस्थिति।
* भले ही वे पौराणिक कथाओं को न समझें, वे इसकी शक्ति को महसूस करते हैं।
* हमारे लिए, पुराना पत्थर "उबाऊ" हो जाता है, नक्काशी "पुरानी" हो जाती है, मंदिर "यात्रा का एक और पड़ाव" बन जाता है,
* हम हेडफ़ोन लगाकर इतिहास से गुज़रते हैं और वे खुले दिल से इतिहास में प्रवेश करते हैं।

7. विदेशी पर्यटक तर्क की तलाश में नहीं प्रकाश की तलाश में हैं और हम तर्क का सहारा लेते हैं।
* विदेशी हर रीति-रिवाज को समझने की कोशिश नहीं करते, वे जानते हैं कि हर दिव्य चीज़ को शब्दों में नहीं समझाया जा सकता।
* लेकिन हमें प्रमाण चाहिए। "यह मंत्र कैसे मदद करता है?""इस मंदिर के पीछे प्रमाण कहाँ है?""विज्ञान के हिसाब से तो यह सब बकवास है।"
* हम तर्क का सहारा लेते हैं। वे अनुभव के आगे समर्पण कर देते हैं।और इसीलिए उन्हें वह मिलता है जिस पर हम अभी भी बहस कर रहे हैं।

8. विदेशी पर्यटक मौन का सम्मान करते हैं। हम उससे डरते हैं।
* विदेशी पर्यटक लंबे समय तक अकेले, मौन में बैठे रहते हैं, कोई फ़ोन नहीं, कोई संगीत नहीं, कोई बातचीत नहीं, बस ईश्वर के साथ बैठे रहते हैं।
* हमें असहजता महसूस होती है।अगर पुजारी देर से आते हैं या आरती में देर हो जाती है, तो हम चिढ़ जाते हैं।हम बातें करते हैं, नोटिफिकेशन देखते हैं, गपशप करते हैं।
* विदेशी पर्यटक आत्मा के साथ बैठते हैं और हम स्क्रीन पर स्क्रॉल करते हैं।

9. विदेशी पर्यटक हज़ार तस्वीरें नहीं खींचते। वे एक याद खींचते हैं लेकिन हम मूर्ति के सामने फ़्लैश के साथ सेल्फ़ी।
* विदेशी अक्सर सिर्फ़ एक तस्वीर खींचते हैं - दूर से, सम्मानपूर्वक कभी-कभी, वह भी नहीं।
* लेकिन हम मूर्ति के सामने फ़्लैश के साथ सेल्फ़ी, आरती के दौरान पोज़, गर्भगृह की सीढ़ियों पर रील, हमारे लिए मंदिर एक पृष्ठभूमि बन जाता है - कोई पवित्र स्थान नहीं।
* विदेशी पर्यटक याद करने जाते हैं और हम प्रदर्शन करने जाते हैं।

10. विदेशी पर्यटक हमारे मंदिरों को औषधि मानते हैं। हम उन्हें परंपरा मानते हैं।
* विदेशी पर्यटक चिंता, अति-चिंतन, आधुनिक जीवन की थकान से मुक्ति पाने के लिए मंदिरों में आते हैं और कई लोग अपने मन में सच्ची शांति लेकर लौटते हैं।
* हमें बताया गया है कि मंदिर "रूढ़िवादी", "अत्यधिक कर्मकांडी" "आधुनिकता - विरोधी" होते हैं। इसलिए हम अपराध बोध या दबाव में जाते हैं - ज़रूरत से नहीं। लेकिन शायद हमें उनकी ज़रूरत उनसे ज़्यादा है। हम बस इसे भूल गए हैं।

11. विदेशी पर्यटक धार्मिक आघात नहीं ढोते। हम पीढ़ियों के ज़ख्म ढोते हैं।
* विदेशी लोग खुले दिल से मंदिरों में जाते हैं, कोई डर नहीं, कोई अपराध बोध नहीं।
* लेकिन कई भारतीय एक जटिल भावना के साथ जाते हैं:"क्या मैं पर्याप्त पवित्र हूँ?" "क्या यह जायज़ भी है?""क्या लोग मुझे यहाँ जज करेंगे?"
* हमारे उपनिवेशित अतीत, रीति-रिवाजों का लगातार मज़ाक उड़ाने और हमारी पहचान को शर्मसार करने की प्रवृत्ति ने हमारे और हमारे अपने मंदिरों के बीच एक दीवार खड़ी कर दी है।
* विदेशियों पर ऐसा कोई बोझ नहीं होता - इसलिए वे खुलकर उस चीज़ का अनुभव करते हैं जिसके बारे में हम झिझकते हैं।

12. विदेशी पर्यटक मंदिरों को पवित्र संग्रहालयों की तरह देखते हैं। हम उन्हें रोज़मर्रा के कामों की तरह मानते हैं।
* विदेशी लोग नक्काशी, वास्तुकला, कहानी के फलक और शिखर पर लगे कलश को देखने के लिए समय निकालते हैं, वे गर्भगृह में व्याप्त शांति और हर पत्थर की व्यवस्था पर ध्यान देते हैं।
* हम अक्सर सिर्फ़ एक बॉक्स पर निशान लगाने जाते हैं: "मंदिर गए थे "कोई दिलचस्पी नहीं, कोई आश्चर्य नहीं, कोई खोज नहीं। लेकिन मंदिर जीवंत स्मृतियों के पुस्तकालय हैं। वे केवल उन्हीं के लिए खुलते हैं जो ध्यान से देखते हैं।

13. विदेशी पर्यटक ईश्वर पर बहस नहीं करते। वे बस उसमें विलीन हो जाते हैं।
* विदेशी लोग संप्रदायों, रीति-रिवाजों या किस ईश्वर को "श्रेष्ठ" कहा जाए, इस पर बहस नहीं करते।
* वे यह नहीं कहते कि "शैव या वैष्णव? "वे बस जो कुछ भी अनुभव कर रहे हैं, उसके आगे समर्पण कर देते हैं।
* हम इस बात पर झगड़ते हैं: "मूर्ति पूजा अंधविश्वास है।" "वे इस तरह यज्ञ क्यों करते हैं?" "रामायण का कौन सा संस्करण सत्य है?" शांति बहस से भरे स्थान में प्रवेश नहीं करती। यह उन हृदयों में प्रवेश करती है जो अनुभव करने के लिए तैयार हैं - सिद्ध करने के लिए नहीं।

14. विदेशी पर्यटक अक्सर अकेले आते हैं और हम समूहों में और शोरगुल के साथ जाते हैं।
* एक अकेला विदेशी मंदिर की सीढ़ियों से नंगे पाँव चलता है, एक नोटबुक, पानी की बोतल और खुली आँखों के साथ। वे चुपचाप बैठते हैं। कभी रेखाचित्र बनाते हैं। कभी ध्यान करते हैं।
* हम एक समूह में प्रवेश करते हैं - बातें करते हैं, क्लिक करते हैं, मज़ाक करते हैं, तुलना करते हैं।
* मंदिर समूहों के लिए नहीं बनाए जाते, वे आंतरिक शांति के लिए बनाए जाते हैं - जिसे केवल एकांत में ही महसूस किया जा सकता है।

15. विदेशी पर्यटक को वो एहसास याद है, हमें वो तस्वीरें याद हैं।
* सालों बाद, कोई विदेशी कहेगा: "ऋषिकेश का वो मंदिर... मुझे आज भी उसकी हवा याद है।""वाराणसी में घंटियों की आवाज़... मैं कभी नहीं भूल सकता।"
* लेकिन हम? हमें बस यही याद है: "वो वो ट्रिप थी जिसकी हमने 10 तस्वीरें पोस्ट की थीं।" वो अपने अंदर एक बदलाव लेकर जाते हैं। हम इंस्टाग्राम पर एक याद लेकर जाते हैं।

16. विदेशी पर्यटक ऊर्जा महसूस करते हैं और हम आयोजनों का पीछा करते हैं।
* विदेशी लोग आम दिनों में भी मंदिरों की ओर आकर्षित होते हैं - न कोई त्यौहार, न कोई भीड़। उन्हें शांति, नियमित आरती, नियमित मंत्रोच्चार पसंद हैं।
* लेकिन हम अक्सर तभी जाते हैं जब कुछ "घटना" हो रही हो: महाशिवरात्रि। जन्माष्टमी। नवरात्रि।
* हम शोर का पीछा करते हैं और वे धारा को महसूस करते हैं - यहाँ तक कि सन्नाटे में भी।

17. विदेशी पर्यटक उस स्थान का सम्मान करते हैं, भले ही वे उसमें विश्वास न रखते हों, उनमें से कई ईसाई या नास्तिक हो सकते हैं फिर भी, वे हाथ जोड़ते हैं, ज़मीन पर बैठते हैं।
* वे हिंदू देवताओं में विश्वास भले ही न रखते हों, लेकिन वे उस स्थान का आध्यात्मिक रूप से सम्मान करते हैं।
* हम अक्सर विश्वास तो करते हैं - लेकिन लापरवाही से पेश आते हैं। फ़ोन बंद, ज़ोर-ज़ोर से बातें करना, भागदौड़।
* सिर्फ़ विश्वास ही काफ़ी नहीं है, सम्मान ही शांति का द्वार खोलता है।

18. विदेशी पर्यटक दिखने की कोशिश नहीं कर रहे हैं, वे देखने की कोशिश कर रहे हैं। विदेशियों को इस बात की परवाह नहीं होती कि कोई देख रहा है या नहीं। वे दूसरों के लिए भक्ति नहीं करते। वे बस डूब जाते हैं।
* हम अक्सर दर्शन इस बात पर ध्यान देते हुए करते हैं कि कौन देख रहा है - रिश्तेदार, दोस्त या कैमरा।
* उनकी भक्ति आंतरिक होती है और हमारी भक्ति अक्सर एक प्रदर्शन बन जाती है।

19. विदेशी पर्यटक मंदिर को अपनी मंज़िल मानते हैं। हम उसे एक पड़ाव मानते हैं।
* उनके लिए, मंदिर ही भारत आने का मुख्य कारण है। वे हवाई जहाज़ बुक करते हैं, लंबी यात्राएँ करते हैं, और बस एक जगह बैठने के लिए कई दिन बिता देते हैं।
* हमारे लिए, अक्सर ऐसा होता है: "यह भी रास्ते में पड़ता है, चलो निकल लो।"
* उनकी यात्रा मंदिर पर समाप्त होती है और हमारी यात्रा कहीं और से शुरू होती है।

20. विदेशी पर्यटक किसी ऐसी चीज़ को छूते हैं जिसे हमें अनदेखा करना सिखाया गया है, जब वे मंदिर में प्रवेश करते हैं, वे सिर्फ़ पत्थर नहीं देखते, वे कंपन महसूस करते हैं उनके अंदर कुछ बदल जाता है - वे शांति, विस्मय और मौन के साथ वहाँ से चले जाते हैं।
* और हम, इस धरती के असली उत्तराधिकारी, अक्सर यह कहते हुए चले जाते हैं, "कुछ खास नहीं था।" इसलिए नहीं कि मंदिर में कुछ नहीं था...बल्कि इसलिए कि हम अंदर इतना कुछ लेकर आए थे कि कुछ भी ग्रहण नहीं कर पाए।
* विदेशी हमसे बेहतर नहीं हैं, वे बस वही देख रहे हैं जो हमने बहुत पहले देखना बंद कर दिया था, वे बैठते हैं, महसूस करते हैं, साँस लेते हैं
* और हम हिसाब - किताब करते हैं, शिकायत करते हैं, और क्लिक करते हैं।
* लेकिन ये मंदिर हमारे लिए बनाए गए थे - हमारी आत्मा, हमारी शांति, हमारे केंद्र के लिए।
* और अगर हम इन्हें प्रेम और विनम्रता से वापस नहीं लेते - तो हम कुछ ऐसा खो देंगे जो विदेशी पर्यटक ही पा सकते हैं जब की पाना हमें है।

आइए मंदिरों को सिर्फ़ पत्थर की इमारतें न बनाएँ, उन्हें फिर से जीवित अभयारण्य बनने दें। ये मंदिर सिर्फ देवताओं के लिए नहीं हमारे लिए है। जाओ। बैठो। महसूस करो। कुछ भी मत मांगो। और देखो कि तुम्हें क्या मिलता है।

सर्वजन कल्याण ट्रस्ट के ट्रस्टियों द्वारा भाजपा के वरिष्ठ नेता अशोक ठाकुर, अध्यक्ष नेफड भारत सरकार, प्रभारी समस्त प्रकोष्ठ भाजपा दिल्ली प्रदेश से भेंटवार्ता की

अभिषेक राजपूत

अशोक ठाकुर से भेंटवार्ता: आज सर्वजन कल्याण ट्रस्ट के ट्रस्टियों द्वारा नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ दी जिसमें मुकेश कुमार तंवर एडवोकेट अभिषेक सलवान एडवोकेट, अभिषेक राजपूत, अश्वनी राजपूत आशीष सूर्यन, विकासदीप शर्मा अधिवक्ता संयोजक आरटीएस जिला नजफगढ़ भाजपा ने भाजपा के वरिष्ठ नेता अध्यक्ष नेफड भारत सरकार प्रभारी भाजपा दिल्ली प्रदेश समस्त प्रकोष्ठ एवं समर्पित पार्टी सिपाही श्री

अशोक ठाकुर जी से आज भेंटवार्ता का सौभाग्य प्राप्त हुआ। पार्टी को मजबूत बनाने वाले श्री ठाकुर ने विभिन्न आंदोलनों एवं कार्यक्रमों का नेतृत्व किया है। बचपन से ही महान राष्ट्रवादियों की जीवनी से प्रेरित होकर मातृभूमि की सेवा का स्वप्न देखने वाले ठाकुर जी ने हमेशा पार्टी के हर दायित्व को निष्ठापूर्वक निभाया है।नव वर्ष 2026 के अवसर पर श्री अशोक ठाकुर जी को हार्दिक नववर्ष की शुभकामनाएँ! उनके उत्तम स्वास्थ्य, दीर्घायु एवं राष्ट्रहित में निरंतर योगदान की कामना करते हैं।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

आज का साइबर सुरक्षा विचार: भारत एक ऐतिहासिक सुधार की ओर बढ़ रहा है।

पिंकी कुंडू

भारत का सर्वोच्च न्यायालय वर्तमान में उन याचिकाओं पर विचार कर रहा है जो साइबर अपराध जांच के दौरान बैंक खातों को फ्रीज़ करने की प्रक्रिया को चुनौती देती हैं। जल्द ही एक राष्ट्रव्यापी मानक संचालन प्रक्रिया (SOP) जारी हो सकती है, जो वित्तीय साइबर अपराध मामलों में खातों को फ्रीज़ और डी-फ्रीज़ करने की प्रक्रिया को स्पष्ट करेगी। इससे मनी ट्रेल ट्रैकिंग अधिक प्रभावी होगी और नागरिकों के अधिकारों की रक्षा सुनिश्चित होगी।

- **मामले की पृष्ठभूमि**

- याचिकाकर्ता:श्री विवेक वर्श्नेय और श्री सुधीर कुमार (एओआर श्री तुषार एम. खैरनार के माध्यम से)।

- संविधान का अनुच्छेद 32 के तहत याचिका दायर।

* **सर्वोच्च न्यायालय की कार्यवाही**

- **पीठ:** माननीय न्यायमूर्ति पंकज मित्तल और माननीय न्यायमूर्ति एस.वी.एन. भट्टी।

- **पिछली सुनवाई की तारीख:** 6 जनवरी 2026।

- **कार्रवाई:**

- केंद्र सरकार और RBI को नोटिस जारी।

- याचिका की प्रति 3 दिनों में देने का निर्देश।

- मामले को अगले सप्ताह सूचीबद्ध किया गया।

- **याचिकाकर्ताओं द्वारा मांगी गई राहत**

- खातों को फ्रीज़/डी-फ्रीज़ करने के लिए राष्ट्रव्यापी SOP तैयार की जाए।

- हर फ्रीज़ कार्रवाई के साथ लिखित, कारणयुक्त आदेश अनिवार्य हो।

- खाताधारकों को 24 घंटे के भीतर सूचना दी जाए।

- गलत तरीके से फ्रीज़ किए गए खातों के लिए तत्काल डी-फ्रीज़िंग तंत्र उपलब्ध हो।

- **उठाए गए प्रमुख मुद्दे**

- प्राकृतिक न्याय का उल्लंघन: बिना सूचना के फ्रीज़ करना।

- मौलिक अधिकार: धन तक पहुँच से वंचित करना अनुच्छेद 21 (जीवन का अधिकार) और अनुच्छेद 19(1)(ग) (व्यवसाय/पेशा का अधिकार) का उल्लंघन है।

- SOP की कमी: राज्यों में कोई एकरूपता नहीं; साइबर सेल अलग-अलग तरीके से काम करती हैं।

- आर्थिक कठिनाई: निर्दोष नागरिकों और व्यवसायों को भारी नुकसान।

- **क्यों यह मामला महत्वपूर्ण है**

| मुद्दा | वर्तमान स्थिति | मांगी गई राहत |

| खाताधारक को सूचना | अक्सर अनुपस्थित | 24 घंटे में अनिवार्य सूचना |

| न्यायिक निगरानी | दुर्लभ | लिखित, कारणयुक्त आदेश |

| SOP | कोई एकरूपता नहीं | राष्ट्रव्यापी SOP |

| डी-फ्रीज़िंग | लंबी, अस्पष्ट प्रक्रिया | तत्काल तंत्र |

- **जोखिम और संतुलन**

- **साइबर अपराध की तात्कालिकता बनाम न्यायिक प्रक्रिया:** धोखाधड़ी रोकने के लिए तुरंत फ्रीज़ आवश्यक है।

- **संतुलन आवश्यक:** नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करते हुए तेज़ जांच सुनिश्चित करनी होगी।

- **संभावित परिणाम:** SC RBI/केंद्र को SOP तैयार करने का निर्देश दे सकता है, जिसमें गति और सुरक्षा दोनों का संतुलन होगा।

- **भविष्य की दिशा** यह मामला भारत में साइबर अपराध जांच के लिए एक ऐतिहासिक मिसाल बन सकता है। यदि SOP अनिवार्य की जाती है, तो इससे:

- राज्यों में प्रक्रियाओं का मानकीकरण होगा।

- साइबर अपराध प्रवर्तन में विश्वास मजबूत होगा।

- वित्तीय जांच में पारदर्शिता और जवाबदेही की संस्कृति बनेगी।

- **नागरिक सशक्तिकरण दृष्टिकोण:** यह केवल कानूनी मामला नहीं है, बल्कि नागरिक सशक्तिकरण का विषय है। जल्द ही SOP यह सुनिश्चित कर सकती है कि:

- गलत फ्रीज़िंग पर त्वरित समाधान मिले।

- पूरी प्रक्रिया का निश्चित समय-सीमा और पारदर्शिता सुनिश्चित हो।

राम नगरी अयोध्या में 15 किलोमीटर के दायरे में मांसाहारी भोजन बेचने पर पूरी तरह प्रतिबंध

पिंकी कुंडू

यूपी की राम नगरी अयोध्या में अब 15 किलोमीटर के दायरे में मांसाहारी भोजन बेचने पर पूरी तरह प्रतिबंध लगा दिया गया है. धार्मिक मर्यादाओं के पालन को सख्ती से लागू करते हुए जिला प्रशासन ने यह बड़ा फैसला लिया है.

प्रशासन ने राम मंदिर के 15 किलोमीटर के दायरे में गैर-शाकाहारी भोजन की होम डिलीवरी पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया है. यह निर्णय 'पंचकोसी परिक्रमा' क्षेत्र में ऑनलाइन फूड डिलीवरी प्लेटफॉर्म्स के जरिए नॉन-वेज भोजन की आपूर्ति को लेकर लगातार मिल रही शिकायतों के बाद लिया गया है.

प्रशासनिक अधिकारियों के मुताबिक, हाल के महीनों में यह सामने आया था कि ऑनलाइन फूड डिलीवरी कंपनियां प्रतिबंधित क्षेत्र में भी पर्यटकों और स्थानीय लोगों तक नॉन-वेज भोजन पहुंचा रही थीं. इसके अलावा कुछ होटल और होमस्टे द्वारा मेहमानों को न सिर्फ मांसाहारी भोजन बल्कि शराब परोसने की शिकायतें भी मिली थीं. इन शिकायतों को गंभीरता से लेते हुए प्रशासन ने सभी संबंधित प्रतिष्ठानों को सख्त चेतावनी जारी की है.

स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी

खालीपन का अहसास: उदासी नहीं, मानसिक संकट का संकेत!

पूजा
(मानसिक स्वास्थ्य विद्यालय परामर्शदाता)

जीवन में दुख - उदासी आना स्वाभाविक है, लेकिन हफ्तों तक 'खालीपन' का एहसास — एक गहरा शून्य या अकेलापन — यह सामान्य नहीं। यह डिप्रेशन या अन्य मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं की चेतावनी हो सकती है।

जानें इसके कारण और सरल उपाय:

● **उद्देश्यहीनता से शून्यता:** जीवन में लक्ष्य न दिखने पर मन खाली हो जाता है।

● **रिश्तों का अभाव:** भावनात्मक अलगाव या पुराने आघात मन को खोखला करते हैं।

● **बदलाव का सदमा:** नौकरी छूटना या अपनों का जाना — ये ट्रिगर बन सकते हैं।

● **उपाय:** भावनाओं को स्वीकारें, नए शौक अपनाएं, मदद लें — तुरंत असर !

खालीपन क्यों घेरता है ? मुख्य कारण

● **उद्देश्य की कमी:** जब जीवन अर्थहीन लगे, मन शून्य में डूब जाता है।

● **भावनात्मक अलगाव:** करीबी रिश्तों में गहराई न हो तो अकेलापन सताता है।

● **पुराने आघात:** अनसुलझे दर्द मन के कोने में छिपे रहते हैं।

● **बड़े बदलाव:** प्रियजन का जाना या नौकरी छूटना — ये सामान्य प्रतिक्रिया है।

● **थकान का बोझ:** काम के दबाव से मानसिक थकान खालीपन लाती है।

इससे उबरने के सरल कदम

● **भावनाओं को अपनाएं:** डायरी में लिखें, खुद से लड़ें नहीं।

● **छोटे कदम उठाएं:** पेंटिंग, कुकिंग या पढ़ाई जैसे शौक शुरू करें — आत्मविश्वास लौटेगा।

● **जुड़ाव बनाएं:** दोस्त - परिवार से बात करें, सामाजिकता मन हल्का करेगी।

● **स्वयं की देखभाल:** अच्छी नींद, पौष्टिक भोजन और प्रकृति का साथ लें।

● **पेशेवर मदद:** लंबे समय तक बने रहने पर काउंसलर से संपर्क करें।

● **तुरंत मदद लें:** Counselling Wali काउंसलर पर कॉल करें — 9716739398 (सोम- रवि, सुबह 9 से रात 7 बजे)।

● **सेशन बुकिंग:** info@counsellingwali.com।

जनहित में जागरूक रहें — मानसिक स्वास्थ्य सबसे बड़ा धन है!

महास्तंभन वटी - यह शास्त्रोक्त आयुर्वेद औषधी है जिसका निर्माण स्तम्भन दोष को दूर करने के लिए किया जाता है

पिंकी कुंडू

महास्तंभन वटी को स्तम्भन शक्ति बढ़ाने वाली औषधि के रूप में जाना जाता है।

यह आयुर्वेद की महाऔषधि के रूप में भी वैध लोगो में प्रचलित है।

वर्तमान समय में पुरुषो में होने वाली यौन कमजोरी को दूर करके शीघ्रपतन, नपुंसकता तथा सम्भोग में के समय की अल्पता जैसी परेशानियों के निवारण हेतु महास्तंभन वटी अत्यंत लाभदायक आयुर्वेद औषधि है।

कामेच्छा प्रेमी लोग भी महास्तंभन वटी का सेवन करके अधिक समय तक सहवास का आनंद ले सकते है।

आधुनिक समय में युवाओं में यौन कमजोरियां बहुत बड़ी समस्या हो गयी है। व्यस्त एवं खराब दिनचर्या, दूषित खान पान और अंग्रेजी दवाएं इनके लिए जिम्मेदार हैं। यौन समस्याओं में नपुंसकता सबसे बड़ी बीमारी है।

शुक्रवाहिनी नाड़ी को बल देने वाला यह रसायन मन में काम भावना जागृत करने के लिए बहुत उपयोगी औषधि है। यह मन में उत्तेजना पैदा करता है। इसी कारणवश यह मानसिक नपुंसकता में बहुत फायदेमंद औषधि का काम करती है।

महास्तंभन वटी के घटक -

इरानी अकरकरा 5 ग्राम
खुरासानी अजवायन 5 ग्राम
छोटी इलायची 5 ग्राम
लौंग 5 ग्राम
दालचीनी 5 ग्राम
धतुरा शुद्ध 2.5 ग्राम
सिद्ध मकरध्वज 5 ग्राम
केशर 5 ग्राम
शोधित भांग 5 ग्राम
भावनार्थ भांग स्वरस

महास्तंभन वटी बनाने की विधि

सबसे पहले महास्तंभन वटी बनाने के लिए धतुरा के बीजों को गोमूत्र या त्रिफला क्वाथ में 24 घंटे के लिए डालकर छोड़ दे तत्पश्चात धुप में सूखने के लिए रखदे। अच्छे से सुख जाने के बाद गाय के घी में अच्छे से भुन लें।

इसके बाद सभी काष्ठ औषधियों को खरल में बारीक़ पीस लेवे। अच्छी तरह पिसने के बाद केशर, सिद्ध मकरध्वज और भांग को खरल में डालकर महीन चूर्ण बनालें। इस तैयार पाउडर में भांग स्वरस डालकर खरल करले खरल से मतलब है की पाउडर को गिला करने के बाद खरल में घोट घोट के सुखा ले इसे एक भावना कहा गया है। जब यह टेबलेट बनाने लायक हो जाये तब 125 मिग्रा की टेबलेट बनाकर किसी कांच के बर्तन में रखके सुखा लेवे। सूखने के बाद किसी कांच की शीशी में भरकर रख ले।

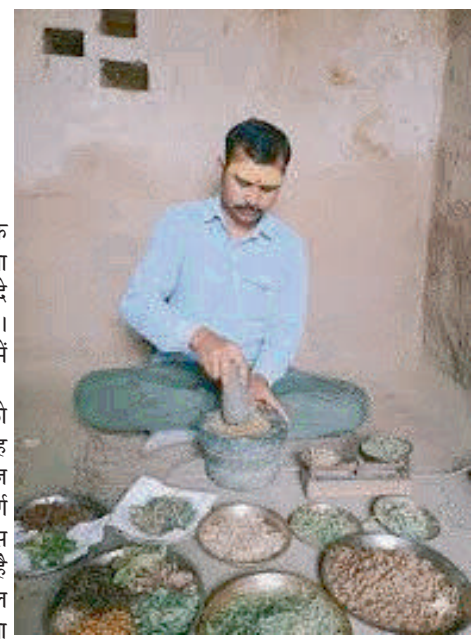

महास्तंभन वटी के फायदे -

शीघ्रपतन की समस्या में महास्तंभन वटी अत्यंत लाभदायक सिद्ध हो

स्वप्नदोष की समस्या को ठीक करने में कारगर दवा है। महास्तंभन वटी का सेवन करने के बाद कामी पुरुष लम्बे समय तक सम्भोग का आनंद ले पाता है। अर्थात जल्दी स्खलित नही होता है।

वीर्य को गाढ़ा करने में अत्यंत उपयोगी औषधि है महास्तंभन वटी।

यह नर्वस सिस्टम को बेहतर बनाती है जिससे नींद अच्छी आती है।

यह पाचक का काम भी करती है जिससे भूख बढती है।

जिन पुरुषो में वाजीकरण शक्ति का हास हो चुका होता है उनकी वाजीकरण शक्ति को पुनर्जीवित करने में लाभदायक वटी है।

यह काम वासना की वृद्धि करती है।

शीघ्रपतन और ढीलापन को खत्म कर दोबारा जोश जगाए।

हर उम्र में पाएं जवानी का मजा और अपने साथी को भरपूर संतुष्टि दें।

इसके सेवन से बल एवं ओज की प्राप्ति होती है।

यह वातवाहिनी नाड़ी को बल देती है।

इसके उपयोग से शुक्रवाहिनी नाड़ी को बल मिलता है।

मानसिक नपुंसकता को, खत्म करने की क्षमता रखती है।

यह उत्तेजना पैदा करती है।

काम भावना की कमी होने पर, इसका सेवन बहुत लाभदायक है।

विशेष – महास्तंभन वटी का निर्माण किसी भी आयुर्वेद कम्पनी द्वारा नही किया जा रहा है।

यह पोस्ट केवल ज्ञानवर्धन के लिए एवं आयुर्वेद औषधियों का जन जन तक पहुँचने के लिए किया गया है। वैसे तो यह शास्त्रोक्त दवा है जो जिसका निर्माण प्राचीन काल में राज महाराजाओं व कामी पुरुषों के लिए किया जाता था।

PCOD, पॉलीसिस्टिक ओवरी सिंड्रोम क्या है ?

पिंकी कुंडू

यह हार्मोन का असंतुलन है

आम लक्षण-

* अनियमित पीरियड्स या बिल्कुल पीरियड्स न होना।
* प्रेग्नेंट होने में दिक्कत (अनियमित ओव्यूलेशन के कारण)
* चेहरे, छाती, पीठ और कूल्हों पर ज़्यादा बालों का बढ़ना।
* वज़न बढ़ना
* बालों का पतला होना, बालों का झड़ना
* ऑयली स्किन या मुंहासे

इन चीज़ों से बचें

* रिफाइंड कार्बोहाइड्रेट- ब्रेड, केक वगैरह।
* तला हुआ खाना या फास्ट फूड
* मीठे ड्रिंक्स और सोडा
* प्रोसेस्ड मीट - हॉट डॉग, सॉसेज वगैरह।

ये चीज़ें मदद करती हैं

* ज़्यादा फाइबर वाला खाना
* फैटी मछली- सैल्मन, ट्रूना, सार्डिन और मैकेरल
* गहरे लाल फल - लाल अंगूर, ब्लूबेरी, ब्लैकबेरी और चेरी।
* ब्रोकली और फूलगोभी
* जैतून का तेल, एवोकाडो, नारियल
* मेवे - पाइन नट्स, अखरोट, बादाम और पिस्ता
* हल्दी और दालचीनी

क्या आप जानते हैं कि विटामिन्स और मिनरलस हमारे शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता (इम्यूनिटी सिस्टम) के लिए कितने आवश्यक है

पिंकी कुंडू

आइए आज हम जानते हैं १ *जरूरी विटामिन्स और उनके कार्य जो हमारे शरीर के लिए आवश्यक है!

विटामिन के अनेकों स्वास्थ्य लाभ हैं विटामिन में हृदय रोगों, उच्च कोलेस्ट्रॉल के स्तर, नेत्र विकार और त्वचा विकार सहित विभिन्न रोगों को रोकने और उनका इलाज करने की क्षमता होती है। अधिकांश विटामिन हमारे शरीर के कई तंत्रों को कार्य करने में मदद करते हैं जो किसी अन्य पोषक तत्व के सेवन से नहीं होता। तो चलिए आज हम आपको विटामिन्स के स्वास्थ्य लाभ के बारे में बताते हैं।

विटामिन ए या रेटिनॉल : विटामिन ए या रेटिनॉल आंखों के रोग, मुँहासे, त्वचा रोग और संक्रमणों के इलाज में उपयोगी है। साथ ही घावों के उपचार की प्रक्रिया को भी तेज करता है। आंखों का धब्बेदार विकार (macular degeneration) और मोतियाबिंद को रोकने के लिए भी यह बहुत लाभदायक है। यह केरोटेनोइड (carotenoid) के रूप में बालों के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में भी मदद करता है।

विटामिन बी 1 या थाइमिन : विटामिन बी कॉम्प्लेक्स समूह में विटामिन बी 1, विटामिन बी 2, विटामिन बी 3, विटामिन बी 5, विटामिन बी 6, विटामिन बी 7, विटामिन बी 9, विटामिन बी 12 आते हैं। विटामिन बी 1 या थाइमिन मेटाबोलिज्म, रक्त परिसंचरण और मस्तिष्क के विकास करने के साथ-साथ बेरीबेरी, हृदय रोग और अपच जैसी समस्या को होने से रोकता है। विटामिन बी 1 के साथ विटामिन बी 2 और विटामिन बी 3 उन बुजुर्ग मरीजों के लिए आवश्यक हैं जिन्हें अतिरिक्त पोषण की आवश्यकता होती है या जो डिमेंशिया या अल्जाइमर रोग से ग्रसित होते हैं।

विटामिन बी 2 या राइबोफ्लेविन : विटामिन बी 2 या राइबोफ्लेविन मोतियाबिंद, त्वचा विकार और एनीमिया के इलाज में मदद करता है साथ ही शरीर के मेटाबोलिक गतिविधि, इम्युनिटी और तंत्रिका तंत्र में सुधार भी करता है।

विटामिन बी 3 या नियासिन : विटामिन बी 3 या नियासिन कमजोरी, अपच, त्वचा विकार, सिरदर्द, हृदय रोग, उच्च रक्तचाप, उच्च रक्त कोलेस्ट्रॉल, मधुमेह और दस्त को कम करने में मदद करता हैं।

विटामिन बी 5 या पैंटोथीनिक एसिड : विटामिन बी 5 या पैंटोथीनिक एसिड तनाव, गठिया, विभिन्न प्रकार के संक्रमण, त्वचा रोग, बालों का सफ़ेद होना और उच्च कोलेस्ट्रॉल को दूर करने में मदद करता है।

विटामिन बी 6 या पाइरोडौक्ज़ामिन : विटामिन बी 6 या पाइरोडौक्ज़ामिन मधुमेह, बवासीर, अकड़न, मासिक धर्म से अत्यधिक खून बहना, तनाव, अनिद्रा, सुबह की थकान और यात्रा की थकान के उपचार में मदद करता है। यह शरीर में होमोसिस्टीन (homocysteine) के स्तर को भी कम करने में मदद करता है।

विटामिन बी 7 या बायोटिन : विटामिन बी 7 या बायोटिन त्वचा के लिए बहुत लाभदायक है। यह मेटाबोलिज्म को बढ़ाने के साथ-साथ बालों के विकास और देखभाल में मदद करता है।

विटामिन बी 9 या फोलिक एसिड : विटामिन बी 9 या फोलिक एसिड एनीमिया, अपच, गले के दर्द का रोग (sprue), त्वचा रोग, असामान्य मस्तिष्क और गठिया (gout) के उपचार में शक्तिशाली होता है। इसका सेवन लाल रक्त कोशिका के निर्माण में मदद करता है। यह न्यूरल ट्यूब डिफेक्ट (neural tube defects) और होमोसिस्टीन (homocysteine) के स्तर को कम करने में मदद करता है। यह हृदयवाहिका रोग (coronary heart disease) से हमारी रक्षा करता है।

विटामिन बी 12 या साइनोकोबालमिन : विटामिन बी 12 या सा इ नो को बा ल मि न एनीमिया, धूम्रपान, गर्भावस्था, लिवर की समस्या, गुर्दे संबंधी रोग और मुंह के अल्सर के लक्षणों और दुष्प्रभाव को कम करने में मदद करता है। जब विटामिन बी 6 और फोलिक एसिड का पर्याप्त मात्रा में सेवन किया जाता है तो स्ट्रोक सहित विभिन्न हृदय रोग के विरुद्ध बचाव करने के लिए विटामिन बी 12 भी आवश्यक है।

विटामिन सी या एस्कोर्बिक एसिड : विटामिन सी या एस्कोर्बिक एसिड विभिन्न प्रकार के आँखों के रोग, स्कर्वी, आम सर्दी, संक्रमण, मधुमेह, तनाव, उच्च रक्त कोलेस्ट्रॉल, हृदय रोग, कैंसर, उच्च रक्तचाप, गुर्दे संबंधी विकार, आंतरिक रक्तस्राव, बवासीर, कॉर्नियल अल्सर, सूजन, और नेतृत्व विषाक्तता (lead poisoning) में मदद करता है। यह हमारी प्रतिरक्षा प्रणाली को भी बढ़ाता है। यह संज्ञानात्मक गिरावट (cognitive decline) और मस्तिष्क की रक्तवाहिनियों संबंधी रोग (cerebrovascular disease) के इलाज में भी मदद करता है। यह हमारे शरीर के लिए सबसे शक्तिशाली और आवश्यक एंटीऑक्सीडेंट में से एक है।

विटामिन डी : विटामिन डी सूखा रोग यानि रिकेट्स, दांतों की सड़न और मधुमेह के इलाज के लिए बहुत जरूरी विटामिन है। यह हड्डी को ठीक करने, इम्युनिटी और रक्तचाप के लिए बहुत फायदेमंद है। यह कमजोर हड्डियों (ऑस्टियोपोरोसिस) को रोकने के लिए जरूरी विटामिन है और पहले से ही पुराने ऑस्टियोआर्थराइटिस से पीड़ित मरीजों में विभिन्न प्रकार के कैंसर और मल्टीपल स्केलेरोसिस (multiple sclerosis) को रोकने में सकारात्मक तौर पर जुड़ा हुआ है।

विटामिन ई या टोकोफेरोल : विटामिन ई या टोकोफेरोल उम्र बढ़ने की प्रक्रिया को धीमा करने और त्वचा की देखभाल करने के साथ-साथ हृदय रोगों, बाँझपन, मस्तिष्क की खराबी, रजोनिवृत्ति, दर्दनाक मासिक धर्म और नेत्र विकारों में उपयोगी है। साथ ही रक्त परिसंचरण में सुधार के लिए भी बहुत जरूरी विटामिन है।

विटामिन k : विटामिन k रक्त को जमने से रोकने के लिए और आंतरिक रक्तस्राव, बिलियरी अब्स्ट्रक्शन (biliary obstruction), ऑस्टियोपोरोसिस, अत्यधिक मासिक धर्म प्रवाह और मासिक धर्म में दर्द को रोकने के लिए एक महत्वपूर्ण विटामिन है। यह हड्डियों के चयापचय, एथेरोस्क्लेरोसिस को रोकने, नर्वस सिगनलिंग में सुधार करने और गुर्दे की पथरी के लिए भी बहुत जरूरी विटामिन है।

अगर इन सभी विटामिन्स की आवश्यक मात्रा को हम अपने भोजन से ग्रहण करना चाहे तो शायद प्रतिदिन हम ना कर पाए और कहीं न कहीं इनकी कमी होने कि वजह से ही तरह तरह कि बीमारियां पैदा हो रही हैं।

हीलिंग तब शुरू होती है जब आप सच को पहचान लेते हैं और सच यह है कि आप दोषी नहीं हैं

*पिंकी कुंडू

नार्सिसिस्ट से अलग होना इसलिए मुश्किल नहीं होता कि प्यार बहुत था बल्कि इसलिए मुश्किल होता है क्योंकि सामने वाला इंसान आपको एक इंसान नहीं, अपनी सप्लाई मानता है।

Psychology बताती है कि Narcissistic Personality Disorder (NPD) में व्यक्ति का आत्मसम्मान बाहर से बहुत मजबूत दिखता है, लेकिन अंदर से बेहद नाजुक होता है। जैसे ही आप अलग होने की बात करते हैं, उन्हें रिश्ता टूटता नहीं दिखता — उन्हें अपनी पहचान और कंट्रोल खतरे में महसूस होता है।

शुरुआत में वे अक्सर बहुत शांत, समझदार और बदले हुए दिखते हैं।

माफ़ी, वादे, इमोशनल बातें, "अब सब ठीक हो जाएगा" जैसे शब्द सामने आते हैं।

Psychology में इसे Hoovering कहा जाता है — एक तकनीक, जिसमें सामने वाले को भावनात्मक रूप से वापस खींचा जाता है ताकि कंट्रोल बना रहे। यह बदलाव स्थायी नहीं होता, यह एक रणनीति होती है।

जैसे ही उन्हें लगता है कि आप सच में निकल सकते हैं, उनका दूसरा चेहरा सामने आता है इसे Narcissistic Injury कहा जाता है — जब उनके अहंकार को चोट पहुँचती है। तब ताने, इल्ज़ाम, कैरेक्टर पर सवाल, आपको mentally unstable साबित करने की व्यक्ति रिश्तों में control through chaos पैदा करता है — यानी जानबूझकर उलझन, देरी और अस्थिरता ताकि सामने वाला थक जाए और टूट जाए।

ऐसे रिश्ते से निकलने के लिए भावनात्मक लड़ाई नहीं, रणनीति चाहिए। चुपचाप तैयारी करना, सबूत संभालकर रखना, ज़्यादा प्रतिक्रिया न देना — जिसे psychology में Grey Rock Technique कहा जाता है।

जितना कम आप react करते हैं, उतना ही उनका असर कम होता जाता है।

सबसे बड़ा मनोवैज्ञानिक सच यह है कि नार्सिसिस्ट इसलिए नहीं लड़ता क्योंकि उसे रिश्ता बचाना है, वह लड़ता है क्योंकि उसे हार और कंट्रोल खोने से डर लगता है और healing तब शुरू होती है, जब आप यह समझ लेते हैं कि यह आपकी क़ीमत नहीं, उनकी मानसिक संरचना है।

यह अनुभव gender-specific नहीं है। नार्सिसिस्ट पुरुष भी हो सकता है और महिला भी। पीड़ित कोई भी हो सकता है — जो empathic, caring और emotionally available होता है।

चुप्पी को अपनी मजबूरी मत बनाइए।

समझदारी को अपनी ताक़त बनाइए। अगर आप किसी नार्सिसिस्ट रिश्ते में फँसे हैं या निकलने की कोशिश कर रहे हैं .. तो खुद पर शक करना बंद कीजिए। आप पागल नहीं हैं, आप manipulate किए गए हैं।

रिश्ते से हारना हार नहीं, खुद को हटा लेना कायरता नहीं है। हार तब होती है जब हम अपने लिए जीना छोड़ देते हैं।

यह पोस्ट उनके लिए है जो रोज़ किसी रिश्ते में खुद को खोते जा रहे हैं और धीरे-धीरे ज़िंदगी से भी हार मान लेते हैं।

इतना ही कहना है, हिम्मत का मतलब लड़ते रहना नहीं होता, कभी-कभी हिम्मत का मतलब होता है चुपचाप खुद को चुन लेना और अपने लिए जीना।

हीलिंग तब शुरू होती है जब आप सच को पहचान लेते हैं और सच यह है कि आप दोषी नहीं हैं।

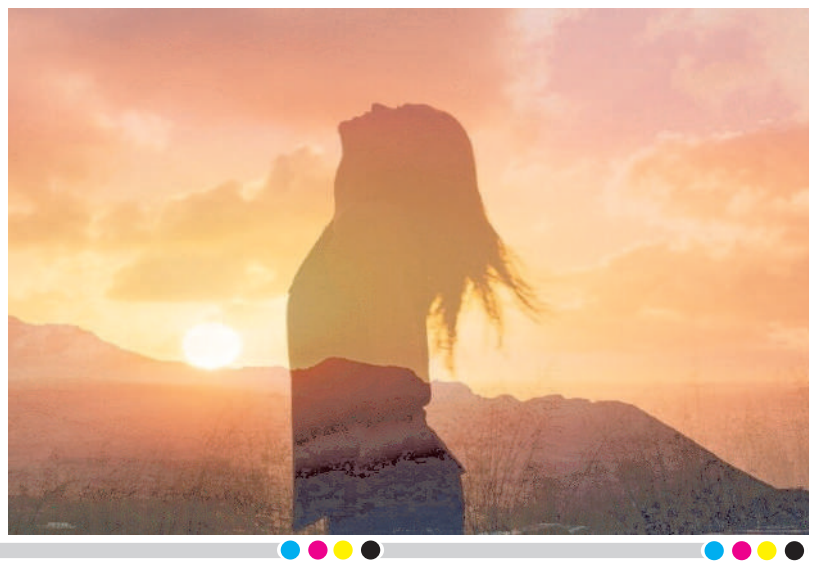

पिंकी कुंडू

मकर संक्रांति से एक दिन पहले लोहड़ी पर्व मनाया जाता है, लोहड़ी का त्योहार मुख्य रूप से पंजाब और हरियाणा में मनाया जाता है।

मकर संक्रांति के दिन कंस ने कृष्ण को मारने के लिए लोहिता नामक राक्षसी को गोकुल में भेजा था, जिसे श्री कृष्ण ने खेल – खेल में ही मार डाला था। इसी घटना की स्मृति में लोहिता का पावन पर्व मनाया जाता है।

सिन्धी समाज में भी मकर संक्रांति से एक दिन पूर्व लाल लाही के रूप में इस पर्व को मनाया जाता है। भारत के अलग-अलग प्रांतों में मकर संक्रांति के दिन या आसपास कई त्योहार मनाएं जाते हैं, जो कि मकर संक्रांति के ही दूसरे रूप हैं।

इस दिन धरती सूर्य से अपने सुदूर बिन्दु से पुन: सूर्य की ओर मुख करना प्रारम्भ कर देती है, यह पर्व खुशहाली के आगमन का प्रतीक भी है।

लोहड़ी के दिन प्रदोष काल में अग्नि प्रज्वलित करना सबसे उत्तम माना जाता है, 2026 में लोहड़ी 13 जनवरी को मनाई जाएगी।

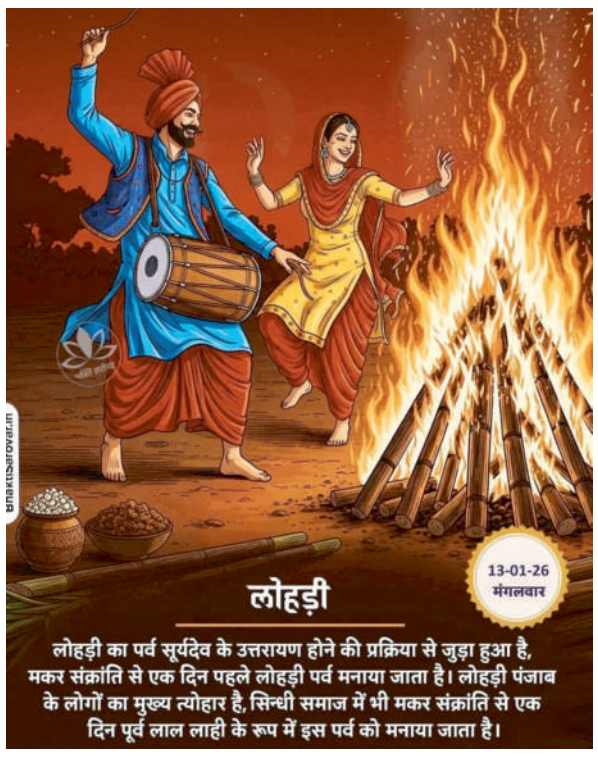

जब महाकाली ने ली महाबली की परीक्षा: भक्ति बनाम शक्ति

पिंकी कुंडू

द्वापर युग अपनी अंतिम सांसें ले रहा था और कलियुग के काले बादल क्षितिज पर मँडराने लगे थे। धर्म की जड़ें हिल रही थीं, हवाओं में अधर्म का विष घुलने लगा था। देवता भी चिंतित थे कि इस घोर अंधकार में पृथ्वी का क्या होगा?

लेकिन, इस प्रलयकारी बदलाव के बीच एक 'लौ' अब भी जल रही थी। वे थे - पवनपुत्र हनुमान!

प्रभु श्री राम के वियोग के बाद भी, हनुमान जी एक अटल पर्वत की तरह अडिग थे। उनकी हर धड़कन में केवल श्राम-रामश्र गूँजता था। उन्होंने प्रतिज्ञा ली थी कि जब तक इस धरती पर राम का नाम रहेगा, वे यहीं रहेंगे।

माँ काली की चुनौतीः ब्रह्मांड के उस पार, जहाँ समय और मृत्यु का तांडव होता है, वहाँ से माँ काली की दृष्टि हनुमान पर पड़ी।

माँ काली, जो दुष्टों का संहार करती हैं, जिनके गले में मुंडमाला और हाथ में खड्ग है, उन्होंने सोचा — "यह वानर निडर दिखता है, लेकिन क्या इसकी भक्ति में वाकई इतनी शक्ति है कि यह साक्षात 'मृत्यु' के भय को भी हरा सके? क्या राम का नाम मेरे क्रोध से भी बड़ा है?"

यह परखने के लिए, माँ काली ने हनुमान जी की परीक्षा लेने की ठानी।

वह भयावह रात्रिः हनुमान जी गहन ध्यान में लीन थे। तभी अचानक वातावरण बदल गया। हवाओं में चीखें गूँजने लगीं। धरती कांपने लगी। आसमान से आग बरसने लगी। और फिर साक्षात माँ काली अपने रौद्र रूप में प्रकट हुईं!

उनकी आँखें अंगारों की तरह धधक रही थीं, हाथ में नंगी तलवार थी और उनका रूप इतना भयानक था कि काल भी कांप जाए।

माँ काली ने गर्जना की — "हनुमान! मेरे सामने नतमस्तक हो जा, अन्यथा आज तेरा अंत निश्चित है!"

लेकिन आश्चर्य! हनुमान जी के चेहरे पर न कोई शिकन थी, न कोई भय। वे अपनी आँखें बंद किये शांत बैठे रहे। उनके होंठ धीरे-धीरे हिल रहे थे "जय श्री राम, जय श्री राम"

क्रोधित होकर माँ काली ने अपनी माया का जाल फैलायाः

* धरती फटने लगी।
* चारों तरफ हाहाकार मच गया।
* यहाँ तक कि उन्होंने प्रभु राम के भी भ्रम (Illusions) प्रकट किए, ताकि हनुमान का ध्यान भंग हो सके।

लेकिन हनुमान जी केवल मुस्कुराए। उन्होंने अपनी आँखें नहीं खोलीं।

वे बोले— "माँ! आप बाहर चाहे कितना भी प्रलय मचा लें, मेरे राम मेरे 'हृदय' में निवास करते हैं। और जहाँ राम हैं, वहाँ न भय है, न भ्रम, और न ही अंत।"

भक्ति की विजय और वरदानः हनुमान जी की यह अटूट निष्ठा देखकर माँ काली का क्रोध पल भर में कपूर की तरह उड़ गया। उनका भयानक रूप एक स्नेहमयी माँ के रूप में बदल गया। पवित्र घंटियों की मधुर ध्वनि गूँज उठी।

माँ काली ने खिलखिलाते हुए कहा — "हे महाबली! तुम जीत गए। मैंने आज देख लिया कि जिस हृदय में राम बसते हैं, उसे सृष्टि की कोई भी विनाशकारी शक्ति नहीं हिला सकती।"

माँ ने हनुमान जी को आशीर्वाद देते हुए कहा — "आज से तुम केवल राम के भक्त नहीं, बल्कि 'कलियुग के रक्षक' हो। जब भी इस घोर कलयुग में कोई भक्त सच्चे मन से राम या तुम्हारा नाम लेगा, तुम उसकी ढाल बनकर खड़े रहोगे। मेरी शक्तियां सदैव तुम्हारे साथ रहेंगी।"

हनुमान जी ने विनम्रता से माँ के चरणों में शीश झुकाया और कहा — "माँ, यह सब मेरे प्रभु राम की कृपा और आपका आशीर्वाद है।"

परिस्थितियां चाहे कितनी भी भयानक क्यों न हों, यदि आपके हृदय में ईश्वर के प्रति अटूट विश्वास है, तो दुनिया का कोई भी भय आपको डिगा नहीं सकता। भक्ति ही सबसे बड़ी शक्ति है।

शालिग्राम जी का रहस्य

पिंकी कुंडू

हिन्दू धर्म में तीन प्रमुख देवता हैं - ब्रह्मा,विष्णु और महेशः- मानव ने तीनों को प्रकृति तत्वों में खोजने का प्रयास किया है। तीनों के ही मनुष्य ने साकार रूप गढ़ने के लिए सर्वप्रथम

* भगवान ब्रह्मा को शंख,
* शिव को शिवलिंग और
* भगवान विष्णु को शालिग्राम रूप में सर्वोत्तम माना है। उल्लेखनीय है
* शंख सूर्य व चंद्र के समान देवस्वरूप है, जिसके मध्य में वरुण, पृष्ठ में ब्रह्मा तथा अग्र में गंगा और सरस्वती नदियों का वास है लेकिन
* शिवलिंग और शालिग्राम को भगवान का विग्रह रूप माना जाता है और पुराणों के अनुसार भगवान के इस विग्रह रूप की ही पूजा की जानी चाहिए।
* शिवलिंग जहां भगवान शंकर का प्रतीक है तो
* शालिग्राम भगवान विष्णु का।

शिवलिंग के तो भारत में लाखों मंदिर हैं, लेकिन शालग्रामजी का एक ही मंदिर है।

शालिग्राम जी का मंदिर ::-- शालिग्राम का प्रसिद्ध मंदिर मुक्तिनाथ में स्थित है यह वैष्णव संप्रदाय के प्रमुख मंदिरों में से एक है। यह तीर्थस्थान शालिग्राम भगवान के लिए प्रसिद्ध है। मुक्तिनाथ की यात्रा

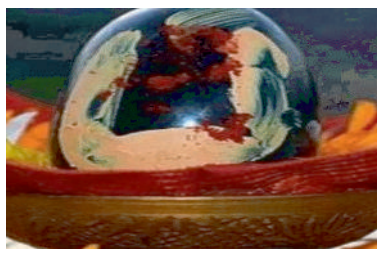

काफी मुश्किल है। माना जाता है कि यहां से लोगों को हर तरह के कष्टों से मुक्ति मिल जाती है।

मुक्तिनाथ नेपाल में स्थित है:- काठमांडु से मुक्तिनाथ की यात्रा के लिए पोखरा जाना होता है। वहां से यात्रा शुरू होती है। पोखरा के लिए सड़क या हवाई मार्ग से जा सकते हैं। वहां से पुनः जोमसोम जाना होता है। यहां से मुक्तिनाथ जाने के लिए आप हेलिकॉप्टर या फ्लाइट ले सकते हैं। यात्री बस के माध्यम से भी यात्रा कर सकते हैं। सड़क मार्ग से जाने पर पोखरा से पहुंचने के लिए कुल २०० कि.मी. की दूरी तय करनी होती है।

शालिग्राम :-- शिवलिंग की तरह शालिग्राम भी बहुत दुर्लभ है। अधिकतर शालिग्राम नेपाल के मुक्तिनाथ, काली गण्डकी नदी के तट पर पाया जाता है। काले और भूरे शालिग्राम के अलावा सफेद, नीले और ज्योतियुक्त शालिग्राम का पाया जाना तो और भी दुर्लभ है। पूर्ण शालिग्राम में भगवान विष्णु के चक्र की आकृति अंकित होती है।

शालिग्राम के प्रकारः-- विष्णु के अवतारों के अनुसार शालिग्राम पाया जाता है।

* यदि गोल शालिग्राम है तो वह विष्णु जी का रूप गोपाल है,
* यदि शालिग्राम मछली के आकार का है तो यह श्री विष्णु के मत्स्य अवतार का प्रतीक है,
* यदि शालिग्राम कछुए के आकार का है तो यह भगवान के कच्छप और कूर्म अवतार का प्रतीक है,
* इसके अलावा शालिग्राम पर उभरने वाले चक्र और रेखाएं भी विष्णु जी के अन्य अवतारों और श्रीकृष्ण के कुल के लोगों को इंगित करती हैं।

इस तरह लगभग ३३ प्रकार के शालिग्राम होते हैं जिनमें से २४ प्रकार को विष्णु के २४ अवतारों से संबंधित माना गया है। माना जाता है कि ये सभी २४ शालिग्राम वर्ष की २४ एकादशी व्रत से संबंधित हैं।

शालिग्राम की पूजाः--

* घर में सिर्फ एक या सम संख्या में ही विराजमान करके शालिग्राम जी की पूजा करनी चाहिए।
* विष्णु भगवान की मूर्ति से कहीं ज्यादा उत्तम है शालिग्राम जी की पूजा करना।
* शालिग्राम जी पर चंदन लगाकर उसके ऊपर तुलसी का एक पत्ता रखा जाता है
* प्रतिदिन शालिग्राम जी को पंचामृत से स्नान कराया जाता है, जिस घर में शालिग्राम जी का पूजन होता है उस घर में लक्ष्मी का सदैव वास रहता है। आपकी जानकारी हेतु बता दें, शालिग्राम जी सात्विकता के प्रतीक हैं, उनके पूजन में आचार-विचार की शुद्धता का विशेष ध्यान रखा जाता है।

प्रश्न करने की शक्तिः मस्तिष्क, चेतना, स्थिरता और भावनात्मक बुद्धिमत्ता का समन्वित विकास

भूमिका मानव जीवन में प्रश्न करना केवल बौद्धिक क्रिया नहीं, बल्कि मस्तिष्क, मन, भाव और चेतना – चारों स्तरों को जाग्रत करने की एक समग्र प्रक्रिया है। जब व्यक्ति स्वयं से प्रश्न करता है — मैं ऐसा क्यों सोच रहा हूँ?, इस भावना की जड़ क्या है?, इस परिस्थिति का गहरा अर्थ क्या है? — तब वह केवल उत्तर नहीं खोजता, बल्कि अपने भीतर छिपी समझ को सक्रिय करता है। यही प्रक्रिया मानसिक विकास, स्थिरता और भावनात्मक बुद्धिमता का आधार बनती है।

1. प्रश्न और मस्तिष्कः वैज्ञानिक दृष्टि प्रश्न करते ही मस्तिष्क के कई महत्वपूर्ण हिस्से एक साथ सक्रिय हो जाते हैं:

* Prefrontal Cortex – तर्क, विवेक, निर्णय और आत्मनियंत्रण
* Hippocampus – स्मृति, अनुभव और सीख
* Amygdala – भावनात्मक संकेतों की पहचान
* Reticular Activating System (RAS) – ध्यान और जागरूकता

जब प्रश्न उठता है, मस्तिष्क Auto-Reaction Mode से बाहर आकर Active Analysis Mode में प्रवेश करता है। इससे न्यूरॉन्स के बीच नए कनेक्शन बनते हैं, जिसे Neuroplasticity कहा जाता है। यही मस्तिष्क को तेज, लचीला और सजग बनाता है।

१. उत्तर खोजने की प्रक्रियाः मस्तिष्क कैसे काम करता है उत्तर खोजते समय मस्तिष्क तीन गहरे चरणों से गुजरता है:
(1) अवलोकन (Observation) बिना जजमेंट के विचार, भावना या परिस्थिति को देखना।
(२) विश्लेषण (Analysis) पुराने अनुभव, ज्ञान और भावनाओं को जोड़कर कारण खोजना।
(३) एकीकरण (Integration) भाव, तर्क और चेतना का संतुलित निष्कर्ष — जिसे Insight कहा जाता है। यह प्रक्रिया मस्तिष्क को केवल जानकारी नहीं देती, बल्कि समझ पैदा करती है।

३. मानसिक स्तर का विकासः स्वतंत्र सोच की ओर जो व्यक्ति स्वयं से प्रश्न करता है, वहः

* सामाजिक conditioning का गुलाम नहीं बनता
* अंधविश्वास और भय से ऊपर उठता है
* हर स्थिति को बहुआयामी दृष्टि से देखता है

इससे मानसिक स्तर पर:

* Clarity (स्पष्टता)
* Vivek (विवेक)
* Independent Thinking (स्वतंत्र सोच)

विकसित होती है। यही मानसिक परिपक्वता व्यक्ति को भीतर से सशक्त बनाती है।

4. मानसिक स्थिरताः प्रश्न कैसे संतुलन लाते हैं मानसिक अस्थिरता का मुख्य कारण है — अनदेखे विचार और दबी भावनाएँ।
जब व्यक्ति स्वयं से पूछता है:

* मैं अभी बेचैन क्यों हूँ?
* यह डर मेरा है या सीखा हुआ?
* तो मन संघर्ष नहीं करता, बल्कि समझने लगता है। इससे:

1. Anxiety घटती है
१. Overthinking कम होती है
३. मन शांत और स्थिर होता है
4. समझ से ही स्थिरता जन्म लेती है।

5. भावनात्मक बुद्धिमता (Emotional Intelligence) का विकास भावनात्मक बुद्धिमता का अर्थ है — अपनी और दूसरों की भावनाओं को पहचानना, स्वीकारना और संतुलित रूप से अभिव्यक्त करना। प्रश्न इस विकास की कुंजी हैं:

* मैं यह भावना क्यों महसूस कर रहा हूँ?
* दूसरा व्यक्ति ऐसा क्यों व्यवहार कर रहा है?
* मैं बेहतर प्रतिक्रिया कैसे दे सकता हूँ?

इन प्रश्नों से:

* Self-Awareness
* Empathy
* Emotional Regulation

विकसित होता है। व्यक्ति प्रतिक्रिया देने के बजाय उत्तरदायित्व से कार्य करता है।

6. Deep Analysis Pattern: गहरी समझ की आदत लगातार प्रश्न पूछने से मस्तिष्क में एक स्थायी पैटर्न बनता है:
1. सतही सोच गहरी समझ
१. प्रतिक्रिया सजग उत्तर
३. भावुकता विवेक
धीरे-धीरे व्यक्ति हर परिस्थिति में पूछने लगता है:
> इसका मूल कारण क्या है?
यही Deep Analysis Pattern है, जो वैज्ञानिकों, दार्शनिकों और जागरूक आत्माओं की पहचान है।

7. चेतना और प्रश्नः आध्यात्मिक आयाम आध्यात्मिक दृष्टि से प्रश्न करना आत्म-जागरण की प्रक्रिया है। प्रश्न मन को शुद्ध करता है और चेतना को विस्तृत करता है। जब प्रश्न अहं से नहीं, जिज्ञासा से आते हैं, तो उत्तर भीतर से प्रकट होते हैं।
यही प्रश्न व्यक्ति को:

* आत्मज्ञान
* करुणा और
* आंतरिक स्वतंत्रता

की ओर ले जाते हैं।
निष्कर्ष प्रश्न करना कमजोरी नहीं, बल्कि चेतना की शक्ति है। सही प्रश्न मस्तिष्क को सक्रिय करते हैं, मानसिक स्तर को ऊँचा उठाते हैं, स्थिरता लाते हैं और भावनात्मक बुद्धिमता को परिपक्व बनाते हैं।
अंततः, जो व्यक्ति प्रश्न करना सीख लेता है, वह केवल उत्तर नहीं पाता — वह स्वयं को समझ लेता है।
"सही प्रश्न भीतर छिपे सत्य का द्वार खोलते हैं।"

अंगारक योगः विस्तृत विवेचन एवं विश्लेषण

पिंकी कुंडू

अंगारक शब्द का अर्थ है 'अंगारे के समान' या 'अग्नि के समान', जो सीधे मंगल ग्रह (अग्नि तत्व) से जुड़ा है। जब मंगल (ऊर्जा) का संयोग, राहु (भ्रम, विस्तार, विस्फोट) से होता है, तो यह ऊर्जा एक अनियंत्रित, विस्फोटक या भ्रमित करने वाली शक्ति बन जाती है, जिसे ज्योतिष में अंगारक योग या अंगारका दोष कहा जाता है।

१. शास्त्रोक्त एवं ज्योतिषीय विवेचन (Astrological Interpretation) अंगारक योग, जिसे कुछ ग्रंथों में अंगार योग भी कहा गया है, मंगल और राहु के संयोजन को दर्शाता है:

* a. मंगल (अंगारक) और राहु का स्वरूप
* मंगल (Mars/Kuia): साहस, पराक्रम, ऊर्जा, क्रोध, भूमि, भाई, रक्त, शल्य क्रिया, अग्नि।
* राहु (Rahu): भ्रम, अचानक घटनाएँ, तीव्रता, विदेश, विष, अनैतिकता, तृष्णा, विस्फोट, विस्तार।
* b. योग का निर्माण और फल जब मंगल और राहु एक ही भाव में होते हैं, तो:
* ऊर्जा का अतिरेकः मंगल की ऊर्जा राहु के संपर्क में आकर विकृत या अत्यधिक तीव्र हो जाती है। यह ऊर्जा अनियंत्रित होकर क्रोध, आक्रामकता और हिंसा का रूप ले सकती है।
* दुर्घटना और चोटः यह योग दुर्घटना, शल्य क्रिया (#Surgery), रक्त संबंधी विकार और अग्नि से भय या क्षति का कारक होता है।
* संबंधों में तनावः जातक अपने छोटे भाई-बहन, जीवनसाथी (यदि सप्तम में हो) या सहकर्मियों के साथ तीखे और विस्फोटक संबंध रख सकता है।
* विस्फोटक व्यक्तित्वः जातक में अचानक, अनियंत्रित क्रोध, जुनूनी व्यवहार और जोखिम लेने की अत्यधिक प्रवृत्ति होती है।
* विशेषः यदि इस योग पर बृहस्पति (Jupiter) जैसे शुभ ग्रह की दृष्टि हो, तो यह योग रचनात्मक कार्यों (जैसे इंजीनियरिंग, सेना, पुलिस, शल्य चिकित्सा) में सफलता दे सकता है, क्योंकि यह ऊर्जा नियंत्रित हो जाती है।

२. पौराणिक एवं आध्यात्मिक विवेचन (Mythological & Spiritual Perspective) पौराणिक कथाओं में इस योग का सीधा उल्लेख कम है, लेकिन यह उन शक्तियों का प्रतिनिधित्व करता है जो नियंत्रित नहीं होतीं।

* देवता और दानवः मंगल देवताओं के सेनापति हैं, जबकि राहु (स्वरभानु) असुर है। जब ये दोनों मिलते हैं, तो युद्ध और संघर्ष की स्थिति बनती है। यह जातक के अंतर्मन में अच्छे (देव) और बुरे (असुर) के बीच निरंतर संघर्ष को दर्शाता है।
* हनुमान जी और शनि/राहुः हनुमान जी मंगल के ईष्ट देव हैं और उन्होंने राहु के प्रकोप को शांत किया था। आध्यात्मिक दृष्टि से, इस योग के निवारण के लिए #हनुमान जी की उपासना को सर्वश्रेष्ठ माना गया है, क्योंकि वह क्रोध और ऊर्जा को सही दिशा देने में सक्षम हैं।
* अध्यात्मिक फलः यह योग जातक को जीवन में तीव्र और अचानक परिवर्तन (राहु) देता है, जिससे वह भौतिक मोह से हटकर अध्यात्म की ओर मुड़ सकता है। कष्ट ही मोक्ष का मार्ग बन जाता है।

३. ब्रह्मांडीय एवं कुंडलिनी विवेचन (Cosmic & Kundalini Perspective) सूक्ष्म और स्थूल शरीर पर अंगारक योग का प्रभावः

* a. ब्रह्मांडीय ऊर्जा प्रवाह
* मंगलः यह अग्नि तत्व और ऊष्मा का प्रतिनिधित्व करता है। यह पृथ्वी पर जीवन शक्ति (#Prana) को सक्रिय करता है।
* राहुः यह एक छाया ग्रह है जो ऊर्जा के क्षेत्र को विकृत (#Distort) कर देता है।
* प्रभावः यह योग ब्रह्मांडीय ऊर्जा को अस्थिर और भ्रामक बना देता है। जातक के शरीर में पित्त और अग्नि तत्व का असंतुलन हो सकता है, जिससे रक्तचाप (Blood Pressure), एसिडिटी और अत्यधिक गर्मी की समस्याएँ होती हैं।
* b. कुंडलिनी और चक्रों पर प्रभाव
* मूल आधार और मणिपूरक चक्रः
* मंगल मुख्यतः मणिपूरक चक्र (Solar Plexus) और मूल आधार चक्र (Root Chakra) से जुड़ा है। मणिपूरक 'इच्छा शक्ति' और आधार 'सुरक्षा' का केंद्र है।
* योग का प्रभावः अंगारक योग इस क्षेत्र में अत्यधिक ऊर्जा का विस्फोट कर सकता है, जिससे जातक अत्यधिक असुरक्षित महसूस करता है और अपने आप को बचाने के लिए आक्रामक हो जाता है। यह ऊर्जा या तो अतिसक्रिय (Hyperactive) होती है या पूरी तरह से अवरुद्ध (Blocked) हो जाती है।
* समाधानः इस ऊर्जा को आज्ञा चक्र (राहु) और सहस्रार (ज्ञान) की ओर मोड़ने के लिए शक्तिशाली ध्यान और श्वास नियंत्रण (प्राणायाम) अत्यंत आवश्यक है।

४. सभी 12 भावों में अंगारक योग का प्रभाव (Effects in all 12 Houses) अंगारक योग का फल उस भाव (जीवन के क्षेत्र) पर निर्भर करता है जहाँ यह बनता है:

* 1H (व्यक्तित्व, स्वयं, स्वास्थ्य, स्वभाव): विस्फोटक व्यक्तित्व, तीखा क्रोध, शल्य क्रिया, दुर्घटना। अत्यधिक महत्वाकांक्षा।
* 2H (धन, वाणी, कुटुंब): वाणी में कठोरता या गाली-गलौज, आर्थिक स्थिरता में कमी। पारिवारिक कलह, पैतृक संपत्ति को लेकर विवाद।
* 3H (पराक्रम, भाई-बहन, संचार, साहस): साहस में अतिरेक, बिना सोचे-समझे जोखिम लेना। छोटे भाई-बहनों से झगड़े। साहसिक खेलों से चोट का खतरा।
* 4H (घर, माता, संपत्ति, सुख): गृहस्थ जीवन में अशांति, घर में क्रोधपूर्ण वातावरण। माता के स्वास्थ्य को खतरा या उनसे मतभेद। संपत्ति विवाद।
* 5H (बुद्धि, विद्या, संतान, प्रेम संबंध): संतान से समस्या, गर्भपात का खतरा। बुद्धि का गलत दिशा में प्रयोग। प्रेम संबंधों में जुनून और धोखा (राहु)।
* 6H (शत्रु, ऋण, रोग, मामा): शत्रुओं पर विजय, लेकिन संघर्ष जारी रहता है। अचानक और गुप्त रोग। मामा पक्ष से संबंध तनावपूर्ण।
* 7H (विवाह, साझेदारी, जीवनसाथी, व्यापार): वैवाहिक जीवन में तीव्र तनाव, तलाक या अलगाव की संभावना। साझेदारी में धोखा या अचानक टूटना।
* 8H (आयु, मृत्यु, दुर्घटना, गूढ़ ज्ञान): दुर्घटना का उच्च जोखिम, अचानक संकट या शल्य क्रिया। गूढ़ विद्याओं (तंत्र) की ओर तीव्र आकर्षण।
* 9H (धर्म, गुरु, पिता, भाग्य): भाग्य में अवरोध, धर्म या गुरु पर विश्वास न करना। पिता से मतभेद। विदेश यात्रा में परेशानी।
* 10H (कर्म, पद, करियर, मान-सम्मान): करियर में तीव्रता से वृद्धि, लेकिन अचानक पतन। सरकारी कार्यों में सफलता या विवाद। उच्च पद का अहंकार।
* 11H (आय, लाभ, इच्छापूर्ति, मित्र): अचानक और अनियमित लाभ। अनैतिक माध्यमों से धन कमाने की इच्छा (राहु)। बड़े भाई या मित्रों से विवाद।
* 12H (व्यय, हानि, मोक्ष, विदेश): अनावश्यक व्यय, जेल या अस्पताल का भय। गुप्त शत्रु। विदेश में अत्यधिक कठिनाई।

५. ज्योतिषीय एवं तांत्रिक उपाय (Astrological & Tantric Remedies) अंगारक योग के शमन के लिए मंगल की ऊर्जा को नियंत्रित करना और राहु के भ्रम को दूर करना आवश्यक है।

* a. ज्योतिषीय उपाय (Astrological Remedies)
* हनुमान जी की पूजाः यह सर्वश्रेष्ठ उपाय है। प्रतिदिन या मंगलवार को हनुमान चालीसा और बजरंग बाण का पाठ करें। हनुमान जी मंगल के ईष्ट हैं और राहु (शनि द्वारा नियंत्रित) पर उनका प्रभाव है।
* मंगलवार का व्रतः मंगल के दोष को शांत करने के लिए मंगलवार का व्रत रखें और गुड़, मसूर दाल का दान करें।
* रक्त दानः यदि स्वास्थ्य अनुमति दे, तो समय-समय पर रक्त दान (Blood Donation) करें। यह मंगल की बढ़ी हुई ऊर्जा को रचनात्मक रूप से बाहर निकालने का सर्वोत्तम तरीका है।
* मंत्र जपः
* मंगल मंत्रः ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः।
* राहु मंत्रः ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः।

रत्नः

मूंगा (Red Coral) धारण करने से बचें, क्योंकि यह मंगल की ऊर्जा को और बढ़ाएगा। इसके बजाय, कुंडली देखकर गोमेद (Hessonite - राहु के लिए) या पन्ना (Mercury - यदि बुध शुभ हो) धारण करने पर विचार करें।

* b. तांत्रिक उपाय (Tantric Remedies)
* तंत्र/भैरव साधनाः राहु की ऊर्जा को नियंत्रित करने के लिए काल भैरव की साधना अत्यंत प्रभावी होती है। भैरव अष्टक का पाठ करना चाहिए।
* काली पूजाः महाकाली की पूजा से मंगल (रक्त) और राहु (विष) दोनों की ऊर्जाओं का शमन होता है। मासिक अमावस्या को काली या दुर्गा कवच का पाठ करें।
* बहते जल में प्रवाहः बहते पानी में ताँबे के 8 सिक्के (मंगल और राहु की संख्या) या जौ (Barley) प्रवाहित करें ताकि विस्फोटक ऊर्जा शांत हो जाए।
* सर्प शांतिः राहु सर्प का प्रतीक है। सर्प शांति पूजा या नाग पंचमी पर नागों की पूजा करने से शांति मिलती है।
* c. व्यावहारिक उपाय (Practical Remedies)
* नियंत्रित क्रोधः अत्यधिक क्रोध से बचें। योग और ध्यान से अपनी ऊर्जा को नियंत्रित करें।
* व्यायामः मंगल की ऊर्जा को रचनात्मक दिशा देने के लिए कठोर शारीरिक श्रम या खेलकूद में भाग लें।
* भाई का सम्मानः अपने छोटे भाई-बहनों का आदर करें और उनसे अच्छे संबंध बनाए रखें।

६. निष्कर्षः अग्नि का सदुपयोग अंगारक योग एक ऐसा योग है जो जातक को असाधारण ऊर्जा और शक्ति प्रदान करता है। यह एक दोधारी तलवार के समान है। यदि इस ऊर्जा को सृजन (Construction) में लगाया जाए (जैसे सेना, पुलिस, इंजीनियरिंग, अनुसंधान), तो व्यक्ति महान सफलता प्राप्त करता है। यदि इसे अनियंत्रित छोड़ दिया जाए, तो यह विनाश (Destruction) का कारण बन सकता है।

* उपायों का मुख्य उद्देश्य इस अग्नि को नियंत्रित करना और उसे सकारात्मक दिशा देना है। यह दोष जातक को जीवन में बहादुरी, तीव्र इच्छाशक्ति और अचानक उच्च स्थिति प्रदान करने की क्षमता रखता है।

ब्रज भूमि कल्याण परिषद के द्वारा भागवत प्रवक्ताओं को सम्मानित किया

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। ब्रज भूमि कल्याण परिषद के द्वारा धर्म व अध्यात्म के क्षेत्र में अविस्मरणीय कार्य करके विश्वभर में भारतीय सनातन सनातन संस्कृति की पताका फहराने वाले दो भागवताचार्यों को सम्मानित किया गया।साथ ही उन्हें ₹सनातन गौरव₹ की उपाधि से अलंकृत किया गया।सर्वप्रथम महामंडलेश्वर स्वामी राम दास महाराज (अयोध्या), ब्रजभूमि कल्याण परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष पण्डित बिहारी लाल वशिष्ठ, प्रख्यात साहित्यकार ₹यूपी रत्न₹ डॉ. गोपाल चतुर्वेदी, बालशुक पुंडरीक कृष्ण महाराज, डॉ. राधाकांत शर्मा एवं पण्डित ईश्वरचन्द्र रावत आदि ने चैतन्य विहार फेस-2 स्थित गोविन्द धाम में चल रही श्रीमद्भागवत कथा में पहुंचकर भागवताचार्य राम भजन शास्त्री (जबलपुर) तथा रमणरेती क्षेत्र स्थित ब्रज यात्रा धाम में चल रही श्रीमद्भागवत कथा में पधारकर

भागवताचार्य राम भजन शास्त्री (जबलपुर) व भागवताचार्य सन्तोष चतुर्वेदी (भोपाल) हुए ₹सनातन गौरव₹ से अलंकृत

भागवताचार्य सन्तोष चतुर्वेदी (भोपाल) को प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह, अंग वस्त्र व ठाकुरजी का पटुका-प्रसादी-माला आदि भेंट करके सम्मानित किया।साथ ही ठाकुरश्री बांके बिहारी महाराज से उनके उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना की।

महामंडलेश्वर स्वामी राम दास महाराज (अयोध्या) एवं ब्रजभूमि कल्याण परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष पण्डित बिहारी लाल वशिष्ठ ने कहा कि वर्तमान में सनातन धर्म पर चहुंओर से कुठाराघात हो रहा है।ऐसे में भगवद् कथा, सत्संग व धर्म ग्रंथों के माध्यम से ही भारतीय वैदिक सनातन धर्म की रक्षा हो सकती है।इसीलिए हमारी संस्था भागवताचार्य, संतों व आचार्यों का सम्मान करती है।जिनके द्वारा विश्व स्तर पर सनातन धर्म का प्रचार-प्रसार किया जा रहा है।

प्रख्यात साहित्यकार ₹यूपी रत्न₹ डॉ. गोपाल चतुर्वेदी एवं बालशुक पुंडरीक कृष्ण महाराज ने कहा कि भागवताचार्य राम भजन शास्त्री (जबलपुर) और भागवताचार्य सन्तोष चतुर्वेदी (भोपाल) धर्म व अध्यात्म की बहुमूल्य निधि हैं।सनातन धर्म के प्रति उनका समर्पण भाव अद्भुत व प्रणम्य हैं।हमारी संस्था उनका सम्मान करके स्वयं गौरव की अनुभूति कर रही है।

इस अवसर पर आचार्य राधामोहन दीक्षित, विवेक पटेल, पण्डित गोविन्द दुबे आदि की उपस्थिति विशेष रही।

युवाओं में यौन संबंधों पर क्या कहते हैं ओशो

वेद प्रकाश भारद्वाज

युवकों से मैं कहना चाहता हूं कि तुम्हारे मां बाप, तुम्हारे पुरखे, तुम्हारी हजारों साल की पीढ़ियाँ यौन संबंध से भयभीत रही है. तुम भयभीत मत रहना. तुम समझने की कोशिश करना उसे. तुम पहचानने की कोशिश करना. तुम बात करना. तुम इसके संबंध में आधुनिक जो नई खोज हुई है उनको पढ़ना, चर्चा करना और समझने की कोशिश करना कि सेक्स क्या है. क्या है इसका मैकेनिज्म? उसका यंत्र क्या है? उसका यंत्र क्या है? क्या है उसकी आकांक्षा? क्या है उसकी प्यास? क्या है प्राणों के भीतर छिपा हुआ राज?

इसको समझना. इसकी सारी की सारी वैज्ञानिकता को पहचानना. उससे भागना, 'एस्केप' मत करना. आँख बंद मत करना. और तुम हैरान हो जाओगे कि तुम जितना समझोगे, उतने ही मुक्त हो जाओगे. तुम जितना समझोगे, उतने ही स्वस्थ हो जाओगे. तुम जितना इसके फैक्ट को समझ लोगे, उतना ही कामुकता के 'फिक्शन' से तुम्हारा छुटकारा हो जायेगा.

तथ्य को समझते ही आदमी कहानियों से मुक्त हो जाता है. और जो तथ्य से बचता है, वह कहानियों में भटक जाता है. कितनी सेक्स की कहानियां चलती हे. और कोई मजाक ही नहीं है हमारे पास, बस एक ही मजाक है कि यौन संबंध की तरफ इशारा करें और हंसे. हद हो गई. तो जो आदमी यौन संबंध की तरफ इशारा करके हंसता है, वह आदमी बहुत ही क्षुद्र है.

कामुकता की तरफ इशारा करके हंसने का क्या मतलब है? उसका एक ही मतलब है कि आप समझते ही नहीं. बच्चे तो बहुत तकलीफ में है कि उन्हें कौन समझायें, किससे वे बातें करें कौन सारे तथ्यों को सामने रखे. उनके प्राणों में जिज्ञासा है, खोज है, लेकिन उसको दबाये चले जाते हे. रोके चले जाते है. उसके दुष्परिणाम होते है.

जितना रोकते है, उतना मन वहां दौड़ने लगता है और उस रोकने और दौड़ने में सारी शक्ति और ऊर्जा नष्ट हो जाती है.

यह मैं आपसे कहना चाहता हूं कि जिस देश में भी इसकी स्वस्थ रूपा से स्वीकृति नहीं होती, उस देश की प्रतिभा का जन्म नहीं होता. पश्चिम में तीस वर्षो में जो जीनियस पैदा हुआ है, जो प्रतिभा पैदा हुई है. वह यौन संबंध के तथ्य की स्वीकृति से पैदा हुई है.

जैसे ही यह स्वीकृत हो जाता है. वैसे ही जो शक्ति हमारी लड़ने में नष्ट होती है, वह शक्ति मुक्त हो जाती है. वह रिलीज हो जाती है. और उस दिन शक्ति को फिर हम रूपांतरित करते है — पढ़ने में खोज में, आविष्कार में, कला में, संगीत में,साहित्य में. और अगर वह शक्ति सेक्स में ही उलझी रह जाये जैसा कि सोच लें कि वह आदमी जो कपड़े में उलझ गया है —नसरूदीन, वह कोई विज्ञान के प्रयोग कर सकता था बेचारा. कि वह कोई सत्य का सृजन कर सकता था? कि वह कोई मूर्ति का निर्माण कर सकता था. वह कुछ भी कर सकता था. वह कपड़े ही उसके चारों और घूमते रहते है ओर वह कुछ भी नहीं कर पाता है.

भारत के युवक के चारों तरफ सेक्स घूमता रहता है पूरे वक्त. और इस घूमने के कारण उसकी सारी शक्ति इसी में लीन और नष्ट हो जाती है. जब तक भारत के युवक की इस रोग से मुक्ति नहीं होती, तब तक भारत के युवक की प्रतिभा का जन्म नहीं हो सकता.

प्रतिभा का जन्म तो उसी दिन होगा, जिस दिन इस देश में सेक्स की सहज स्वीकृति हो जायेगी. हम उसे जीवन के एक तथ्य की तरह अंगीकार कर लेंगे — प्रेम से, आनंद से — निंदा से नहीं. और निंदा और घृणा का कोई कारण भी नहीं है.

सफल हुआ भारतीय प्रधान संगठन टीम अध्यक्ष एस के सिंह का परिश्रम , अब ग्राम प्रधानों को भी मिलेगा वेतन

सुनील बाजपेई

कानपुर। देश में प्रजातंत्र का आधार इकाई ग्राम पंचायत में विकास का माध्यम और वोटरों पर मजबत पकड़ के चलते किसी दल की सरकार बनवाने में सक्षम ग्राम प्रधानों के दिन अब बहुरने वाले है। उन्हें अब बहुत जल्द ₹35000 प्रतिमाह मिला करेगा। ग्राम प्रधानों के हित में इस सफलता का श्रेय भारतीय प्रधान संगठन को जाता है ,जो कि एक लंबे अरसे से ग्राम प्रधानों को पेंशन देने की मांग को लेकर लगातार संघर्षरत था। पेंशन पर तो बात नहीं बनी लेकिन मासिक वेतन पर बात बन गई है। उसके बाद ग्राम प्रधानों को वेतन देने से संबंधित कार्रवाई को अंतिम रूप दिया जा रहा है।

भारतीय प्रधान संगठन और क्षत्रिय जागरण मंच के भी प्रदेश अध्यक्ष एस के सिंह ने यह जानकारी देते हुए यहां बताया कि देश के विकास उन्नति और प्रगति का मुख्य मार्ग किसानों और ग्राम प्रधानों के बीच से ही होकर जाता है। साथ ही वह वोटरों पर मजबूत पड़कर चलते किसी भी दल की सरकार को न केवल केंद्र में बल्कि किसी भी प्रदेश में बनवाने में भी सक्षम होते हैं।

लेकिन कर्तव्य निर्माण के दौरान ग्राम प्रधानों को विभिन्न समस्याओं से भी गुजरना पड़ता हैं। इसीलिए भारतीय प्रधान संगठन और क्षत्रिय जागरण मंच की ओर से ग्राम प्रधानों को सबसे पहले पेंशन देने की मांग उठाई गई थी, जिसके लिए कई बार केंद्रीय मंत्रियों से भी मुलाकात करके उन्हें ज्ञापन भी दिया गया था।

याद रहे कि भारतीय प्रधान संगठन ने ग्राम प्रधानों को वेतन दिलवाने से संबंधित मांगों को पूरा किए जाने की पूर्ण आशा के साथ भारतीय जनता पार्टी का साथ तन मन धन से बीते लोक सभा और विधान सभा चुनाव में भी दिया था। लेकिन इसके बाद भी संगठन के प्रदेश अध्यक्ष एसके सिंह शांत नहीं बैठे थे और वह अपनी अगुवाई में प्रतिनिधि मंडल लेकर तत्कालीन पंचायती राज्य मंत्री पुरुषोत्तम रुपाला के पास जा पहुंचे थे। यह बात 16 फरवरी 2018 की है। उस दिन पंचायती राज मंत्री पुरुषोत्तम रुपाला से

प्रतिनिधिमंडल से मुलाकात भी हुई थी ,जिसपर उन्होंने प्रधान संगठन की सभी मांगों को पूरा करने का भरोसा भी दिया था। अध्यक्ष एसके सिंह ने बताया कि प्रधानों की मांगों के संदर्भ में भारतीय प्रधान संगठन का परिश्रम अब रंग लाया है ,जिसके फल स्वरुप ही सरकार ने उन्हें 35000 रुपए प्रतिमाह देने की मांग स्वीकार कर ली है ,जिसको लेकर उत्तर प्रदेश की सभी ग्राम प्रधानों में खुशी की लहर है। वहीं इसके लिए प्रदेश अध्यक्ष एसके सिंह के साथ ही भारतीय प्रधान संगठन के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष दिल्ली के अनित कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुंबई के जयेश रविशंकर जोशी, महासचिव बिहार के प्रहलाद नारायण सिंह, राष्ट्रीय सचिव शिवम त्यागी ,दोनों संगठनों में पूर्वांचल के अध्यक्ष तिलकधारी सिंह, प्रमुख महासचिव शिव सिंह यादव, महासचिव ए के पांडे, महासचिव जिला मऊ के अशोक कुमार , प्रदेश महासचिव झांसी के पहलवान सिंह , प्रदेश महासचिव कानपुर की भाजपा नेता निशा तिवारी, प्रदेश कोषाध्यक्ष अजीत सिद्दीकी, लखीमपुर खीरी की जिलाअध्यक्ष, श्रीमती संगीता सोनकर, हमीरपुर के जिला अध्यक्ष मोहम्मद हसीन, फतेहपुर के प्रकाश गुप्ता ,बिजनौर के सुरेंद्र सिंह राणा, झांसी की मंडल अध्यक्ष पुष्पा झा और हाथरस के जिलाअध्यक्ष कबीर प्रधान जालौन की जिला अध्यक्ष पदमा सेंगर आदि ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और केंद्रीय मंत्री पुरुषोत्तम रुपाला का आभार व्यक्त करते हुए ग्राम प्रधानों को वेतन देने से संबंधित कार्यवाही को जल्द से जल्द अमली जामा पहनाने की जोरदार मांग भी की है।

सुबह और शाम मास्क लगा कर निकलें : डा. नैत्रपाल

परिवहन विशेष न्यूज

करनाल: अधिक तापमान गिरने के कारण हाईपोथर्मिया का खतरा मंडरा रहा है। अधिक सदभ्र के कारण कार्डियक रेस्ट, हर्ट फैल , अधिक रक्तचाप लकबा, ब्रेन हेमरजे का ,खतरा मंडारा रहा है। इन मामलों को लेकर देश के जाने माने मैडीसन विशेषज्ञ के साथ रावल अस्पताल में कार्डियक स्पेंशलिस्ट डाः नैत्रपाल से बात की। उन्होंने सुबह और शाम को घरों से बाहर नहीं निकलने की सलाह बुजुर्गों और बच्चों को दी है।

उन्होंने अधिक से अधिक गर्म पानी और गर्म पेय का प्रयोग करने को कहा। उन्होंने कहा कि दोपहर में या धूप निकलने पर सैर करें। इस समय इनडोर एक्सरसाइज करें। उन्होंने बताया कि ठंडी हवा के प्रवेश रोकने के लिए दरवाजों तथा खिड़कियों को ठीक से बंद रखें। फ्लू, नॉक बहना/ भरी नाक या नाक बंद जैसी विभिन्न बीमारियों की संभावना आमतौर पर ठंड में लंबे समय तक संपर्क में रहने के कारण होती हैं। इसलिए इस तरह के लक्षणों से बचाव के लिए आवश्यक सावधानी बरतें तथा डॉक्टर से परामर्श करें। जितना हो सके घर के अंदर रहें और ठंडी हवा, बारिश, बर्फ के संपर्क में आने से बचने के लिए कम से कम यात्रा करें। ऐसे गर्म कपड़े पहनें ताकि ठंड बिल्कुल न लगे।

तंग कपडे खून के बहाव को रोकते हैं, इनसे बचें। खुद को सूखा रखें और पानी में भीगने से बचें। शरीर की गरमाहट बनाये रखने हेतु अपने सिर, गर्दन, हाथ और पैर की उंगलियों को पर्याप्त रूप से ढककर रखें। गीले कपड़े तुरंत बदलें। हाथों में दस्ताने रखें। फेफड़ों को बचाने के लिए मास्क का प्रयोग करें। सिर पर टोपी या मफलर पहने, स्वास्थ्य वर्धक भोजन लें।

उन्होंने कहा कि पर्याप्त रोग प्रतिरोधक क्षमता बनाए रखने के लिए विटामिन सी से भरपूर फल और सब्जियां खाएं। गर्म तरल पदार्थ नियमित रूप से पीएं, इससे ठंड से लडने के लिए शरीर की गर्मी बनी रहेगी। बुजुर्ग लोगों, नवजात शिशुओं तथा बच्चों का विशेष ध्यान रखें। ऐसे पड़ोसी जो अकेले रहते हैं, विशेषकर बुजुर्ग लोगों का हाल चाल पूछते रहें। जरूरत के अनुसार ही रूम हीटर का प्रयोग करें, लेकिन रूम हीटर के प्रयोग के दौरान पर्याप्त हवा निकासी का प्रबंध रखें। बंद कमरों में कोयले को जलाना खतरनाक हो सकता है। क्योंकि यह कार्बन मोनोऑक्साइड जैसी जहरीली गैस पैदा करती है। शराब का सेवन न करें, यह शरीर की गर्माहट को कम करता है, यह खून की नसों को पतला कर देता है, विशेषकर हाथों से जिसमें हाइपोथर्मिया का खतरा बढ़ जाता है। इस दौरान बुजुर्गों और बच्चों को देश के जारने माने फिजीशियन डा. नैत्रपाल ने सलाह दी है कि वह अल सुबह और देर रात सैर नहीं करें। यइ गैर जरूरी काम हो तो घर से बाहर नहीं निकलें। सुबह के समय बाहर निकलते समय प्रदूषित हवा के काराण छाती में संक्रमण हो सकता हैं। फैंफड़ों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता हैं। उन्होंने कहा कि बुजर्ग के साथ शुगर वीपी और हृदय रोग से पीड़ित लोगों को सुबह नौ बजे के बाद धूप निकलने पर सैर करना चाहिए। यदि सैर जरूरी है तो इनडोर में भी सैर की जा सकती है।

उन्होंने बताया कि नवंवर से लेकर जनवरी तक अल सुबह की सैर से बचना चाहिए। उन्होंने कहा कि मौसम बदलने के कारण वायरल फीवर का संक्रमण भी बढ़ रहा हैं। उन्होंने कहा कि सुबह और शाम मास्क लगा कर घूमना चाहिए। वहीं पर बाजार के खाने से बचना चाहिए। अधिक से अधिक पानी पीना चाहिए। उन्होंने कहा कि इस मौसम में स्रक्रमण जल्दी फैलता है क्यों कि प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है। ज्यूसी फल अधिक लेना चाहिए।

युवाओं के मार्गदर्शक थे स्वामी विवेकानंद: आशीष देव

दीप प्रज्वलित कर याद किए गए युवाओं के प्रेरणास्रोत

परिवहन विशेष न्यूज

सैदपुर। स्वामी विवेकानंद की जयंती जिसे विद्यार्थी परिषद राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाती है। इस मौके पर नगर इकाई सैदपुर के कार्यकर्ताओं ने नगर कार्यालय पर स्वामी विवेकानंद की प्रतिमा के समक्ष कार्यकर्ताओं ने दीप प्रज्वलित कर उन्हें अपनी पुष्पांजलि अर्पित की और उनके आदर्शों पर चलने का संकल्प लिया। इस अवसर पर स्वामी विवेकानंद को याद करते हुए प्रदेश मीडिया सह संयोजक आशीष देव मिश्रा ने स्वामी विवेकानंद के जीवन और उनके संघर्षों पर विस्तार से प्रकाश डाला।

उन्होंने कहा कि स्वामी जी के विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने उनके समय में थे। उन्होंने दुनिया को भारत की आध्यात्मिक शक्ति से परिचित कराया और युवाओं को उठो, जागो और लक्ष्य प्राप्ति तक मत रुको' का मंत्र देकर नई चेतना जगाई। आशीष देव ने कार्यकर्ताओं से आह्वान किया कि वे स्वामी जी के राष्ट्रवाद और सेवा के संदेश को जन-जन तक पहुंचाएं।

इस मौके पर प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य शशांक शर्मा, तहसील संयोजक निशांत शर्मा, विक्की मौर्य, राजीव शर्मा और अमित यादव सहित भारी संख्या में कार्यकर्ता उपस्थित रहे। सभी ने स्वामी जी के चित्र पर पुष्प अर्पित कर देश की उन्नति में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करने की शपथ ली।

ईरान की स्थिति अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंधों,सामाजिक नियंत्रण, राजनीतिक असंतोष और युवा पीढ़ी की निराशा का सामूहिक विस्फोट है- एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

गोंदिया - वैश्विक स्तरपर ईरान इस समय अपने आधुनिक इतिहास के सबसे संवेदनशील और निर्णायक दौर से गुजर रहा है। यह संकट केवल कानून- व्यवस्था या किसी एक आंदोलन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह वर्षों से जमा होते आ रहे आर्थिक दबावों, अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंधों, सामाजिक नियंत्रण, राजनीतिक असंतोष और युवा पीढ़ी की निराशा का सामूहिक विस्फोट है। हालिया महीनों में गोलीबारी, आगजनी और हिंसक झड़पों में अमेरिकी मानव अधिकार आयोग सूत्रों के अनुसार 544 से अधिक मौतों की खबरें इस बात का संकेत हैं कि ईरान अब केवल असंतोष के चरण में नहीं,बल्कि व्यापक अस्थिरता के मुहाने पर खड़ा है। यह अस्थिरता घरेलू है, लेकिन इसके प्रभाव क्षेत्रीय और वैश्विक हैं। ईरान में जनता का गुस्सा अचानक पैदा नहीं हुआ है। यह गुस्सा वर्षों से भीतर ही भीतर उबल रहा था।मैं एडवोकेट किशन समुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं क़ि अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंधों ने ईरानी अर्थव्यवस्था को लगातार कमजोर किया,तेल निर्यात सीमित हुआ, विदेशी निवेश लगभग ठप हो गया और बैंकिंग प्रणाली वैश्विक वित्तीय तंत्र से कटती चली गई।इसका सीधा असर रोजगार, मुद्रा मूल्य, महंगाई और आम नागरिक की क्रय-शक्ति पर पड़ा।आज स्थिति यह है कि आम ईरानी नागरिक के लिए जीवन केवल जीने का संघर्ष बन चुका है।

साथियों बात अगर हम जब मुद्रा,महंगाई और कर नीति जनता के खिलाफ खड़ी होने से आर्थिक पतन को समझने की करें तो, 2025 में ईरानी मुद्रा रियल का अपने इतिहास के सबसे निचले स्तर पर गिरकर लगभग 1.45 मिलियन रियल प्रति अमेरिकी डॉलर तक पहुंचना केवल एक आर्थिक आंकड़ा नहीं है,बल्कि यह राज्य की आर्थिक विश्वसनीयता के पतन का प्रतीक है। केवल एक वर्ष के भीतर रियल की कीमत का लगभग आधा हो जाना यह दर्शाता है कि बाजार को सरकार की नीतियों, स्थिरता और भविष्य की संभावनाओं पर भरोसा नहीं रहा।मुद्रा अवमूल्यन ने आयातित वस्तुओं को बेहिसाब महंगा कर दिया, जिससे महंगाई ने विकराल रूप ले लिया। खाने -पीने की आवश्यक वस्तुएं लगभग 72 प्रतिशत तक महंगी हो चुकी हैं,जबकि दवाइयों की कीमतों में 50 प्रतिशत तक की वृद्धि दर्ज की गई है। यह स्थिति विशेष रूप से बुजुर्गों,बच्चों और बीमार नागरिकों के लिए जीवन -मरण का प्रश्न बन गई है। जिस देश में स्वास्थ्य सेवाएं पहले से ही प्रतिबंधों के कारण दबाव में हों, वहां दवाइयों का महंगा होना सामाजिक संकट को और गहरा करता है।इस आर्थिक दबाव के बीच सरकार द्वारा 2026 के बजट प्रस्ताव में 62 प्रतिशत तक टैक्स बढ़ाने की चर्चा ने जनता की नाराजगी को और भड़का दिया है। चाहे यह प्रस्ताव अंतिम रूप ले या नहीं, लेकिन इसके संकेत मात्र ने यह स्पष्ट कर दिया है कि शासन आर्थिक संकट का बोझ सीधे आम नागरिकों पर डालने की तैयारी में है। कर बढ़ोतरी ऐसे समय में प्रस्तावित की गई है जब रोजगार के अवसर सिकुड़ रहे हैं और युवाओं के लिए भविष्य की संभावनाएं लगभग धुंधली हो चुकी हैं।

साथियों बात अगर हम युवा पीढ़ी और जेड जेनःउम्मीदों के टूटने का सामाजिक विस्फोट इसको समझने की करें तो, ईरान की जनसंख्या संरचना में युवाओं की संख्या निर्णायक है।विशेष रूप से जेड जेन, जो वैश्विक इंटरनेट संस्कृति, सोशल मीडिया और तुलनात्मक स्वतंत्रताओं से परिचित है,वह पुराने धार्मिक- राजनीतिक ढांचे से खुद को असहज महसूस कर रही है।बेरोजगारी,सीमितसामाजिक स्वतंत्रता,अभिव्यक्ति पर नियंत्रण और आर्थिक अनिश्चितता ने युवाओं को व्यवस्था से विमुख कर दिया है।यह पीढ़ी केवल रोटी, नौकरी और महंगाई की बात नहीं कर रही, बल्कि यह पहचान, गरिमा और विकल्पों की मांग कर रही है।यही कारण है कि विरोध प्रदर्शन केवल आर्थिक नारे नहीं उठा रहे, बल्कि वे सत्ता की वैधता, शासन मॉडल और भविष्य की दिशा पर प्रश्नचिह्न लगा रहे हैं। जब किसी समाज की युवा पीढ़ी को यह महसूस होने लगे कि वर्तमान व्यवस्था उनके सपनों के विरुद्ध है, तब आंदोलन केवल अस्थायी नहीं रह जाते।

साथियों बात अगर हम सड़कों पर फूटा उबालःहिंसा दमन और राज्य की प्रतिक्रिया को समझने की करें तो,ईरान में हालिया प्रदर्शनों के दौरान गोलीबारी, आगजनी और सख्त सुरक्षा कार्रवाई यह दिखाती है कि राज्य अब संवाद से अधिक नियंत्रण की नीति अपना रहा है। 544 से अधिक मौतें इस बात का प्रमाण हैं कि स्थिति सामान्य विरोध प्रदर्शन से आगे निकल चुकी है। राज्य की ओर से इंटरनेट प्रतिबंध, कर्फ्यू, गिरफ्तारी और कड़े दमन ने अस्थिरता को कम करने के बजाय कई स्थानों पर और बढ़ाया है।इतिहास बताता है कि जब आर्थिक संकट और राजनीतिक असंतोष एक साथ आते हैं, तो केवल दमन से स्थिति को लंबे समय तक नियंत्रित नहीं किया जा सकता। ईरान में भी यही चुनौती सामने है,क्या शासन व्यवस्था जनता के विश्वास को पुनः अर्जित कर पाएगी, या यह संकट और गहराएगा?

साथियों बात अगर हम क्राउन प्रिंस रजा पहलवीः इतिहास की परछाई या भविष्य का विकल्प ?इसको समझने की करें तो,इसी उथल-पुथल के माहौल में एक पुराना नाम फिर से चर्चा में आ रहा है,क्राउन प्रिंस रजा पहलवी। 1979 की इस्लामी क्रांति के बाद शाह मोहम्मद रजा पहलवी का परिवार सत्ता से बाहर हुआ था और ईरान में इस्लामिक रिपब्लिक की स्थापना हुई। दशकों तक पहलवी राजवंश का नाम इतिहास की किताबों तक सीमित माना जाता रहा, लेकिन मौजूदा संकट ने उसे फिर से राजनीतिक विमर्श में ला खड़ा किया है।रजा पहलवी स्वयं को लोकतांत्रिक, धर्मनिरपेक्ष और मानवाधिकार- आधारित ईरान के समर्थक के रूप में प्रस्तुत करते हैं। सोशल मीडिया और प्रवासी ईरानी समुदाय के बीच उनकी लोकप्रियता बढ़ी है। हालांकि, यह भी सच है कि ईरान के भीतर अभी भी उनकी स्वीकार्यता सीमित और विभाजित है। कई लोग उन्हें पश्चिम समर्थित विकल्प मानते हैं, जबकि कुछ उन्हें वर्तमान शासन के संभावित विकल्प के रूप में देखते हैं।यह स्थिति दर्शाती है कि जब वर्तमान व्यवस्था पर भरोसा कमजोर होता है, तो समाज इतिहास के उन अध्यायों की ओर भी देखने लगता है, जिन्हें कभी बंद मान लिया गया था।

साथियों बात अगर हम पश्चिम,अमेरिका और मानवाधिकार विमर्श इसको समझने की करें तो,ईरान के संदर्भ में अमेरिका और पश्चिमी देशों की ओर से मानवाधिकार उल्लंघनों की आलोचना कोई नई बात नहीं है। महिलाओं के अधिकार, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, राजनीतिक बंदियों और दमनात्मक कानूनों को लेकर लंबे समय से अंतरराष्ट्रीय दबाव बना हुआ है। हालिया हिंसा और मौतों ने इस आलोचना को और तेज कर दिया है।इसके साथ ही प्रतिबंधों की नीति भी पश्चिमी रणनीति का प्रमुख हिस्सा रही है। हालांकि, ईरान और कई स्वतंत्र विश्लेषकों का तर्क है कि इन प्रतिबंधों का सबसे बड़ा नुकसान आम नागरिकों को हुआ है, न कि सत्ता के शीर्ष को। यही कारण है कि प्रतिबंधों को लेकर वैश्विक स्तर पर नैतिक और व्यावहारिक बहस भी तेज हो रही है।तेहरान का पक्षःबाहरी साजिश बनाम आंतरिक संकट तेहरान लगातार यह आरोप लगाता रहा है कि आंतरिक अस्थिरता को बढ़ाने में बाहरी ताकतों की भूमिका है। सरकार के अनुसार, विदेशी मीडिया, खुफिया एजेंसियां और कुछ प्रवासी समूह असंतोष को भड़काने का काम कर रहे हैं। यह तर्क ईरान के राजनीतिक विमर्श का स्थायी हिस्सा रहा है।हालांकि यह भी सच है कि बाहरी हस्तक्षेप का आरोप आंतरिक समस्याओं की गंभीरता को पूरी तरह ढक नहीं सकता। जब आर्थिक आंकड़े, महंगाई, बेरोजगारी और सामाजिक असंतोष स्वयं बोल रहे हों, तब केवल विदेशी साजिश का नैरेटिव जनता को लंबे समय तक संतुष्ट नहीं कर पाता।

साथियों बात अगर हम भारत में ईरानी दूतावास कासंदेश और खामेनेई का बयान इसको समझने की करें तो भारत में ईरान के दूतावास द्वारा सर्वोच्च नेता आयतुल्लाह अली खामेनेई का वीडियो साझा किया जाना कूटनीतिक और वैचारिक दोनों दृष्टि से महत्वपूर्ण है। बिना किसी देश का नाम लिए खामेनेई का यह कहना कि ईरान पर हर प्रकार का दबाव बनाया गया, लेकिन खुदा का शुक्र है कि इस्लामिक रिपब्लिक आज भी ताकतवर है, एक स्पष्ट संदेश देता है,ईरान स्वयं को घिरा हुआ लेकिन झुका हुआ नहीं मानता।यह बयान न केवल घरेलू समर्थकों के लिए है, बल्कि अंतरराष्ट्रीय समुदाय के लिए भी एक संकेत है कि ईरान दबाव की राजनीति के आगे झुकने वाला नहीं है। भारत जैसे देशों में यह संदेश यह भी दर्शाता है कि ईरान अपने रणनीतिक साझेदारों के बीच नैरेटिव युद्ध को भी गंभीरता से ले रहा है।

साथियों बात कर हम भारत और वैश्विक संतुलन इसको समझने की करें तो,भारत के लिए ईरान का यह संकट एक संवेदनशील कूटनीतिक चुनौती भी है। एक ओर भारत के ईरान के साथ ऐतिहासिक, ऊर्जा और रणनीतिक संबंध रहे हैं, वहीं दूसरी ओर पश्चिमी दबाव और क्षेत्रीय अस्थिरता भीवास्तविकता है।भारत का संतुलित रुख इस बात को दर्शाता है कि वह किसी भी पक्ष में खुलकर खड़ा होने से पहले क्षेत्रीय स्थिरता और अपने दीर्घकालिक हितों को प्राथमिकता देता है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि ईरान के सामने इतिहास का चौराहा,आज ईरान एक ऐसे चौराहे पर खड़ा है, जहां आर्थिक पतन, सामाजिक असंतोष, युवा पीढ़ी की बेचैनी और अंतरराष्ट्रीय दबाव एक साथ टकरा रहे हैं। यह संकट केवल शासन के लिए नहीं, बल्कि पूरे समाज के लिए आत्ममंथन का अवसर भी है। सवाल यह नहीं है कि ईरान दबाव में है या नहीं, बल्कि यह है कि वह इस दबाव से निकलने का रास्ता संवाद, सुधार और समावेशन से खोजेगा या नियंत्रण और टकराव से।इतिहास गवाह है कि कोई भी व्यवस्था केवल शक्ति के बल पर लंबे समय तक नहीं टिकती। ईरान के भविष्य की दिशा इस बात पर निर्भर करेगी कि वह अपने नागरिकों की पीड़ा को कितनी गंभीरता से सुनता है और परिवर्तन को खतरे के रूप में देखता है या अवसर के रूप में। यही संघर्ष आज ईरान को न केवल एक राष्ट्रीय संकट, बल्कि एक अंतरराष्ट्रीय अध्ययन का विषय बना रहा है।

राजनैतिक व्यंग्य-समागम

1. अधर्म का हिंदुत्व : विष्णु नागर

बांग्लादेश या पाकिस्तान में किसी हिंदू की हत्या वहां के सांप्रदायिक तत्व कर देते हैं, तो यहां के हिंदूवादियों का 'हिंदुत्व ' उर्फ ' सनातनत्व ' बड़े जोर-शोर से जाग जाता है। लगता है कि इन्हें अगर छूट मिल जाए, तो ये तलवार लेकर उनकी सीमा में दौड़ जाएं और बदला लेकर ही वापस आएं ! फिर बार्डर पर इनके भाई-बहन ढोल-नगाड़े के साथ इनके माथे पर तिलक लगाकर इनका स्वागत करें। लेकिन ये जानते हैं कि एक बार वहां गए, तो फिर वहीं रह जाएंगे ! वहां इनका 'शौर्य' - जिसका ये दिवस खूब जोर-शोर से यहां मनाते हैं - काम नहीं आएगा। इसलिए यहीं से शब्द-बाण छोड़कर ये काम चला लेते हैं। भारत सरकार भी यही करती है, क्योंकि भारत अभी ट्रंप का अमेरिका नहीं बना है !

थोड़ी देर के लिए मान लेते हैं कि चलो, ये किसी की तो चिंता करते हैं ! बांग्लादेश और पाकिस्तान के हिंदुओं की फ़िक्र तो इन्हें है, मगर इंदौर के भागीरथपुरा में साफ पानी में गू-मूत का पानी मिलाकर लोगों को मरने के लिए छोड़ दिया जाता है, तो इनका 'हिंदुत्व' नहीं जागता, जबकि मरने वाले संयोग से सभी हिंदू थे ! चार साल पहले ही पीने के पानी में गंदगी मिलने की रिपोर्ट आ चुकी थी, मगर किसी को चिंता नहीं थी ! अब भी किसी को इन मौतों में हिंदू एंगल नहीं दिखा, क्योंकि इस पूरे कांड में कहीं मुसलमान नजर नहीं आए ! कांग्रेस एंगल भी नहीं दिखा, क्योंकि कांग्रेस भी दृश्य में नहीं थी ! जवाहर लाल नेहरू एंगल तक नहीं दिखा, जबकि इस एंगल से मोदी जी साढ़े ग्यारह साल से राज चला रहे हैं। इन मौतों के बाद न हिंदू जागा और न उसे कोई जगाने आया ! आता भी कैसे, क्योंकि देश में जिनकी सरकार है, प्रदेश में भी उन्हीं की सरकार है और नगर निगम भी उन्हीं के कब्जे में है ! यहां 'हिंदू' 'जाग कर' अपना टाइम क्यों खराब करता !

इनका 'हिंदुत्व' तब भी नहीं जागता, जब बलात्कारी और हत्या आरोपी आजीवन कैद की सज़ा पाए कुलदीप सिंह सेंगर को दिल्ली उच्च न्यायालय जमानत दे देता है और जब बलात्कार की शिकार लड़की और उसकी मां अपनी जान को खतरा बताते हुए इसके विरोध में इंडिया गेट पर धरना देने बैठ जाती है। पुलिस उन्हें तथा उसके समर्थन में आई महिला कार्यकर्ता को बुरी तरह घसीट कर बस में बैठाती है। तब इनका हिंदुत्व थोड़ा-सा जागा तो, मगर बलात्कारी के समर्थन में जागा। महिला पहलवानों से बदसलूकी करनेवाला ब्रजभूषण शरण सिंह का हिंदुत्व सेंगर के हक में जागा। किसी महिला और कुछ पुरुषों का भी सेंगर के समर्थन में जागा। जिस हिंदू को जगाने का आह्वान हर दिन, हर सुबह किया जाता है, वह बलात्कृता के हित में खर्राटे लेता रहा !

हत्या और बलात्कार के केस में आजीवन सजा पा चुका राम रहीम जब चाहता है या जब सरकार उसका इस्तेमाल करना चाहती है, वह पेरोल या फरलो पर बाहर आ जाता है। अभी 15 वीं बार उसे 40 दिन की पेरोल मिली। आठ साल में एक साल से भी अधिक समय तक वह जेल से बाहर रहा।

जब सरकार और भाजपा उसके साथ है, तो जेल में भी वह मस्ती ही मारता होगा ! इसने जिसे मारा और जिनसे बलात्कार किया, वे सभी हिंदू थे, मगर इनका हिंदुत्व विचलित नहीं हुआ ! मुंह से बोल तक नहीं फूटे ! कोई प्रदर्शन, कोई जुलूस इन्होंने नहीं निकाला ! एक मिनट के लिए भी इनका खून नहीं खौला ! गर्मी में भी बर्फ बन जमा रहा ! यहां भी कोई मुस्लिम, कोई नेहरू एंगल नहीं था। यह कहने की गुंजाइश नहीं थी कि नेहरू जी की गलती से राम रहीम ने हत्या और बलात्कार किया और नेहरू जी की वजह से ही इसे बार-बार जेल से बाहर आने का मौका मिल जाता है !

उत्तराखंड के अंकिता भंडारी हत्याकांड के मामले में एक वीवीआईपी का नाम सामने आया, जो हिंदूवादी पार्टी का है। उस इलाके की औरतें उस कथित वीवीआईपी के विरुद्ध हिम्मत से खड़ी हुईं, मगर गर्व से फूला हिंदुत्व आराम फरमाता रहा। कुंभकर्ण तो कहते हैं कि छह महीने सोता था और छह महीने जागता था। हिंदुत्व का कुंभकर्ण जब तक हिंदू-मुस्लिम न हो, सोता रहता है।करवट तक नहीं बदलता !

इस देश का यह 'हिंदू' तब भी सोया रहता है, जब एम्स से लेकर तमाम सरकारी अस्पतालों में मरीज या मरीजों के रिश्तेदार दिल्ली की कड़ाके की ठंड में रात में बाहर सोने को मजबूर होते हैं। किसी का हिंदुत्व इनकी मदद के लिए नहीं जागता, जबकि इनमें से अधिकांश हिंदू ही होंगे !

इनका हिंदुत्व कभी किसी को सच्चा न्याय दिलाने के लिए नहीं जागता, न्यायसंगत मजदूरी दिलाने के लिए नहीं जागता। इनका हिंदुत्व ट्रंप को जिताने के लिए जाग कर पूजा-पाठ, यज्ञ-हवन करने लग जाता है, मगर जब यही ट्रंप इनके हिंदू हृदय सम्राट की खिल्ली उड़ाता है, तो नहीं जागता, क्योंकि सम्राट जी हिंदुत्व को इसके लिए तकलीफ़ नहीं देना चाहते। इससे ट्रंप को खुश करने के उनके प्रयत्नों में रुकावट आ सकती है ! हथकड़ी-बेड़ियों में जकड़कर जब ट्रंप भारतीयों को हमारे यहां छोड़ जाता है, तब भी यह हिंदुत्व नहीं जागता। हां, किसी बंगाली मुसलमान को घुसपैठिया घोषित करना हो तो यह उत्थिष्ठत-जागृत हो जाता है। मस्जिद और मदरसे और कब्रें गिराना हो, तो पुलिस के साथ खड़ा मिलता है। ईसाइयों की क्रिसमस की खुशियों को बर्बाद करने के लिए यह जाग जाता है। कोई उत्तर-पूर्व का हो, तो उसे विदेशी घोषित करके उसे गाली देने और उसकी जान लेने के लिए खड़ा हो जाता है। कोई मुस्लिम व्यापारी चार लोगों से रास्ता पूछे तो उसकी जान लेने के लिए जाग जाता है। ग्यारह साल की मुस्लिम लड़की से बलात्कार करने वाले का समर्थन करने के लिए जाग जाता है। जिस हिंदुत्व पर इन्हें इतना गर्व है, वह नागपुर और दिल्ली का अत्यंत आज्ञाकारी सेवक है। उसकी ध्वजा धर्म की है, मगर अधर्म के हक में खड़े रहते-रहते, न उसकी टांगें कभी दुखी, न कमर !

(कई पुरस्कारों से सम्मानित विष्णु नागर साहित्यकार और स्वतंत्र पत्रकार हैं। जनवादी लेखक संघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष हैं।)

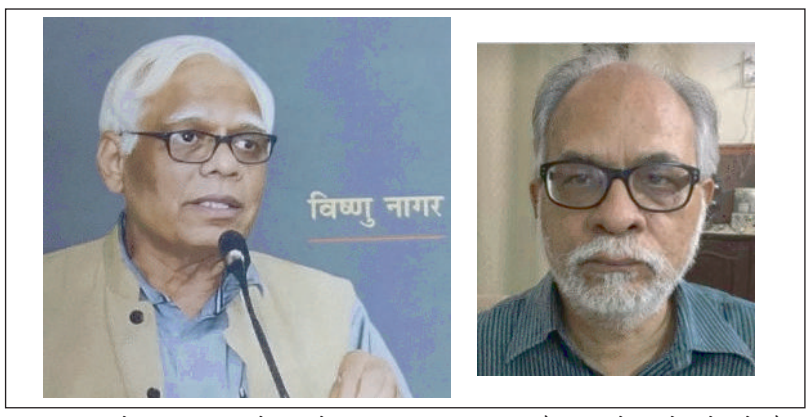

2. अब तो विश्व गुरु मान लो, भाई! : राजेंद्र शर्मा

दुनिया वालों, अब तो तुम्हें झख मारकर मानना पड़ेगा कि मोदी जी का भारत ही विश्व गुरु है ! और किसी के विश्व गुरु होने का तो पहले भी कोई चांस नहीं था। कोई वास्तविक कंपटीशन तो कभी था ही नहीं। और अब, जो नयी-नयी शिक्षाएं भारत दुनिया के सामने हर रोज पेश कर रहा है, उसके बाद मोदी जी के भारत के सामने कोई और विश्व गुरु बन जाए, इसका तो सवाल ही नहीं उठता है।

हां ! फिर भी अगर दुनिया बाकायदा मोदी जी को विश्व गुरु का आसन नहीं देती है, तो अपना ही नुकसान करेगी। मोदी जी का तो क्या जाता है, ये दुनिया वाले ही निगुरे रह जाएंगे। और निगुरे रह गए, तो अज्ञानी तो अपने आप रह ही जाएंगे। हमारे संतों ने तो पहले ही चेता दिया था -- बिन गुरु ज्ञान कहां से पावें !

अब प्लीज यह बचकानी मांग कोई न करे कि ये नयी-नयी शिक्षाएं क्या हैं, जिन्होंने विश्व गुरु के आसन पर मोदी जी के भारत का दावा एकदम मोहर लगाकर पक्का कर दिया है। नयी शिक्षाएं बताने से हमें हर्गिज इंकार नहीं है। कोई पूछेगा तो हम जरूर बताएंगे और छाती ठोककर बताएंगे। चीज ही बताने वाली है। बचकानी मांग सिर्फ इसलिए कहा कि नयी शिक्षाएं क्या हैं, कोई अगर उनका बखान करना भी चाहे, तो कर नहीं सकता है।

शिक्षाएं हैं ही इतनी सारी कि उनका पूरा बखान असंभव है। हरि अनंत है, सो उसकी कथा भी अनंत होगी ही। खैर ! दुनिया वालों के लिए पेश करते हैं, नमूने की दो-तीन नयी शिक्षाएं कि सारी दुनिया देखे और सीखे। और मोदी जी के भारत की उदारता देखिए, कोई फीस नहीं लगायी है, न देखने पर और न सीखने पर !

पहले, सब का साथ सब का विकास की सीख। जम्मू-कश्मीर नाम के प्रदेश में, जब सारे विभाजन पट गए और लोहे के रस्सों से प्रदेश को सीधे मोदी जी की राजगद्दी के साथ बांध दिया गया, तब जो विकास की सुनामी आयी, उसमें जम्मू के वैष्णो देवी ट्रस्ट के हिस्से में एक यूनिवर्सिटी आ गयी और यूनिवर्सिटी के हिस्से में पचास सीटों का एक मेडिकल कालेज आ गया। मेडिकल कॉलेज और अस्पताल चल भी पड़ा। मेडिकल कालेज का पहला साल ठीक-ठाक गुजर भी गया। पर जब दूसरे साल के एडमिशन का समय आया और नीट की अखिल भारतीय परीक्षा में मैरिट के आधार पर दाखिले के योग्य पाए गए छात्रों की सूची आयी, तो वैसे भी हमेशा खतरे में रहने वाला सनातन एकदम खतरे में पड़ गया। पचास में से कुल 7 उम्मीदवार हिंदू, जबकि 42 मुसलमान और एक सिख।

सत्य सनातन का अपमान, अब क्यों सहेगा भारत महान ! मोदी जी की पार्टी समेत, उनके विचार परिवार के तमाम संगठन आंदोलित हो उठे। विचार परिवार आंदोलित हुआ, तो मीडिया आंदोलित हुआ। मीडिया भी आंदोलित हुआ, तो सरकार विचलित हुई। डबल इंजन वाली सिचुएशन नहीं थी, सो पहले एलजी विचलित हुआ। एलजी विचलित हुआ, तो उसका कंपन दिल्ली के तख्त तक पहुंचा। पर एक समस्या थी। विचार परिवार की बोली में दिल्ली की सरकार कैसे कहे कि जिस कॉलेज के नाम में वैष्णो देवी लगा है, उसमें मुसलमान ज्यादा भर्ती नहीं हो सकते। यह तो एडमीशन जिहाद हो जाएगा। तब विश्व गुरु ने अपना कटोरा दांव लगाया। दिल्ली ने इशारा किया और मेडीकल कालेज ही वर्तमान से भूतपूर्व हो गया। जब बांस ही नहीं रहा, तो बांसुरी कैसे बजती। न सरकार ने एडमीशन की प्रक्रिया में हस्तक्षेप किया, न मुसलमानों के खिलाफ कोई एक्शन हुआ और सनातनियों का जीत का जश्न भी मन गया। माता वैष्णो देवी के नाम की पवित्रता की रक्षा भी हो गयी और सर्वधर्म समभाव को कोई शिकायत करने का भी मौका नहीं मिला। और यह सब हुआ सिर्फ एक मेडिकल कालेज की छोटी-सी कुर्बानी से ! है और कोई दुनिया को ऐसी अद्भुत सीख देने वाला !

उसके बाद, ज्ञान-विज्ञान को हमेशा आगे रखने की सीख। मध्य प्रदेश में जबलपुर में नानाजी देशमुख के नाम से एक वैटनरी साइंस यूनिवर्सिटी खुली। नानाजी संघ विचार परिवार के, तो यूनिवर्सिटी का ज्ञान-विज्ञान भी विचार परिवार का। उस पर गोरक्षा से प्राचीन संस्कृति तथा परंपरा तक की रक्षा का जोश। सनातनी वैज्ञानिकों ने शोध की एकदम नयी दिशा में क्रांतिकारी कदम बढ़ा दिए। गाय के गोबर और गोमूत्र से कैंसर की दवा बनाने का शोध। शोध के मैदान में विचार परिवार का पहलवान, तो विचार परिवार की सरकार मेहरबान। गोबर और गोमूत्र से कैंसर की दवा के शोध के लिए साढ़े तीन करोड़ रुपए का फंड मिल गया। शोध के क्रम में जहां पौने दो करोड़ रुपए गोबर और गोमूत्र पर खर्च किए गए, वहीं करीब पच्चीस लाख गाड़ी की खरीद पर और बाकी डेढ़ करोड़ गोवा के दौरों पर। शोधकर्ताओं ने गोवा के 23-24 दौरे किए। आखिर, गोवा के नाम में भी तो गो आता ही है। इस कनेक्शन पर गहन शोध जरूरी था, सो हुआ। क्या हुआ कि कैंसर की दवा नहीं बन पायी, पर गोबर, गोमूत्र के साथ गोवा का कनैक्शन तो पूरी तरह से साबित हो गया। है दुनिया में कोई और, जो ऐसे-ऐसे मोर्चों पर विज्ञान को आगे रखने की प्रेरणा दे सकता हो?

और हर स्ट्रोक को मास्टर स्ट्रोक बनाने की सीख ! नमस्ते ट्रंप का ईवेंट किया, मास्टर स्ट्रोक। ट्रंप-2.0 के लिए चुनाव प्रचार नहीं किया, वह भी मास्टर स्ट्रोक। ट्रंप ने बार-बार, बार-बार, व्यापार की गाजर दिखा कर ऑपरेशन सिंगूर रुकवाने का दावा किया और मोदी जी ने एक शब्द नहीं कहा, मास्टर स्ट्रोक। बाद में विदेश मंत्रालय के मंझले अधिकारियों से खंडन कराया, वह भी मास्टर स्ट्रोक। यह प्रचार कराया कि मोदी जी ट्रंप का फोन उठा ही नहीं रहे, मास्टर स्ट्रोक। अब ट्रेड डील अपनी अकड़ से बिगड़वाने के इल्जाम के जवाब में, ट्रंप को आठ बार फोन करने का ब्यौरा दे रहे हैं, वह भी मास्टर स्ट्रोक। गज़ा पर इस्राइल की तरफ ज्यादा, मास्टर स्ट्रोक। वेनेजुएला पर चुप, वह भी मास्टर स्ट्रोक। कहां मिलेगा कोई और ऐसा, मास्टर आफ मास्टर स्ट्रोक !

अंत में सिर्फ एक चिंता ! इससे पहले कि ट्रंप का ध्यान विश्व शांति नोबेल से हटकर, विश्व गुरु के आसन की ओर खिंच आए, मोदी जी को जल्दी से भारत के लिए विश्व गुरु का आसन नक्की करा लेना चाहिए। वर्ना कहीं ऐसा न हो कि ट्रंप विश्व गुरु की दावेदारी की लाइन में भी लग जाए और शांति के नोबेल की तरह, भारत को विश्व गुरु की लाइन से भी बाहर होना पड़ जाए। आखिर, पाकिस्तान के साथ लड़ाई यकायक रोकने के लिए, शांति का नोबेल तो हमारा भी बनता ही था।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार और 'लोकलहर' के संपादक हैं।)

इन्दौर ने देखा हिंदु जनजागृति व समाजिक एकता का रंग- हिन्दु सम्मेलन में

परिवहन विशेष न्यूज

इन्दौर। मध्यप्रदेश में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष पर 286 से ज्यादा बस्तियों में हुए हिंदू सम्मेलन। बहुत सी जगहों पर इस तरह समरसता का एकजुट माहौल देखने को मिला।

पाटीदार धर्मशाला खजराना में आयोजित सर्व हिंदू समाज सामाजिक समरसता का कार्यक्रम आयोजित किए गए । समाजिक कार्यकर्ता रामेश्वर चौहान ने बताया कि इस कार्यक्रम कि मुख्य वक्ता डॉ निशा जोशी व खजराना गणेश मंदिर के मुख्य पुजारी पंडित अशोक भट् थे थे इस विराट मुख्य सम्मेलन में गांव के वरिष्ठ व सामाजिक सर्वजाती के सामाजिक बंधु मातृशक्ति और सैकड़ो की संख्या में बच्चों ने उपस्थिति दर्ज करवाई कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य जात-पात की करो विदाई हम सभी भाई-भाई एक रहेंगे तो सेफ रहेंगे तथा समाज को संगठित होने के विचार विमर्श किए गए । वहीं मयूर नगर बस्ती मूसाखेडी इन्दौर में भी

हिंदू सम्मेलन और सभी हिंदू परिवारों सम्मेलन शामिल हुए मे भारत माता की आरती राष्ट्रगान हनुमान चालीसा और पर्यावरण पंच परिवर्तन पर नाटकीय बच्चों द्वारा सांस्कृतिक प्रोग्राम

आयोजन समिति द्वारा किए गए। वहीं तिलक नगर में बस्ती में जैन संत पुण्य सागर जी महाराज व ब्रह्मकुमारी संस्थान की दीदीयो के सानिध्य में शन्ति व एकता व प्रेम सौहार्द की बात की समाज के लोगों को हिंदु धर्म की जागरूकता के लिए नशें से दूर रहने की सलाह दी। पूरे शहर में कहीं फोटो प्रदर्शनी, संस्कृति का जागरण हेतु सभी हिन्दूओं में बच्चे बुजुर्ग महिला माता बहनें शामिल हुई। इन्दौर ने देखा हिंदु जनजागृति व सामाजिक एकता का रंग- हिन्दु सम्मेलन के मध्यम से पहली बार इतना वृहद व विराट सम्मेलन इन्दौर में हुआ।

विश्व हिन्दी दिवस पर सिंगापुर उच्चायोग ने डॉ.गोविन्द गुप्ता को किया सम्मानित

डॉ. शंभु पंवार

नईदिल्ली। सिंगापुर में भारतीय उच्चायोग एवं विश्व साहित्य सेवा संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में आभाषी पटल पर आयोजित विश्व हिन्दी दिवस समारोह में मोहमदी नगर के प्रख्यात साहित्यकार एवं कथाकुंज साहित्य सेवा परिषद के संस्थापक कवि गोविन्द गुप्ता को आमंत्रित किया गया।

कार्यक्रम में गोविंद गुप्ता ने हिन्दी भाषा, साहित्य और सांस्कृतिक चेतना पर अपने प्रभावशाली विचार रखे। गोविंद गुप्ता का चयन विश्व के चुनिंदा साहित्यकारों में किया गया,

जो क्षेत्र के लिए गौरव का विषय है।विश्व साहित्य सेवा संस्थान की अध्यक्ष अनुसूया जी के आमंत्रण पर आयोजित इस अंतरराष्ट्रीय समारोह में सिंगापुर स्थित भारतीय उच्चायोग के मंच से विभिन्न देशों के साहित्यकारों ने अपने विचार प्रस्तुत किए। साहित्यकार गोविन्द गुप्ता ने अपने वक्तव्य से न केवल मोहमदी नगर, बल्कि जनपद और प्रदेश का मान बढ़ाते हुए अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारत का प्रतिनिधित्व किया। उनके उल्लेखनीय योगदान और हिन्दी साहित्य के प्रति समर्पण को देखते हुए भारतीय उच्चायोग, सिंगापुर द्वारा उन्हें सम्मान पत्र प्रदान कर सम्मानित भी किया। इस उपलब्धि पर क्षेत्र के साहित्यकारों, बुद्धिजीवियों एवं गणमान्य नागरिकों ने गोविन्द गुप्ता को बधाई देते हुए इसे हिन्दी साहित्य के लिए प्रेरणादायी उपलब्धि बताया।

प्रक्रियाविहीन चुनाव पर उठे सवाल, नामनेर बाजार के दुकानदारों में गहराया अविश्वास

परिवहन विशेष न्यूज

आगरा। नामनेर बाजार कमेटी की हालिया बैठक और उसमें हुए अध्यक्ष पद के चुनाव को लेकर विवाद खड़ा हो गया है। बाजार के दुकानदारों ने चुनाव प्रक्रिया पर गंभीर सवाल उठाते हुए इसे एकतरफा और अलोकतांत्रिक करार दिया है।

दुकानदारों का आरोप है कि यह बैठक कुछ गिने-चुने लोगों द्वारा बुलाई गई, जिसमें बाजार से जुड़े कुल सदस्यों में से मात्र लगभग 25 प्रतिशत लोगों को ही शामिल किया गया। आरोप है कि इसी सीमित उपस्थिति वाली बैठक में बिना किसी पूर्व सूचना, निर्धारित नियमों और तय प्रक्रिया के अध्यक्ष पद का चुनाव कर लिया गया और एक व्यक्ति को अध्यक्ष घोषित कर दिया गया। दुकानदारों का कहना है कि न तो चुनाव की कोई स्पष्ट प्रक्रिया अपनाई गई और न ही सभी सदस्यों को अपनी राय रखने या मतदान करने का अवसर दिया गया।

दुकानदारों के अनुसार, इस तरह के प्रक्रियाविहीन और एकतरफा चुनाव से बाजार कमेटी की विश्वसनीयता पर सवाल खड़े हो गए हैं। इससे नामनेर बाजार के व्यापारियों में गहरा अविश्वास व्याप्त हो गया है और कमेटी के कार्यों को लेकर असंतोष बढ़ता जा रहा है। बाजार के दुकानदारों ने मांग की है कि भविष्य में कमेटी के सभी पदों के लिए नियमानुसार, पारदर्शी और सर्वसम्मति से चुनाव कराए जाएं। उन्होंने स्पष्ट किया कि चुनाव प्रक्रिया में सभी सदस्यों की भागीदारी सुनिश्चित की जाए, ताकि प्रत्येक दुकानदार को अपनी बात रखने और मतदान का अधिकार मिल सके।

दुकानदारों का कहना है कि केवल लोकतांत्रिक और पारदर्शी तरीके से चुनी गई कमेटी ही बाजार के हितों की प्रभावी ढंग से रक्षा कर सकती है और व्यापारियों का विश्वास जीत सकती है।

-बाजार के दुकानदारों ने मांग की है कि भविष्य में कमेटी के सभी पदों के लिए नियमानुसार, पारदर्शी और सर्वसम्मति से चुनाव कराए जाएं

- 'उन्होंने स्पष्ट किया कि चुनाव प्रक्रिया में सभी सदस्यों की भागीदारी सुनिश्चित की जाए, ताकि प्रत्येक दुकानदार को अपनी बात रखने और मतदान का अधिकार मिल सके।'

मकर संक्रान्ति

आया है पर्व अति विशेष लेकर ₹आनंद₹ शुभकामनाएं,
आदित्य का मकर राशि में हुआ प्रवेश बढ़ी संभावनाएं,
झूमेगी फसलें लहलहाएगें खेत भास्कर हुए उत्तरायण,
स्वीकारेंगे ईश अब सभी की भावों भरी सारी प्रार्थनाएं ।

बाल, युवा, वृद्ध, नर-नारी प्रसन्न हुआ है मनस प्रत्येक,
संपूर्ण भारत में प्रसिद्ध त्यौहार एक जिसके नाम अनेक,
लोहड़ी, पोंगल, बिहू, मकर संक्रान्ति उत्सव है मनहरण,
जनमानस के जीवन में करता ये खुशियों का अभिषेक ।

जीवन को भर देता दुआओं से यह महोत्सव है सुखकर,
तिल स्नान दान धर्म शुभ कर्मों को करने का सुअवसर,
प्रकृति को कर आभार नवीन खुशियों को देंगे आमंत्रण,
रंगीली पतंगों संग आसमान में हुड़दंग करेंगे हॉ जमकर ।

भारत बसता है हर एक घर में झलकती है छवि सुनहरी,
हर राज्य है ख़ुशहाल जहॉ और खिली-खिली हर नगरी,
विभिन्नताओं में अनेक कलाओं में भारतवासी विलक्षण,
विविधताओं में भी यहॉ धूम मची है एकता की गहरी ।

- मोनिका डागा
"आनंद", चेन्नई, तमिलनाडु

भविष्य इंतजार नहीं करेगा, न ही एसटीईएम में महिलाओं को ऐसा करना चाहिए

● विजय गर्ग

पिछले दशक में, वैश्विक निगमों, नीति निर्माताओं और शैक्षणिक संस्थानों ने यह घोषणा की है कि विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित (एसटीईएम) में लैंगिक संतुलन प्राप्त करना केवल एक बॉक्स नहीं है, बल्कि एक आर्थिक अनिवार्यता है। बजट आवंटित किए गए, पहल शुरू की गई, तथा प्रयोगशालाओं, अनुसंधान केंद्रों और तकनीकी स्टार्ट-अप्स में अधिक महिलाओं को लाने के लिए प्रतिबद्धताएं जताई गईं। फिर भी आज, उनमें से कई पश्चिमी कार्यक्रम चुपचाप लुप्त हो गए हैं, बजट में कटौती, राजनीतिक प्रतिरोध और बदलती प्राथमिकताओं के कारण।

इस महत्वपूर्ण क्षण में भारत एक चौराहे पर खड़ा है। सबसे तेजी से बढ़ते STEM पारिस्थितिकी तंत्रों में से एक और अवसरों के लिए भूखे लाखों युवा दिमाग के साथ, राष्ट्र वास्तव में समावेशी भविष्य बनाने का अवसर प्राप्त कर सकता है। लेकिन सबसे पहले, हमें तीन जिद्दी बाधाओं का सामना करना होगा जो हमारे आधे प्रतिभा पूल को किनारे कर देती हैं: स्वप्न अंतराल, अवसर अंतराल और नेतृत्व अंतराल।

स्वप्न अंतराल शोध से पता चलता है कि छह वर्ष की आयु तक, कई समाजों में लड़कियां इस विचार को आत्मसात करने लगती हैं कि तकनीकी क्षेत्र लड़कों के लिए होता है। यह प्रारंभिक पूर्वाग्रह, जिसे कुछ लोग 'स्वप्न अंतराल' कहते हैं, आकांक्षाओं, आत्मविश्वास और अंततः कैरियर विकल्पों को आकार देता है। भारत में, किसी भी अन्य देश की तुलना में इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अधिक महिलाओं को स्नातक करने के बावजूद, नामांकित एसटीईएम छात्रों में केवल 29% महिलाएं हैं, जबकि ब्रिटेन और अमेरिका में यह संख्या 50% से अधिक है।

छोटे शहरों में, रोबोटिक्स से मोहित एक लड़की को जल्दी ही ₹सेफ़र टुट₹ विषयों की ओर ले जाया जा सकता है। यहां तक कि उन शहरों में भी जहां संसाधनों की भरमार है, प्रयोगशालाओं और सी-सूटों में दिखाई देने वाले रोल मॉडल का अभाव पुराने रूढ़ियों को मजबूत करता है। जब तक प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों में सुलभ कोडिंग शिविरों, विज्ञान मेलों और मार्गदर्शन कार्यक्रमों के माध्यम से हस्तक्षेप शुरू नहीं हो जाता, तब तक अनगिनत प्रतिभाशाली लोग कभी भी वैज्ञानिक खोज या तकनीकी नवाचार का सपना देखने की हिम्मत नहीं कर पाएंगे।

अवसर अंतराल कक्षा की सीमा पार करते हुए, इन स्नातकों को एक कठोर वास्तविकता का सामना करना पड़ता है: भारत में विज्ञान और इंजीनियरिंग कार्यबल में केवल 14% महिलाएं हैं। कठोर नियुक्ति प्रथाओं, अचेतन पूर्वाग्रह और प्रायोजन कार्यक्रमों की कमी के कारण कई लोग पाइपलाइन से बाहर हो जाते हैं।

नौकरी के साक्षात्कार अक्सर तकनीकी ज्ञान से अधिक का परीक्षण करते हैं: वे नेतृत्व शैली, जोखिम की भूख और लंबे समय तक उपलब्धता के मानदंडों की जांच करते हैं जो पारिवारिक अपेक्षाओं और सामाजिक मानदंडों को संतुलित करने में कई महिलाओं को नुकसान पहुंचाते हैं। और जो लोग डीप-टेक स्टार्टअप शुरू करने का साहस करते हैं, उनके लिए संभावनाएं अभी भी अधिक हैं: भारत में उद्यम पूंजी का केवल 2.3% हिस्सा महिलाओं द्वारा संचालित उद्यमों की ओर जाता है।

कल्पना कीजिए कि एक जैव प्रौद्योगिकी नवप्रवर्तक जिसने एक अभूतपूर्व, टिकाऊ प्रक्रिया विकसित की है, फिर भी उसे संदेह करने वाले निवेशकों के सामने अपनी तकनीकी योग्यता को लगातार उचित ठहराना होगा। कई लोग अपने उद्यमशीलता के सपनों को त्याग देते हैं या अनिच्छा से धन जुटाने के लिए पुरुष सह-संस्थापकों के साथ साझेदारी करते हैं। यह सीमित क्षमताओं के कारण नहीं है, बल्कि पहुंच की विफलता के कारण है।

कार्यबल में परिवर्तन के दौरान, महिला वैज्ञानिक और इंजीनियर अक्सर एक अदृश्य सीमा तक पहुंच जाती हैं। पूरे भारत में अग्रणी प्रौद्योगिकी कंपनियों में, वरिष्ठ प्रबंधन पदों पर 15% से भी कम महिलाएं कार्यरत हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, स्वच्छ ऊर्जा और उन्नत सामग्रियों जैसे उभरते क्षेत्रों में महिलाओं का प्रतिनिधित्व और भी कम है।

पदोन्नति पैनल पारंपरिक रूप से मर्दाना मानदंडों के साथ जुड़ी आक्रामक, जोखिम लेने वाली शैलियों को पुरस्कृत करते रहते हैं, जबकि सहयोगात्मक, सहानुभूतिपूर्ण नेतृत्व गुण अक्सर अनजान रह जाते हैं। महत्वपूर्ण परियोजनाएं और नेतृत्व-प्रशिक्षण स्लॉट अनुपातहीन रूप से पुरुष सहकर्मियों को दिए जाते हैं, जिससे महिला पेशेवर मध्यम स्तर के पदों पर अटकी रहती हैं। परिणामस्वरूप, उत्पादों और नीतियों की कल्पना विविध दृष्टिकोणों के बिना ही की जाती है, जो उन्हें अधिक समावेशी और प्रभावी बना सकते हैं।

आगे का रास्ता पश्चिमी अर्थव्यवस्थाओं में समावेशन की कमी के कारण, भारत को सबसे अधिक लाभ और सबसे अधिक हानि हुई है। हमारी सभी प्रतिभाओं की पूरी क्षमता का लाभ उठाने से स्वास्थ्य सेवा वितरण, टिकाऊ ऊर्जा और अगली पीढ़ी के कंप्यूटिंग में सफलता मिल सकती है। ऐसे क्षेत्र जहां दुनिया को समाधानों की सख्त जरूरत है।

इन अंतरालों को पाटने के लिए हमें कई मोर्चों पर काम करना होगा प्रारंभिक सहभागिताः प्राथमिक विद्यालय से लेकर अनुभवात्मक विज्ञान और प्रौद्योगिकी कार्यक्रमों तक पहुंच का विस्तार करें, विशेष रूप से वंचित क्षेत्रों में। कोडिंग कार्यशालाएं, मोबाइल लैब और शैक्षिक गैर सरकारी संगठनों के साथ साझेदारी से जिज्ञासा जागृत हो सकती है और रूढ़िवादिता को जड़ जमाए जाने से पहले ही खत्म कर दिया जा सकता है। लक्षित समर्थनः डीप-टेक, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और क्लीन-टेक में महिलाओं के नेतृत्व वाले अनुसंधान और स्टार्टअप्स के लिए समर्पित वित्तपोषण धाराएं स्थापित करना। इनक्यूबेटर और एक्सेलरेटर कार्यक्रमों को स्लॉट आरक्षित करने चाहिए तथा प्रस्तावों का निष्पक्ष मूल्यांकन सुनिश्चित करने के लिए विशेष मार्गदर्शन प्रदान करना चाहिए। समावेशी कार्य संस्कृतिः पारदर्शी नियुक्ति नीतियों को लागू करें, प्रदर्शन समीक्षा में विविधता मीट्रिक की आवश्यकता हो, तथा लचीली कार्य व्यवस्था प्रदान करें। प्रबंधकों के लिए अचेतन पूर्वाग्रह और समावेशी नेतृत्व पर प्रशिक्षण सभी संगठनों में अनिवार्य हो जाना चाहिए।

प्रबंधकों के लिए अचेतन पूर्वाग्रह और समावेशी नेतृत्व पर प्रशिक्षण सभी संगठनों में अनिवार्य हो जाना चाहिए। नेतृत्व विकासः महत्वपूर्ण परियोजनाओं के माध्यम से कार्यकारी कार्यक्रमों और रोटेशन के लिए उच्च-संभावित महिला पेशेवरों को प्रायोजित करना। रणनीतिक निर्णय लेने में महिलाओं की आवाज को बढ़ाने के लिए कंपनियों के भीतर सहकर्मी नेटवर्क और वकालत समूह बनाएं। दृश्यमान रोल मॉडलः अगली पीढ़ी को प्रेरित करने के लिए मीडिया, उद्योग मंचों और शैक्षणिक सम्मेलनों के माध्यम से सफलताओं का जश्न मनाएं और अग्रणी वैज्ञानिकों, उद्यमियों और इंजीनियरों की कहानियों को बढ़ाएं।

नशे का जाल

डॉ विजय गर्ग

आमतौर पर नशा न केवल शारीरिक स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाता है, बल्कि मानसिक और सामाजिक जीवन को भी प्रभावित करता है। यह आदत कब लत में तब्दील हो जाए, पता नहीं चलता। आदत को एक सकारात्मक अवधारणा के तौर पर देखा जाता है, जबकि लत या व्यसन एक नकारात्मक अवधारणा है। यह एक मनोविकार है, क्योंकि जिस नशे के सेवन की लत लग जाए, उसके बिना जीवन की निरंतरता असंभव दिखाई देती है। आदत बदलना संभवतः आसान हो सकता है, पर लत से पीछा छुड़ाना बहुत मुश्किल लगता है। चिकित्सक भी मानते हैं कि नशीले पदार्थों का सेवन अनेक बीमारियों की जड़ है ।

हालांकि, देखा जाए तो नशीले पदार्थों का सेवन कहीं न कहीं हमारी सांस्कृतिक व्यवस्था का हिस्सा रहा है। ग्रामीण परिवेश में हुक्का, बीड़ी और तंबाकू इत्यादि का सेवन लोग इस तर्क पर करते हैं, ताकि अधिक श्रम कर सकें और नींद की उपेक्षा कर सकें। यही नहीं, मनोरंजन के लिए भी इनका उपयोग होता था । इसका एक पक्ष यह भी था वे लोग खुद तो इनका सेवन करते थे, पर युवा पीढ़ी को इनसे दूर रहने की नसीहत और हिदायत भी देते थे, क्योंकि वे स्वयं भी मानते थे कि इन पदार्थों का सेवन स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। इसी तरह, एक समय 'वाइन' (शराब) पीना प्रतिष्ठा, पश्चिमी जीवन शैली और आधुनिकीकरण के अनुकरण का प्रतीक बन गया तथा धीरे-धीरे कुछ लोगों की जिंदगी में इसने लत का रूप ले लिया। वहीं सामंतवाद में नशीले पदार्थों का सेवन राजशाही का प्रतीक था और अब पूंजीवाद के दौर में इसने एक बाजार का रूप ले लिया ।

नशीले पदार्थों के सेवन को तीन दृष्टिकोणों के आधार पर समझने का प्रयास किया जा सकता है। पहला, नशे का सेवन एक चलन बन गया है, कुछ जगह इसे प्रतिष्ठा का प्रतीक माना जाता है, बच्चे या किशोर खुद को परिपक्व दिखाने के लिए इनका सेवन शुरू कर देते हैं। दूसरा, मित्र समूहों के दबाव में नशे का सेवन करना । कुछ लोग इस तरह के दबाव में आकर या घर के किसी सदस्य को नशा करते देखकर इन आदतों को अपना लेते हैं। तीसरा, राजनीतिक- अर्थवाद के रूप में नशे का सेवन करना । इस दृष्टि से देखें तो नशीले पदार्थों के बाजार से राजस्व की प्राप्ति होती है, जो किसी भी समाज के विकास के लिए आवश्यक है। दूसरी तरफ इसके सेवन से श्रम शक्ति कमजोर होती है, मानव पूंजी नष्ट होती है और उत्पादकता का दायरा कम होता है। यहां यह सवाल विचारणीय है कि नुकसान किसमें ज्यादा है ?

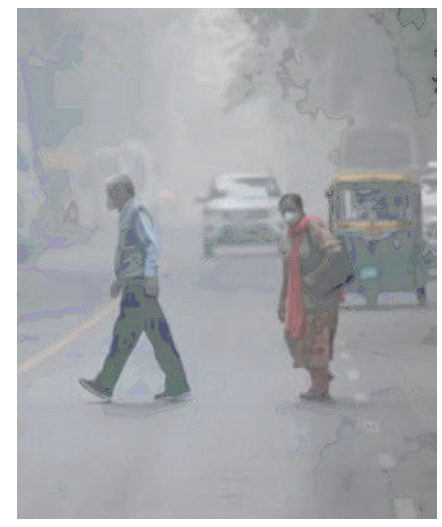

इसका एक पहलू यह भी हो सकता है कि नशे का वैश्विक बाजार युवा शक्ति को निर्बल करने का अंतरराष्ट्रीय षड्यंत्र हो । इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि कोई देश अगर कमजोर है, तो वह दूसरे देश को हराने के लिए या उसकी अर्थव्यवस्था को नष्ट करने के लिए या उस समाज में बिखराव लाने के लिए नशीले पदार्थों का बाजार विकसित कर सकता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक नई रपट में बताया गया है कि प्रति वर्ष 26 लाख मौतें शराब के सेवन के कारण होती हैं, जो कुल मौतों का 4.7 फीसद है। 15-29 वर्ष की आयु वर्ग के लोगों में धूम्रपान की लत भी बढ़ी है, ग्रामीण क्षेत्रों में यह वृद्धि 26 फीसद है, जबकि शहरों में 68 फीसद है। हाल ही में सामने आए टोरंटो विश्वविद्यालय के एक अध्ययन के अनुसार, भारत में 18 साल की उम्र में धूम्रपान करने वाले पुरुषों की संख्या में 36 फीसद की वृद्धि हुई है । रपट में कहा गया है कि नशीले पदार्थों का सेवन व्यक्तिगत स्वास्थ्य को गंभीर रूप से नुकसान पहुंचाता है। हर साल इससे लाखों ऐसी मौतें होती हैं, जिन्हें रोका जा सकता है। इससे दुर्घटनाओं और हिंसा का खतरा भी बढ़ जाता है।

इस पर गंभीरता से विचार करने की जरूरत है कि नशे के नुकसानों से परिचित होने के बाद भी ये आंकड़े क्यों बढ़ते जा रहे हैं? इसके पीछे कई कारण हो सकते हैं: परिवार एवं अनौपचारिक समूहों के नियंत्रण का अभाव, नशीले पदार्थों की आसानी से उपलब्धता, मित्र समूहों की भूमिका, एकाकीपन को समाप्त करने का माध्यम, तनाव, अस्थिरता, असुरक्षा, अलगाव, भय, असफलता, कुंठा, आपराधिक प्रवृत्ति और झूठी शान का दिखावा। इसके अलावा नशीले पदार्थों के सेवन को प्रोत्साहित करने वाली गतिविधियां भी इसके लिए जिम्मेदार हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रपट के अनुसार, 76 फीसद फिल्मों में तंबाकू एवं 72 फीसद फिल्मों में शराब का सेवन धड़ल्ले से दिखाया जाता है। वर्ष 2005 में इस पर प्रतिबंध लगाया गया था, मगर वर्ष 2009 में अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर इस प्रतिबंध को हटा दिया गया और अब केवल लिखित

चेतावनी दिखाई जाती है। इसी तरह, वर्ष 2008 में सार्वजनिक स्थानों पर धूम्रपान पर प्रतिबंध लगाया गया, वर्ष 2004 में स्कूलों से लगभग 300 मीटर के दायरे में तंबाकू एवं गुटखे की बिक्री और सेवन पर पाबंदी लगाई गई थी। इसके बावजूद भारत नशाखोरी में विश्व में दूसरे स्थान पर है।

नशीले पदार्थों के सेवन का प्रभाव केवल शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य पर नहीं पड़ता है, बल्कि शिक्षा, परिवार, रोजगार, व्यक्तित्व विकास, कानून व्यवस्था, अनुशासन और अर्थव्यवस्था पर भी पड़ता है। समाज पर इनके प्रभावों पर गौर करें तो इसमें संबंधित व्यक्ति का अपने आर्थिक दायित्वों को पूरा न कर पाना, उधार लेना, आपराधिक गतिविधियों में संलग्न होना, सामाजिक मूल्यों एवं आत्म नियंत्रण में कमी आना, पारिवारिक संघर्षों में वृद्धि और सड़क दुर्घटनाओं का बढ़ना आदि शामिल हैं। यह कैसा विरोधाभास है कि राज्य का एक विभाग (आबकारी विभाग) तो इनसे होने वाली राजस्व प्राप्ति के लिए काम करता है और दूसरा विभाग (मद्यनिषेध विभाग) नशा मुक्ति अभियानों, विज्ञापनों पर करोड़ों रुपए खर्च करता है ? सोचना यह है कि राजस्व से होने वाला लाभ ज्यादा है या विज्ञापनों एवं अभियानों पर होने वाला खर्च ? किसी भी देश का यह मूल दायित्व है कि वह अपने नागरिकों को शिष्ट, सुरक्षित, स्वस्थ और विकासोन्मुखी जीवन पद्धति प्रदान करे। इसलिए राजस्व हानि की परवाह किए बिना नशा करने के विभिन्न साधनों के प्रयोग पर नियंत्रण आवश्यक हो जाता है।

संपादकीय
चिंतन-मनन

दिल्ली सरकार, ट्रांसपोर्ट डिपार्टमेंट, सीएक्यूएम और नगर निगम की जनता को सौगात, सड़कों पर जाम, असुरक्षा और प्रदूषण

जनता की व्यथा और समाधान की राह

संजय कुमार बाठला, परिवहन एवं पर्यावरण नीति विशेषज्ञ

दिल्ली की सड़कें आजकल जाम, असुरक्षा और प्रदूषण की त्रासदी का शिकार हैं। लाखों लोग प्रतिदिन सार्वजनिक परिवहन पर निर्भर हैं, लेकिन उन्हें समय पर बस या मेट्रो नहीं मिलती, सड़कें जाम से भरी रहती हैं और जहरीली हवा सांसों को जकड़ लेती है।

यह समस्या केवल यातायात की नहीं, बल्कि जन स्वास्थ्य और आर्थिक हानि की भी है।

आखिर इस भंवर से निकलने का रास्ता क्या है और किसकी जिम्मेदारी है? आइए, कारणों, नुकसानों और समाधानों पर नजर डालें।

मुख्य कारणः

जाम, असुरक्षा और प्रदूषण के जड़ें

दिल्ली की सड़कों पर जाम का प्रमुख कारण अवैध पार्किंग, पुरानी बसों की भीड़भाड़, ई-रिक्शा और ऑटो की अनियमितता तथा ट्रैफिक सिग्नल की खराबी है। दिल्ली ट्रांसपोर्ट डिपार्टमेंट के आंकड़ों के अनुसार, 70% जाम अनियमित वाहनों से होता है।

सार्वजनिक सवारी सेवा में देरी का कारण अपर्याप्त बस फ्लीट (केवल 7,000 बसें जबकि जरूरत 10,000 की) और डेंगू व प्रदूषण से प्रभावित शेड्यूल है।

वहीं, प्रदूषण के लिए डीजल बसें, पुराने वाहन और निर्माण धूल जिम्मेदार हैं —सीएक्यूएम के अनुसार, दिल्ली का एQI अक्सर 400 से ऊपर रहता है।

नुकसान और दुष्प्रभावः जनता की चुपचाप पीड़ाये समस्याएं केवल असुविधा नहीं, बल्कि गंभीर हानि पहुंचाती हैं। जाम से प्रतिदिन 2-3 घंटे बर्बाद होते हैं, जिससे आर्थिक नुकसान 50,000 करोड़ रुपये सालाना का है (एनसीआरटीसी रिपोर्ट)। कार्यकर्ता देर पहुंचते हैं, छात्र पढ़ाई छोड़ते हैं।

असुरक्षा से महिलाओं और बुजुर्गों पर खतरा मंडराता है — पिछले साल 500 से अधिक ट्रैफिक दुर्घटनाओं में 1,200 मौतें हुईं।

प्रदूषण से फेफड़ों की बीमारियां, अस्थमा और कैंसर बढ़ रहे हैं; बच्चे और बुजुर्ग सबसे प्रभावित।

कुल मिलाकर, यह जन स्वास्थ्य संकट पैदा कर रहा है।

जनहित समाधानः व्यावहारिक कदम जनकल्याण के लिए

समाधान संभव है यदि इच्छाशक्ति हो।

* प्रथम, स्मार्ट ट्रैफिक सिस्टम अपनाएं—एआई आधारित सिग्नल और कैमरा से जाम 30% कम हो सकता है, जैसे बेंगलुरु मॉडल।

* दूसरा, सार्वजनिक सवारी मजबूत करें—10,000 इलेक्ट्रिक बसें जोड़ें, ऐप से रीयल-टाइम ट्रैकिंग दें और ई-रिक्शा जोन बनाएं।

* तीसरा, प्रदूषण नियंत्रण — ग्रेडेड रिस्पॉन्स एक्शन प्लान (GRAP) को सख्ती से लागू करें, पुराने डीजल वाहनों पर प्रतिबंध लगाएं और ग्रीन कॉरिडोर विकसित करें।

* चौथा, जन जागरूकता — आरटीआई से पारदर्शिता लाएं, नागरिक फोरम बनाएं।

ये कदम लागू होने पर दिल्ली जाम - मुक्त, सुरक्षित और स्वच्छ हवा वाली बनेगी।

जिम्मेदारी किसकी? कर्तव्य की अनदेखी से जनता परेशान इस सबकी जिम्मेदारी दिल्ली सरकार, ट्रांसपोर्ट डिपार्टमेंट, सीएक्यूएम और नगर निगम की है। सुप्रीम कोर्ट के आदेशों के बावजूद ई-वाहन नीति, फिटनेस टेस्ट और GRAP का पालन ढीला है। केंद्र सरकार को भी राष्ट्रीय शहरी परिवहन नीति को मजबूत करना होगा।

जनता को भी कर्तव्य निभाना है—अनियमित वाहन न चलाएं, कार पूलिंग अपनाएं।

लेकिन मूल रूप से अधिकारियों का कर्तव्य है: समयबद्ध बस सेवा, ट्रैफिक नियमों का पालन और प्रदूषण नियंत्रण। यदि ये कर्तव्य न निभें, तो जनता की परेशानी बनी रहेगी। जनहित में तत्काल कार्रवाई जरूरी है !

कौशल को न पहचानने की लागत

वर्ष 2025 ने भारत के लिए एक कठोर सत्य की पुष्टि कर दी है: वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता की दौड़ केवल कृत्रिम बुद्धिमत्ता से नहीं जीती जाएगी, बल्कि यह इस बात पर निर्भर करेगी कि भारतीय श्रमिक कितनी तेजी से इसके अनुकूल हो सकते हैं। जबकि बहस अक्सर एआई द्वारा नौकरियों को बदलने पर केंद्रित होती है

गहरी बाधा कहीं और है - नौकरियां हमारी शिक्षा, प्रमाणन और नियुक्ति प्रणालियों की तुलना में अधिक तेजी से बदल रही हैं। पीडब्ल्यूसी के अनुसार, वैश्विक स्तर पर एआई से प्रभावित भूमिकाओं के लिए आवश्यक कौशल कम जोखिम वाली नौकरियों की तुलना में 66 प्रतिशत तेजी से बदल रहे हैं। भारत, अपनी विशाल और युवा कार्यबल के साथ, विशेष रूप से इस मंदी का शिकार है। डिग्री, जो कभी रोजगार के लिए लगभग स्थायी पासपोर्ट थी, श्रम बाजार में अपनी सिग्नलिंग शक्ति खो रही है, जहां प्रासंगिकता अब केवल दो से तीन साल की शेल्फ लाइफ रखती है।

भारत में प्रतिवर्ष 1.5 मिलियन से अधिक इंजीनियरिंग स्नातक होते हैं, फिर भी उद्योग सर्वेक्षणों से लगातार पता चलता है कि आधे से कम लोग उभरती डिजिटल भूमिकाओं में तुरंत रोजगार पाने के लिए उपयुक्त हैं। यह बुद्धिमत्ता या प्रयास की विफलता नहीं है - यह लोगों द्वारा सीखी गई बातों, नियोक्ताओं को क्या चाहिए और कौशल को औपचारिक रूप से कैसे मान्यता दी जाती है, के बीच संरेखण में विफलता है। उत्साहजनक बात यह है कि भारतीय श्रमिकों ने पहले ही इस बदलाव को महसूस कर लिया है।

भारत में मूक शिक्षा की तेजी

भारत में स्व-संचालित, ऑनलाइन और मॉड्यूलर शिक्षा में अभूतपूर्व वृद्धि देखी जा रही है। एआई, डेटा विज्ञान, साइबर सुरक्षा और क्लाउड कंप्यूटिंग में नामांकन को कोर्सेरा, स्वायम और निजी कौशल प्रदाताओं जैसे प्लेटफार्मों पर तेजी से बढ़ा है। उद्योग के अनुमानों के अनुसार, भारत अब ऑनलाइन व्यावसायिक शिक्षा के लिए शीर्ष तीन वैश्विक बाजारों में से एक है, जहां लाखों शिक्षार्थी पूर्णकालिक नौकरियों के साथ-साथ अपने कौशल को भी उन्नत कर रहे हैं।

यह व्यवहार में बड़े बदलाव का संकेत है। सीखना अब उपचारात्मक नहीं रहा है - नौकरी छूट जाने के बाद किया जाता है - बल्कि यह प्रत्याशापूर्ण है, जो अप्रचलित होने के डर और गतिशीलता के वादे से प्रेरित है। सरकार द्वारा संचालित स्किल इंडिया मिशन, पीएमकेवीवाई और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने आजीवन सीखने और व्यावसायिक गतिशीलता को वैध बनाकर आधार तैयार किया है।

फिर भी एक विरोधाभास बना हुआ है। जबकि भारतीय पहले से कहीं अधिक तेजी से कौशल प्राप्त कर रहे हैं, नियोक्ता अभी भी क्षमता का आकलन करने के लिए पुराने मार्करों - डिग्री, कॉलेज ब्रांड और वर्षों के अनुभव पर निर्भर करते हैं। इसका परिणाम व्यापक रूप से कौशल का कम उपयोग, प्रतिभा में बेमेलता और धीमी उत्पादकता वृद्धि है।

विश्व आर्थिक मंच की रिपोर्ट 'रोजगार का भविष्य 2025₹ में अनुमान लगाया गया है कि भारत में लगभग 44-46 प्रतिशत मुख्य नौकरी कौशल 2030 तक बदल जाएंगे। पारंपरिक प्रमाण-पत्र कभी भी ऐसी गति के लिए डिज़ाइन नहीं किए गए थे। परिणामस्वरूप, श्रमिकों के पास अक्सर वर्तमान, नौकरी-तैयार कौशल होते हैं जो भर्तीकर्ताओं और संस्थानों को दिखाई नहीं देते।

कौशल को न पहचानने की लागत

भारत में श्रम बाजार की अक्षमताएं केवल व्यक्तिगत समस्याएं नहीं हैं; वे समष्टि आर्थिक बाधाएं भी हैं। वैश्विक आईटी शक्ति होने के बावजूद, भारत को एआई इंजीनियरों, साइबर सुरक्षा विश्लेषकों, अर्धचालक तकनीशियनों और हरित ऊर्जा विशेषज्ञों की लगातार कमी का सामना करना पड़ रहा है। साथ ही, लाखों प्रशिक्षित युवा बेरोजगार बने हुए हैं या कम उत्पादकता वाली भूमिकाओं में फंसे हुए हैं। इस बेमेल से भारत की वृद्धि, नवाचार और वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता पर असर पड़ता है।

लिंक्डइन की आर्थिक ग्राफ अंतर्दृष्टि से पता चलता है कि बेहतर कौशल पहचान अकेले कार्यबल में पहले से मौजूद अव्यक्त क्षमताओं को अनलॉक करके प्रभावी एआई प्रतिभा पूल का कई गुना विस्तार कर सकती है। 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने की आकांक्षा रखने वाले देश के लिए यह एक आसान काम है।

भारत ने डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढांचे में भारी निवेश किया है - आधार, डिजीलॉकर, यूपीआई और डिजिटल पब्लिक स्टैक। फिर भी कौशल प्रमाणपत्रों, निजी प्लेटफार्मों, प्रशिक्षण केंद्रों और अनौपचारिक अनुभव में एनालॉग-विभाजित बने हुए हैं, तथा उनका कोई एकीकृत, सत्यापन योग्य रिकॉर्ड नहीं है।

यह अंतर तब महत्वपूर्ण हो जाता है जब भारत उच्च विकास वाले क्षेत्रों में खुद को स्थापित करता है: एआई, अर्धचालक विनिर्माण, नवीकरणीय ऊर्जा, रक्षा उत्पादन, स्वास्थ्य प्रौद्योगिकी और डिजिटल सार्वजनिक सेवाएं। पोर्टेबल और विश्वसनीय कौशल की मान्यता के बिना, विभिन्न क्षेत्रों और राज्यों में श्रम गतिशीलता बाधित रहेगी।

भारतीय कौशल पासपोर्ट की ओर

इसका समाधान डिग्री को बदलने में नहीं, बल्कि उन्हें राष्ट्रीय डिजिटल कौशल पासपोर्ट के साथ पूरक बनाने में निहित है - जो किसी व्यक्ति की क्षमताओं का एक सत्यापित, निरंतर अद्यतन रिकॉर्ड है।

ऐसी प्रणाली विश्वविद्यालयों, ऑनलाइन प्लेटफार्मों, प्रशिक्षुता, उद्योग प्रशिक्षण और कार्यस्थल पर अनुभव के माध्यम से प्राप्त कौशल का दस्तावेजीकरण करेगी। डिजीलॉकर और आधार (गोपनीयता सुरक्षा उपायों के साथ) से जुड़ा हुआ, यह नियोक्ताओं को अप्रत्यक्ष रूप से अनुमान लगाने के बजाय वास्तविक समय में दक्षताओं का सत्यापन करने की अनुमति दे सकता है।

भारत में पहले से ही आंशिक निर्माण खंड मौजूद हैं। राष्ट्रीय कौशल योग्यता ढांचा (एनएसक्यूएफ), क्षेत्र कौशल परिषदें और डिजिटल क्रेडेंशियल पहल मौजूद हैं - लेकिन वे अलग-अलग क्षेत्रों में काम करते हैं। जो चीज गायब है वह है एकीकरण और नियोक्ता द्वारा अपनाया जाना।

कौशल पासपोर्ट से तेजी से नियुक्ति, सुचारू कैरियर परिवर्तन और कर्मचारियों के बीच एमई में जाने का अधिक आत्मविश्वास संभव होगा

इससे कम्पनियों को वंशावली के बजाय प्रदर्शित क्षमता के आधार पर नियुक्ति करने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा - जो भारत जैसे विविध देश में एक आवश्यक बदलाव है।

-डॉ विजय गर्ग

नच्च वे जट्टा लोहड़ी आई वे ‘

नई फसल आने की अग्रिम खुशी में पौष महीने के अंतिम दिन, सूर्य के डूबने के बाद बाद मकर संक्रांति से पहली रात 13 जनवरी को पूरा पंजाब ही नहीं वरन उत्तर भारत लोहड़ी की मस्ती में डूब नाचता, भंगड़ा, गिद्धा डालता है। अपना हरा भरा खेत देख कर पंजाबी किसान जब झूम के नाचता है तो पता चल जाता है कि लोहड़ी आ गई है।

अंग्रेजी में कहें तो एक लोहड़ी एक्रॉस्टिक शब्द है, जिसमें ‘ल’ (लकड़ी) ‘ओह’ (गोहा या गोसा या सूखे उपले व ‘ड़ी’ रेवड़ी को जोड़कर बना है जो लोहड़ी पर बंटने वाले प्रसाद के अभिन्न अंग व लोहड़ी के प्रतीक हैं। इस दिन पूरा उत्तर भारत कैंप फायर के मूड़ में होता है। इसमें दो राय नहीं कि गरीब वर्ग के लिए पूस-माघ की कड़कड़ाती सर्दी से बचने के लिए आग सहारा होती है शायद यही व्यावहारिकता लोहड़ी को मनाने का सबसे बड़ा कारण देती है।

ऐसे मनती है लोहड़ी

उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल में खिचड़वार और दक्षिण भारत के पोंगल पर भी--बेटियों को भेंट जाती है। कभी लोहड़ी से कई दिन पहले ही लोहड़ी के लोकगीत गाकर लकड़ी और उपले इकट्ठे किए जाते थे। इससे चौराहे या मुहल्ले के खुले स्थान पर आग जलाकर लोग अग्नि के चारों घर के कामकाज से निपटकर हर परिवार अग्नि की परिक्रमा करता है। तिल की रेवड़ी और मक्की के भुने दाने जिन्हे फुल्ली भी कहा जाता है अग्नि की भेंट किए जाते हैं तथा ये ही चीजें प्रसाद के रूप में भी बाँटी जाती हैं। घर लौटते समय लोहड़ी में से दो चार दहकते कोयले, प्रसाद के रूप में, घर पर लाने की प्रथा भी है।

जिन परिवारों में लड़के का विवाह होता है अथवा जिन्हें पुत्र प्राप्ति होती है, उनसे पैसे लेकर मुहल्ले या गाँव भर में बच्चे रेवड़ी बाँटते हैं। लोहड़ी के दिन बच्चे बाजारों में दुकानदारों तथा राहगीरों से ‘मोहमाया’ या ‘महामाई’ (लोहड़ी का ही दूसरा नाम) के पैसे माँगते हैं, इनसे लकड़ी एवं रेवड़ी खरीदकर सामूहिक लोहड़ी में डालते हैं।

यूं तो लोहड़ी का त्यौहार मुख्यतः पंजाबियों तथा हरियाणवी लोगों का प्रमुख त्यौहार माना जाता है पर अब यह पंजाब व हरियाणा की सीमाओं से बाहर निकल उत्तरप्रदेश, उत्तराखंड दिल्ली, जम्मू कश्मीर और हिमाचल सहित हर उस राज्य में पहंच गया है जहां पंजाबी व सिख रहने लगे हैं।

कथा लोहड़ी की

लोहड़ी से कई कथागाथाएँ जुडी. हैं। दक्ष प्रजापति की पुत्री सती के योगाग्नि-दहन की याद में यह अग्नि जलाई जाती है। इस अवसर पर विवाहिता पुत्रियों को माँ के घर से सिंधारा (वस्त्र, मिठाई, रेवड़ी, फलादि भेजे जाते हैं। यज्ञ के समय अपने जामाता शिव का भाग न निकालने का दक्ष प्रजापति का प्रायश्चित्त भी इसमें शामिल है।

लोहड़ी का नायक दुल्ला भट्टी है जो एक विद्रोही था और उसके वंशज भट्टी राजपूत थे और पिंडी भट्टियों के शासक थे जो की संदल बार पकिस्तान में स्थित था। कुछ लोग कहते हैं कि दुल्ला भट्टी मुग़ल शासक अकबर के समय में पंजाब में रहता था। उसे पंजाब के नायक की उपाधि से सम्मानित किया गया था! उस समय संदल बार नाम के स्थान पर लड़कियों को गुलामी के लिए बलपूर्वक अमीर लोगों को बेच जाता था जिसे दुल्ला भट्टी ने एक योजना के तहत लड़कियों को मुक्त ही नहीं करवाया अपितु उनकी शादी हिन्दू लडको से करवाई और उनके शादी के सभी व्यवस्था भी करवाई।

लोहडी के गीतः

लोहड़ी पर दुल्ला भट्टी को सराहने के लिए उसकी प्रशंसा में गीत गाए जाते हैं -

इस अवसर पर गाया जाने वाला ‘दुल्ला भट्टी सुंदर-मुंदरिए हो., तेरा कौण विचारा

-डॉ0 घनश्याम बादल

लोकजीवन, कृषि-संस्कृति और सामूहिक चेतना का पर्व है लोहड़ी!

लोहड़ी वैसे तो पूरे उत्तर भारत में मनाया जाता है, लेकिन यह मुख्य रूप से पंजाब की जीवंत संस्कृति और कृषि प्रधान जीवन का दर्पण है।पंजाब कृषि प्रधान राज्य है और लोहड़ी का सीधा संबंध किसान जीवन से है। यह वह समय होता है जब रबी की फसल, विशेषकर गेहूं, खेतों में अच्छी तरह बढ़ रही होती है। कड़ाके की ठंड के बावजूद किसान के श्रम का फल आकार लेने लगता है। लोहड़ी किसानों के लिए परिश्रम के सम्मान और भविष्य की समृद्धि की कामना का पर्व है। यह पर्व प्रकृति, भूमि, सूर्य और अग्नि के प्रति आभार प्रकट करने का माध्यम बनता है।देखा जाए तो यह पर्व एक प्रकार से प्रकृति और संस्कृति का संगम है।प्रतिवर्ष 13 जनवरी को मनाया जाने वाला यह पर्व शीत ऋतु की विदाई और सूर्य के उत्तरायण होने का स्वागत करता है। लोहड़ी पौष के अंतिम दिन, सूर्यास्त के बाद (माघ संक्रांति से पहली रात) यह पर्व मनाया जाता है। दूसरे शब्दों में कहें तो लोहड़ी केवल ऋतु-पर्व नहीं, बल्कि उससे जुड़ी पौराणिक स्मृतियों और पारिवारिक संस्कारों का उत्सव है। अग्नि प्रज्वलन को सती के योगाग्नि-दहन की प्रतीकात्मक स्मृति माना जाता है, वहीं विवाहित बेटियों को मायके से भेजी जाने वाली मिठाइयां, वस्त्र, रेवड़ियां, मूंगफलियां, गज्जक आदि माता-पिता के स्नेह और सामाजिक दायित्व का संकेत है। दक्ष प्रजापति द्वारा यज्ञ में भगवान-शिव का भाग न देने की भूल का प्रायश्चित्त भी इस परंपरा में निहित दिखता है। इसी भावभूमि पर उत्तर भारत के ‘खिचड़वार’ और दक्षिण भारत के ‘पोंगल’ जैसे समकालीन पर्वों में भी बेटियों को भेंट देने की परंपरा दिखाई देती है, जो सांस्कृतिक एकता और पारिवारिक संबंधों की निरंतरता को रेखांकित करती है।बहरहाल, यदि हम यहां पर लोहड़ी के इतिहास की बात करें तो लोहड़ी मुख्यतः पंजाब, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश का प्रमुख लोकपर्व है, जो रबी की फसल के आगमन का प्रतीक है। वैदिक काल से अग्नि को जीवनदायिनी शक्ति माना जाता रहा है। लोकमान्यताओं के अनुसार यह पर्व दुल्ला भट्टी से भी जुड़ा है, जिन्हें पंजाब का रॉबिनहुड कहा जाता है। जानकारी मिलती है कि दुल्ला भट्टी का असली नाम राय अब्दुल्ला खान भट्टी था।उन्होंने मुगल सम्राट अकबर के शासनकाल के दौरान मुगल शासन के खिलाफ विद्रोह का नेतृत्व किया था।उनका जन्म पंजाब क्षेत्र के 'संदल बार' (वर्तमान पाकिस्तान में पिंडी भट्टियां) में एक राजपूत मुस्लिम परिवार (भट्टी राजपूत वंश) में हुआ था तथा आपके पिता का नाम फरीद खान भट्टी और दादा का नाम संदल भट्टी था। लोककथाओं के अनुसार, दुल्ला के जन्म से कुछ समय पहले अकबर ने उनके पिता और दादा को विद्रोह के कारण फांसी दे दी थी। दुल्ला भट्टी को गरीबों का मसीहा कहा जाता है, क्यों कि वे अमीर जमींदारों को लूटते थे और लूट का माल गरीबों और जरूरतमंदों में बांट देते थे। मुगल काल में जब लड़कियों को गुलामी के लिए बेचा जाता था, तब दुल्ला भट्टी ने कई लड़कियों को तस्करों से बचाया। पाठकों को बताता चलूं कि दुल्ला भट्टी की सबसे प्रसिद्ध कहानी सुंदरी और मुंदरी नाम की दो अनाथ लड़कियों से जुड़ी है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार उनके चाचा उन्हें एक राजा को बेचना चाहते थे, लेकिन दुल्ला भट्टी ने उन्हें बचाया। उन्होंने जंगल में आग जलाकर उन दोनों की शादी योग्य हिंदू लड़कों से करवाई और खुद उनका कन्यादान किया तथा शगुन के तौर पर उस समय उन्होंने लड़कियों को एक सेर शक्कर (चीनी) भेंट की थी।आज भी पंजाब और उत्तर भारत में लोहड़ी का त्योहार दुल्ला भट्टी की याद में मनाया जाता है।लोहड़ी की आग के चारों ओर लोग इकट्ठा होकर प्रसिद्ध लोकगीत गाते हैं-'सुंदर मुंदरिये हो, तेरा कौन विचारा हो, दुल्ला भट्टी वाला हो...।' उल्लेखनीय है कि यह गीत लोहड़ी के अग्नि-पूजन, फसल की खुशहाली, नवविवाहितों व नवजात शिशु के मंगलकामना तथा लोकनायक दुल्ला भट्टी के साहस और दानशीलता की स्मृति से जुड़ा है।सच तो यह है कि दुल्ला भट्टी का चरित्र लोहड़ी को केवल पर्व नहीं, बल्कि न्याय, साहस और सामाजिक संवेदना का प्रतीक बनाता है। लोहड़ी गीत गाते हुए लोग अग्नि में लकड़ी, तिल, गुड़, मूंगफली आदि अर्पित करते हैं।दुल्ला भट्टी ने मुग़ल काल में अत्याचारों से पीड़ित बेटियों का विवाह करवाया, इसलिए आज भी लोहड़ी के गीतों में उसका उल्लेख होता है।वास्तव में यह गीत उनकी वीरता और लड़कियों के प्रति उनके सम्मान को समर्पित है।नवविवाहितों और नवजात शिशु के लिए पहली लोहड़ी विशेष महत्व रखती है, जैसा कि इसे समृद्धि और शुभता का प्रतीक माना जाता है।लोहड़ी की अग्नि में डाली जाने वाली सामग्री (तिल, गुड़, मूंगफली) ऊर्जा और उष्मा देने वाली होती है, जो सर्दी के मौसम के अनुरूप है। बहरहाल, यदि हम यहां पर 'लोहड़ी' शब्द की उत्पत्ति की बात करें तो इसकी उत्पत्ति ‘लोई’ यानी कि गुड़ की रोटी या ‘लोह’ (अग्नि) से मानी जाती है। कुछ लोग इसे ‘तिलोड़ी’ अर्थात तिल और गुड़ से बनी वस्तुओं से संबंधित मानते हैं। लोकमान्यता यह भी है कि लोहड़ी का नाम सूर्य और अग्नि की आराधना से जुड़ा है, जो जीवन के आधार माने जाते हैं। वास्तव में सच तो यह है कि, यह पर्व खगोलीय परिवर्तन से भी जुड़ा है, क्यों कि सूर्य के मकर राशि में प्रवेश से दिन बड़े होने लगते हैं। पहले लोहड़ी को सामूहिक लोकपर्व के रूप में मनाया जाता था, जहाँ गाँव की स्त्रियाँ बच्चों के साथ घर-घर जाकर गीत गाती थीं।लोहड़ी लोहड़ी लकड़ी, जिवै थारी बकरी।लकड़ी में तोतो, जिवै थारो पोतो। दाने पां दे सेर, तूं जां बच्चा चेर। आगे अग्ग बाले, पिछे घोड़े काले।घोड़ा-काठी आई, लोहड़ी मनाई।' गीत तो आज भी बच्चों में बहुत लोकप्रिय है। बच्चे घर घर जाते हैं और लोहड़ी की बधाई मांगते हैं। यहां पाठकों को यह भी बताता चलूं कि लोहड़ी के विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न नाम हैं। पंजाब, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश में इसे लोहड़ी, हिमाचल प्रदेश में इसे माघी और लोहड़ी दोनों के नाम से जाना जाता है। उत्तर भारत में इसे मकर संक्रांति पर्व कहा जाता है। वैसे मकर संक्रांति पर्व का आगमन लोहड़ी के ठीक एक दिन बाद होता है। गुजरात में लोहड़ी पर्व को उत्तरायण, महाराष्ट्र में मकर संक्रात, बंगाल में पौष संक्रांति, तमिलनाडु में पोंगल तथा असम में इसे भोगाली बिहू के नाम से जाना जाता है जो भारत की सांस्कृतिक एकता का प्रतीक है। जो भी हो इस पर्व को अलग-अलग नामों से पूरे देश में मनाया जाता है। दूसरे शब्दों में कहें तो लोहड़ी केवल एक पर्व मात्र नहीं, है बल्कि यह तो हमारी लोकसंस्कृति, ऋतु परिवर्तन और सामाजिक एकता का उत्सव है। यह हमें प्रकृति के प्रति कृतज्ञता, परंपराओं से जुड़ाव और सामूहिक आनंद का संदेश देती है। मूल भाव यह है कि यह पर्व नई फसल (रबी) की खुशी, सामूहिक भाईचारे और अग्नि की पवित्रता के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का माध्यम है। लोहड़ी के दिन लकड़ियों के अलाव के चारों ओर लोकगीत, भांगड़ा और गिद्दा के साथ लोग आपसी भेदभाव भुलाकर एकजुट होते हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि तिल, गुड़ और गजक की मिठास के साथ यह त्योहार जीवन में नई ऊर्जा, संपन्नता और सामाजिक समरसता का संचार करता है। लोहड़ी पर्व में अग्नि का प्रतीकात्मक महत्व है क्यों कि लोहड़ी का सबसे प्रमुख तत्व अग्नि है। सूर्यास्त के बाद खुले मैदान या घर के आंगन में आग जलाई जाती है। अग्नि को साक्षी मानकर लोग उसकी परिक्रमा करते हैं और जैसा कि ऊपर भी इस आलेख में चर्चा कर चुका हूं कि उसमें तिल, मूंगफली, रेवड़ी, गजक, पॉपकॉर्न आदि अर्पित करते हैं। अग्नि यहाँ केवल भौतिक ऊष्मा का स्रोत नहीं, बल्कि शुद्धि, ऊर्जा और नवजीवन का प्रतीक है। यह अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ने का संकेत भी देती है। लोहड़ी पर्व लोकगीतों, ढोल और नृत्य बिना अधूरा है।नृत्य और संगीत ऊर्जा, उत्साह और जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को दर्शाते हैं।इस पर्व का सामाजिक और पारिवारिक महत्व है।यह पर्व विशेष रूप से नवविवाहित जोड़ों और नवजात शिशुओं के लिए खास माना जाता है। परिवार और समाज मिलकर उन्हें आशीर्वाद देते हैं, उपहार देते हैं और सामूहिक रूप से उत्सव मनाते हैं। इससे सामाजिक स्वीकृति, पारिवारिक एकता और परंपराओं की निरंतरता बनी रहती है। लोहड़ी रिश्तों में गर्माहट और आपसी सहयोग की भावना को प्रबल करती है।लोहड़ी बच्चों के लिए केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि सांस्कृतिक शिक्षा का माध्यम भी है, जिसके द्वारा वे अपनी जड़ों से जुड़ते हैं। अंत में यही कहूंगा कि आधुनिकता और शहरीकरण के बावजूद भी आज लोहड़ी की प्रासंगिकता कम नहीं हुई है। शहरों में भी सामूहिक कार्यक्रम, सांस्कृतिक संध्याएँ और सामाजिक आयोजन होते हैं। प्रवासी पंजाबी समुदाय, चाहे वह भारत के अन्य राज्यों में हो या विदेशों में, लोहड़ी के माध्यम से अपनी सांस्कृतिक पहचान को जीवित रखता है। यह पर्व उन्हें अपनी मातृभूमि और परंपराओं से भावनात्मक रूप से जोड़ता है।यह बहुत ही अच्छी बात है कि आज के समय में लोहड़ी मनाने के तरीकों में पर्यावरणीय चेतना का समावेश भी आवश्यक हो गया है। सीमित और सुरक्षित अग्नि, स्वच्छता और सामूहिक जिम्मेदारी के साथ उत्सव मनाने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। यह दर्शाता है कि परंपराएँ समय के साथ स्वयं को संतुलित और प्रासंगिक बनाती हैं।निष्कर्षतः यहां यह बात कही जा सकती है कि लोहड़ी पंजाब की जीवंतता और 'सांझी विरासत' का उत्सव है, जो पूरे भारत व विदेशों में भी हर्षोल्लास, खुशी और उमंग के साथ मनाया जाता है।यह पर्व कड़ाके की ठंड (कठिनाइयों) पर अग्नि (आशा, विश्वास और ऊर्जा) की विजय का प्रतीक है। दुल्ला भट्टी जैसी लोककथाओं के माध्यम से यह हमें सामाजिक न्याय और सामूहिकता का पाठ पढ़ाता है। अंततः, लोहड़ी हमें अपनी जड़ों और मिट्टी से जुड़े रहकर, प्रकृति के उपहारों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने और समाज के साथ मिल-जुलकर आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है।

-सुनील कुमार महला

शोषण की वंशावली: जो माँ से बच्चे तक बहती है

समाज की सबसे अँधेरी सच्चाइयाँ अक्सर उन घरों में छिपी होती हैं, जहाँ रोशनी के नाम पर सिर्फ मजबूरी जलती है। ऐसे घरों में माँ का पसीना और बच्चे का बचपन एक साथ गिरवी रखा जाता है। गरीबी, अशिक्षा और असमानता की जंजीरों में जकड़ा यह तंत्र बाल श्रम और महिला शोषण को एक-दूसरे से अलग नहीं रहने देता। ये दोनों समस्याएँ अलग-अलग दिखाई भले ही दें, पर वास्तव में एक ही जहरीले तीर के दो सिरे हैं। एक सिर बच्चों के हाथों से किताब छीनता है, तो दूसरा महिलाओं के जीवन से सम्मान। यही तीर पीढ़ी दर पीढ़ी समाज को घायल करता चला जा रहा है।

इस तीर का सबसे मजबूत आधार गरीबी है, जो परिवारों को असहाय बना देती है। जब आय सीमित होती है और ज़रूरतें अनंत, तब निर्णय विवशता में लिए जाते हैं। माँ घर से बाहर काम पर जाती है, खेतों या कारखानों में दिन खपाती है, और बच्चे स्कूल की जगह काम की दुनिया में धकेल दिए जाते हैं। इस संघर्ष में सबसे अधिक मार महिलाओं और बच्चों पर ही पड़ती है। पुरुष प्रधान समाज में पुरुष का काम स्थायी माना जाता है, जबकि महिला और बच्चे को सस्ते श्रम के रूप में देखा जाता है। इसी सोच के कारण यह विषैला तीर और तेज हो जाता है।

बाल श्रम इस तीर का वह सिर है, जो मासूमियत को सबसे पहले भेदता है। कम उम्र में काम का बोझ उठाते बच्चे खेल, शिक्षा और सपनों से वंचित रह जाते हैं। ईंट-भट्टों, होटलों, घरेलू कामों और छोटे उद्योगों में लगे ये बच्चे न सिर्फ शारीरिक श्रम करते हैं, बल्कि मानसिक दबाव भी झेलते हैं। कई बार उनके साथ दुर्व्यवहार और हिंसा भी होती है। शिक्षा से दूर रहने के कारण वे अपने अधिकारों को पहचान ही नहीं पाते। यह स्थिति उन्हें जीवनभर के लिए कमजोर बना देती है और समाज को एक अशिक्षित पीढ़ी सौंप देती है।

इस तीर का दूसरा सिर महिला शोषण है, जो समान रूप से घातक है। असंगठित क्षेत्र में काम करने वाली महिलाएँ कम मजदूरी, लंबे काम के घंटे और असुरक्षित माहौल झेलती हैं। घरेलू कामगार, खेत मजदूर या कारखानों में लगी महिलाएँ अक्सर यौन उत्पीड़न और मानसिक उत्पीड़न का शिकार होती हैं। उनकी मेहनत का उचित मूल्य नहीं मिलता और उन्हें निर्णय लेने का अधिकार भी नहीं दिया जाता। जब महिला स्वयं असुरक्षित होती है, तो उसका प्रभाव पूरे परिवार पर पड़ता है और बच्चे भी उसी असुरक्षा में पलते हैं। बाल श्रम और महिला शोषण एक-दूसरे को जन्म देते हैं और एक-दूसरे को बढ़ाते हैं। जब महिला की आय कम होती है और उसका शोषण होता है, तो परिवार की आर्थिक स्थिति नहीं सुधरती। ऐसे में बच्चों को भी काम पर भेजना मजबूरी बन जाता है। वही बच्चे बड़े होकर फिर उसी व्यवस्था का हिस्सा बनते हैं, जहाँ महिलाएँ और बच्चे शोषण के चक्र में फँसे रहते हैं। इस प्रकार यह जहरीला तीर सिर्फ वर्तमान को नहीं, बल्कि भविष्य को भी घायल करता है। यह एक ऐसा दुष्चक्र है, जो बिना हस्तक्षेप के कभी नहीं टूटता।

सामाजिक रूढ़ियाँ इस तीर को और मजबूत बनाती हैं। लड़की को आज भी कई जगह बोझ समझा जाता है। उसकी शिक्षा पर कम ध्यान दिया जाता है और उससे कम उम्र में ही जिम्मेदारियाँ निभाने की अपेक्षा की जाती है। घरेलू काम, छोटे भाई-बहनों की देखभाल और बाहर का श्रम—यह सब उसकी दिनचर्या का हिस्सा बन जाता है। वहीं महिला को सहनशीलता और त्याग का प्रतीक बनाकर उसके शोषण को सामान्य मान लिया जाता है। ऐसी सोच बच्चों और महिलाओं दोनों को कमजोर स्थिति में धकेल देती है।

कानून और योजनाएँ इस समस्या से निपटने के लिए मौजूद हैं, लेकिन उनका प्रभाव सीमित है। बाल श्रम निषेध कानून, शिक्षा के अधिकार और महिला सशक्तिकरण की योजनाएँ कागजों पर मजबूत दिखती हैं, पर जमीनी हकीकत अलग है। प्रवर्तन की कमी, भ्रष्टाचार और जागरूकता के अभाव में ये प्रयास अपेक्षित परिणाम नहीं दे पाते। कई बार बच्चे बचा लिए जाते हैं, लेकिन पुनर्वास और शिक्षा की व्यवस्था न होने से वे फिर उसी दलदल में लौट जाते हैं। महिलाओं के लिए बनी योजनाएँ भी तभी सफल होंगी, जब उन्हें सम्मान और सुरक्षा के साथ लागू किया जाए। इस दो सिरों वाले जहरीले तीर को तोड़ने का सबसे प्रभावी हथियार शिक्षा है। गुणवत्तापूर्ण और सुलभ शिक्षा बच्चों को श्रम से दूर रख सकती है और उन्हें आत्मनिर्भर बना सकती है। साथ ही महिलाओं को कौशल प्रशिक्षण, सुरक्षित कार्यस्थल और समान वेतन मिलना अनिवार्य है। जब महिला आर्थिक रूप से सशक्त होगी, तभी वह अपने बच्चों को बेहतर भविष्य दे पाएगी। शिक्षा और सशक्तिकरण मिलकर ही इस दुष्चक्र को तोड़ सकते हैं।

समाज की भूमिका भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। केवल सरकार पर निर्भर रहना पर्याप्त नहीं है। परिवारों को यह समझना होगा कि बच्चे कमाई का साधन नहीं, बल्कि भविष्य की नींव हैं। महिलाओं को सम्मान देना और उनके श्रम का मूल्य समझना सामाजिक जिम्मेदारी है। जागरूकता, संवेदनशीलता और सामूहिक प्रयास से ही यह बदलाव संभव है। जब सोच बदलेगी, तभी व्यवस्था बदलेगी और यह जहरीला तीर अपनी धार खो देगा।

बाल श्रम और महिला शोषण के खिलाफ लड़ाई मानवता की लड़ाई है। यह संघर्ष कठिन जरूर है, पर असंभव नहीं। यदि आज समाज, सरकार और नागरिक मिलकर कदम उठाएँ, तो आने वाली पीढ़ियाँ एक सुरक्षित और सम्मानजनक जीवन जी सकेंगी। बच्चों का बचपन और महिलाओं की गरिमा किसी भी राष्ट्र की सबसे बड़ी पूँजी होती है। इस पूँजी की रक्षा करना हमारा नैतिक और सामाजिक कर्तव्य है, क्योंकि यही सच्चे अर्थों में प्रगति की पहचान है।

-कृति आरके जैन बड़वानी (मप्र)

ट्रम्प की लाठी, ट्रम्प की भैंस

जिसकी लाठी, उसकी भैंस, ये कहावत अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप पर बिल्कुल फिट बैठ रही है। एक तरह से अब ट्रम्प लाठी लेकर निकल चुके हैं और किसी की परवाह नहीं कर रहे हैं। डोनाल्ड ट्रंप ने दिखा दिया है कि उनके लिए अंतरराष्ट्रीय नियम-कानून मायने नहीं रखते और न ही किसी किस्म की नैतिकता की उन्हें परवाह है। वास्तव में अंतरराष्ट्रीय राजनीति में नैतिकता सिर्फ दिखावे के लिए होती है और अमेरिका अभी तक ऐसे ही दिखावे से दुनिया को हांकता रहा है। डोनाल्ड ट्रंप ने कोई दिखावा नहीं किया और सीधे वेनेजुएला के पदस्थ राष्ट्रपति को अपने स्पेशल दस्ते से उनके निवास से उठवा लिया। एक संप्रभु राष्ट्र के राष्ट्रपति को इस तरह से उठा लेना बताता है कि अमेरिका अब दादागिरी पर उतर आया है। प्रसिद्ध हिंदी फिल्म ‘शोले’ के खलनायक का प्रसिद्ध डॉयलॉग है, “गब्बर के ताप से तुम्हें कौन बचा सकता है, खुद गब्बर।” ऐसे ही अहंकार से भरे हुए ट्रंप ने कहा है कि उनकी आक्रामकता को सिर्फ वही रोक सकते हैं। दूसरे शब्दों में वो पूरी दुनिया को धमका रहे हैं कि उन्हें कोई रोकने वाला नहीं है। अगर उनकी बात मानी गई तो वो रुक सकते हैं, क्योंकि उन्हें उनके अलावा कोई और नहीं रोक सकता। जो अमेरिका पहले मानवाधिकार, लोकतंत्र और स्वतंत्रता के नाम पर दूसरे देशों को बर्बाद करता आया है, उसने अपने स्वार्थ के लिए एक देश पर सीधा हमला कर दिया है। सद्दाम हुसैन और कर्नल गद्दाफी को इंसानियत का दुश्मन बताकर जो कुछ किया गया, वैसा ही निकोलस मादुरो के साथ करने के लिए कोई बहाना नहीं बनाया गया। देखा जाए तो अमेरिका ने दुनिया को यह बताया है कि वो ऐसा करने की ताकत रखता है, इसलिए उसने यह सब किया है।

अमेरिका अपने आपको दुनिया का रक्षक मानता है और एक थानेदार जैसा व्यवहार करता है, लेकिन सच यह है कि अमेरिका जिस देश में भी घुसा है, वो बर्बाद हो गया है। बांग्लादेश तेजी से विकास के रास्ते पर चल रहा था, लेकिन अमेरिका से यह देखा नहीं गया और वहां से शेख हसीना को उखाड़ कर फेंक दिया। अमेरिका ने बांग्लादेश में अपने एजेंट मोहम्मद यूनुस को बिठा दिया है जो बांग्लादेश को बर्बाद करने पर तुला हुआ है। मिडल ईस्ट की बर्बादी के पीछे अमेरिका का स्वार्थ छुपा हुआ है। डोनाल्ड ट्रंप ने दूसरे कार्यकाल में आते ही घोषणा कर दी थी कि उनकी नीति अमेरिका फर्स्ट की है लेकिन सच यह है कि उनकी नीति ट्रम्प फर्स्ट की है। उनकी नीतियां बता रही हैं कि वो आक्रामक तरीके से अपने उद्योगपति मित्रों की मदद कर रहे हैं। वेनेजुएला पर हमला भी अमेरिकी तेल कंपनियों के फायदे के लिए किया गया है। अमेरिका का इतिहास बताता है कि अमेरिका ने कई बार अपने व्यापारिक उद्देश्यों के लिए दूसरे देशों को निशाना बनाया है। ट्रम्प ने चुनाव प्रचार के दौरान कहा था कि वो सत्ता में आते ही सारे युद्ध रुकवा देंगे और नए युद्ध शुरू नहीं होने देंगे। उन्हें सत्ता में आये हुए एक साल होने वाला है लेकिन वो कोई भी युद्ध बंद नहीं करवा पाए हैं। इसके विपरीत अब डोनाल्ड ट्रंप खुद ही युद्ध की घोषणा करते हुए दिखाई दे रहे हैं। वो खुद को शांतिदूत घोषित करते हुए नोबेल पुरस्कार देने की मांग कर रहे हैं लेकिन उनकी यह मांग अभी तक मानी नहीं गई है। लगता है कि नोबल पुरस्कार न मिलने से निराश ट्रम्प अब गुंडागर्दी पर उतर आए हैं। भारत-पाकिस्तान का संघर्ष रुकवाने का दावा करने वाले ट्रम्प ने शांति का मसीहा बनने की कोशिश की है लेकिन वेनेजुएला।

-राजेश कुमार पासी

ऊर्जा से सत्ता तक: रूसी तेल पर अमेरिकी वार और भारत

विश्व राजनीति के बदलते परिदृश्य में ऊर्जा अब केवल ईंधन नहीं, बल्कि शक्ति, प्रभाव और रणनीति का सबसे बड़ा हथियार बन चुकी है। जब तेल की धाराओं पर राजनीति हावी होती है, तब उसका असर सीधे राष्ट्रों की अर्थव्यवस्था, जनता की जेब और विदेश नीति की स्वतंत्रता पर पड़ता है। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा रूस से तेल खरीदने वाले देशों पर 500 प्रतिशत तक टैरिफ लगाने की धमकी इसी ऊर्जा-राजनीति का सबसे तीखा उदाहरण है। यह धमकी केवल रूस को नहीं, बल्कि भारत जैसे उभरते देशों को भी सीधे चुनौती देती है, जिनकी ऊर्जा सुरक्षा पिछले कुछ वर्षों से रूसी कच्चे तेल पर काफी हद तक निर्भर रही है। यह सवाल अब केवल तेल का नहीं, बल्कि भारत की रणनीतिक स्वायत्तता और वैश्विक मंच पर उसकी निर्णय क्षमता का बन गया है।

ट्रंप की इस घोषणा ने वैश्विक ऊर्जा बाजार में हलचल मचा दी है। यूक्रेन युद्ध को लगभग चार वर्ष पूरे होने के बाद अमेरिका ने रूस पर दबाव बढ़ाने के लिए नए हथकंडे अपनाए हैं। जनवरी 2026 में ट्रंप ने ‘सैंक्शनिंग रशिया एक्ट ऑफ 2025’ को समर्थन देकर स्पष्ट संकेत दिया कि जो भी देश रूसी तेल, गैस या यूरेनियम खरीदेगा, उसे भारी आर्थिक कीमत चुकानी पड़ेगी। इस कानून के तहत अमेरिका ऐसे देशों के निर्यात पर 500 प्रतिशत तक द्वितीयक टैरिफ लगा सकता है। भारत, चीन और ब्राजील जैसे बड़े आयातक इस नीति के सीधे निशाने पर हैं। यह कदम युद्ध के मैदान से बाहर आर्थिक मोर्चे पर लड़ा जा रहा एक आक्रामक संघर्ष है।

भारत के लिए यह स्थिति इसलिए अधिक गंभीर है क्योंकि पिछले चार वर्षों में रूसी तेल भारत की ऊर्जा रणनीति का महत्वपूर्ण स्तंभ बन चुका है। पश्चिमी प्रतिबंधों के बाद रूस ने भारी छूट पर कच्चा तेल बेचना शुरू किया, जिससे भारत को महंगे मध्य-पूर्वी तेल पर निर्भरता कम करने का अवसर मिला। 2022 से 2025 के बीच कई महीनों में रूस भारत का सबसे बड़ा तेल आपूर्तिकर्ता बन गया और कुल आयात में उसकी हिस्सेदारी 30 से 40 प्रतिशत तक पहुंची। इस सस्ते तेल ने न केवल भारत की रिफाइनरियों को राहत दी, बल्कि घरेलू स्तर पर मुद्रास्फीति को नियंत्रित रखने में भी अहम भूमिका निभाई।

500 प्रतिशत टैरिफ की धमकी वैश्विक व्यापार इतिहास में लगभग अभूतपूर्व है। इतना ऊंचा शुल्क किसी भी देश के लिए अमेरिकी बाजार तक पहुंच को लगभग असंभव बना सकता है। भारत जैसे निर्यात-आधारित अर्थतंत्र के लिए यह बड़ा जोखिम है, क्योंकि अमेरिका भारत का एक प्रमुख व्यापारिक साझेदार है। पहले ही 2025 में रूसी तेल खरीदने के कारण कुछ भारतीय उत्पादों पर 50 प्रतिशत तक टैरिफ लगाए जा चुके हैं। अब अगर यह दर 500 प्रतिशत तक पहुंचती है, तो इसका असर फार्मा, आईटी, टेक्सटाइल और ऑटोमोबाइल जैसे क्षेत्रों पर पड़ सकता है। इस दबाव का उद्देश्य केवल रूस को अलग-थलग करना नहीं, बल्कि भारत जैसे देशों को अमेरिकी ऊर्जा और रणनीतिक ढांचे में मजबूती से बांधना भी है।

भारत की ऊर्जा सुरक्षा इस पूरे घटनाक्रम का सबसे संवेदनशील पहलू है। देश अपनी कुल तेल आवश्यकता का 85 प्रतिशत से अधिक आयात करता है। ऐसे में सस्ते और स्थिर आपूर्तिकर्ता का महत्व अत्यधिक बढ़ जाता है। यदि रूसी तेल की आपूर्ति पूरी तरह बाधित होती है, तो भारत को फिर से महंगे विकल्पों की ओर लौटना पड़ेगा। इससे पेट्रोल और डीजल की कीमतों में बढ़ोतरी हो सकती है, जिसका सीधा असर आम नागरिक और औद्योगिक उत्पादन पर पड़ेगा। वैश्विक बाजार में आपूर्ति घटने से तेल की कीमतें बढ़ने की आशंका भी बनी रहेगी, जो विकासशील देशों के लिए दोहरी मार साबित हो सकती है।

हालांकि भारत इस दबाव के सामने निष्क्रिय नहीं है। सरकार और तेल कंपनियों ने समय रहते आपूर्ति के विविधीकरण की दिशा में कदम बढ़ाए हैं। अमेरिका, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात और अफ्रीकी देशों से तेल आयात बढ़ाया जा रहा है। घरेलू उत्पादन को बढ़ाने के लिए ओएनजीसी और निजी कंपनियों की परियोजनाओं को गति दी गई है। इसके साथ ही 500 गीगावाट नवीकरणीय ऊर्जा लक्ष्य की दिशा में तेजी से काम हो रहा है, ताकि भविष्य में जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम की जा सके। यह रणनीति भारत को अल्पकालिक झटकों से उबरने और दीर्घकालिक आत्मनिर्भरता की ओर ले जाने का प्रयास है।

इस पूरे परिदृश्य में सबसे बड़ा प्रश्न भारत की रणनीतिक स्वायत्तता का है। भारत की विदेश नीति हमेशा संतुलन और बहुपक्षीयता पर आधारित रही है। एक ओर अमेरिका के साथ रक्षा, प्रौद्योगिकी और क्वाड जैसी साझेदारियां हैं, तो दूसरी ओर रूस के साथ दशकों पुराने रणनीतिक और सैन्य संबंध। ट्रंप की नीति भारत को स्पष्ट रूप से एक पक्ष चुनने के लिए दबाव में डालती है। भारत ने हमेशा एकतरफा प्रतिबंधों का विरोध किया है और अपने राष्ट्रीय हितों को सर्वोपरि रखा है। ऐसे में यह चुनौती भारत की कूटनीतिक परिपक्वता और आत्मविश्वास की भी परीक्षा है।

वैश्विक स्तर पर ट्रंप की इस नीति के प्रभाव दूरगामी हो सकते हैं। रूस की अर्थव्यवस्था को झटका जरूर लगेगा, लेकिन चीन और अन्य देशों के साथ व्यापार जारी रहने से वह पूरी तरह अलग-थलग नहीं होगा। दूसरी ओर, तेल की कीमतों में अस्थिरता वैश्विक आर्थिक विकास को धीमा कर सकती है। अमेरिका खुद को एक प्रमुख ऊर्जा निर्यातक के रूप में स्थापित करना चाहता है, लेकिन इससे उसके सहयोगियों में भी असहजता बढ़ रही है। विशेषज्ञों का मानना है कि यह धमकी ट्रंप की पुरानी सौदेबाजी शैली का हिस्सा भी हो सकती है, जिसका उद्देश्य अधिकतम दबाव बनाकर बेहतर सौदा हासिल करना है।

अंततः ट्रंप की 500 प्रतिशत टैरिफ की धमकी भारत के लिए एक कठिन लेकिन निर्णायक मोड़ है। यह संकट भारत को अपनी ऊर्जा नीति, आर्थिक रणनीति और विदेश नीति को नए सिरे से परिभाषित करने का अवसर भी देता है। विविधीकरण, घरेलू उत्पादन, नवीकरणीय ऊर्जा और सशक्त कूटनीति के सहारे भारत इस चुनौती को अवसर में बदल सकता है। आज यह स्पष्ट हो चुका है कि ऊर्जा केवल व्यापार नहीं, बल्कि संप्रभुता और शक्ति का प्रश्न है। भारत को इस वैश्विक ऊर्जा खेल में संतुलन, साहस और दूरदर्शिता के साथ आगे बढ़ना होगा, ताकि उसकी ऊर्जा सुरक्षा और रणनीतिक स्वायत्तता दोनों सुरक्षित रह सकें।

-प्रो. आरके जैन “अरिजीत”, बड़वानी (मप्र)

ओडिशा विधानसभा में 200 सीटें होंगी !

मनोरंजन शासमल

भूबनेश्वर : मुख्यमंत्री मोहन माझी ने नई विधानसभा बिल्डिंग की आधारशिला रखने के मौके पर बड़ी जानकारी दी है। ओडिशा में नई विधानसभा और नया लोक सेवा भवन बनाया जाएगा। अभी विधानसभा में 147 सीटें हैं, मुख्यमंत्री ने कहा कि डिलिमिटेशन में सीटें बढ़ाई जा सकती हैं।हालाँकि, नई विधानसभा में लगभग 200 MLA हो सकते हैं।करीब 50 सीटें बढ़ने की संभावना है। उन्होंने कहा कि अगले 50/100 साल को ध्यान में रखते हुए 300 सीटों का इंतज़ाम होगा। तो, इस बात की चर्चा बढ़ रही है कि मुख्यमंत्री ने ऐसा कहकर क्या इशारा किया है। तो, ऐसी चर्चा है कि विधानसभा की सीटें और बढ़ सकती हैं।

गौरतलब है कि पूर्व मंत्री पृथ्वीराज हरिचंदन ने आज कहा कि नया लोक सेवा भवन बनाने की ज़रूरत है। डिपार्टमेंट और कर्मचारियों की संख्या बढ़ गई है। इसलिए, लोक सेवा भवन का काम शुरू हो गया है। मंत्री ने कहा कि इसी क्रम में नई विधानसभा भी बनेगी।

सोफिया ने मोकिम फाउंडेशन की यूथ गैदरिंग में हिस्सा लिया

मनोरंजन शासमल

भूबनेश्वर : सोफिया मोकिम के इवेंट में चीफ गेस्ट थीं। मोकिम की नई पार्टी बनने से पहले, यूथ ग्रुप को अट्रैक्ट करने के लिए फाउंडेशन रखा गया था। मोहम्मद मोकिम ने नेशनल यूथ डे पर यूथ ग्रुप के साथ अपनी ताकत दिखाई। दिलचस्प बात यह है कि कांग्रेस MLA और उनकी बेटी सोफिया फिरदोस मोकिम के इवेंट में चीफ गेस्ट के तौर पर शामिल हुईं।सोफिया के साथ BJD MLA सुनील मोहंती, धर्मशाला MLA और BJP नेता हिमांशु शेखर साहू भी हैं।

मीडिया को जवाब देते हुए मोकिम ने कहा, ओडिशा को अपने विकास के लिए एक यूथ ग्रुप की ज़रूरत है। मार्च में एक नई पार्टी बनाई जाएगी। पॉलिटिक्स सबसे अच्छी

पॉलिसी है, इसलिए आने वाले दिनों में एक नई पार्टी की ज़रूरत है क्योंकि राज्य के विकास के लिए युवाओं की ज़रूरत है। इस मौके पर सोफिया ने आगे कहा, अगर कोई पिता किसी मुद्दे पर आगे बढ़ता है, तो उसे कोई नहीं रोक सकता। स्वामी विवेकानंद युवाओं को हिम्मत देते हैं। देश हमारी पहली ज़िम्मेदारी है।

कुमावत समाज तेलंगाना के प्रदेश अध्यक्ष बनने पर तिलायचा सोनाराम कुमावत का कुमावत समाज सिकंदराबाद- हैदराबाद, किसरा के अध्यक्ष पप्पूलाल बाकरेचा व समस्त पदाधिकारीयों व अन्य द्वारा भव्य स्वागत किया।

ब्यावर संघ बैंगलोर के अध्यक्ष बने ललित डाकलिया

महैन्द्र भन्साली

बेंगलूरू: श्री ब्यावर संघ बैंगलोर की शहर के रिसॉर्ट में आयोजित नववर्ष 2026 स्नेहाभिनंदन और आमसभा में ललित डाकलिया का अध्यक्ष पद पर सर्वसम्मति से निर्विरोध चयन किया गया। चेयरमैन पद पर महैन्द्र भन्साली को नियुक्त किया गया। निर्वाचन अधिकारी पन्नालाल कोठारी द्वारा सभा के बीच ललित डाकलिया के अध्यक्ष पद की घोषणा होते ही हर्ष की लहर दौड़ गई और सभी ने बधाइयां प्रदान की। सभा के प्रारम्भ में निवर्तमान चेयरमैन अरविन्द खिंवसरा और निवर्तमान अध्यक्ष पदमचंद बोहरा ने ब्यावर संघ के पधारे हुए सदस्य परिवारों का स्वागत अभिनंदन किया। महामंत्री अरविन्द कोठारी ने पिछले कार्यकाल में हुए कार्यक्रमों को सभा के समक्ष रखा और ब्यावर शहर का प्रामाणिक इतिहास उपस्थित जनों को बताया। कोषाध्यक्ष दिनेश लोढा ने कार्यकाल के दौरान हुए आय व्यय का ब्यौरा प्रस्तुत किया। आयोजन के मुख्य प्रायोजक आनन्द राज अशोक कुमार खिंवसरा परिवार, सह प्रायोजक सज्जनराज अमित कुमार कोठारी, सहयोगी नीलम प्रकाश पारख, अमरचंद

महावीर चंद तातेड, तेजराज दिलीप कुमार खिंवसरा, ललित कुमार ज्ञानेश कुमार मेहता, गौतमचंद तरुण कुमार बोथरा, श्रीमती निर्मला देवी हीरालाल कांटेड़, महावीर चंद गौतम चंद वेदमुथा, हीरालाल दीपक कुमार बोहरा, पवन कुमार दक्ष कुमार खारीवाल परिवार रहे। सभी लाभार्थियों का संघ की ओर से शाल, माला और स्मृति चिन्ह से स्वागत अभिनन्दन किया गया। ज्ञातव्य है कि बैंगलोर शहर में ब्यावर के करीब साढ़े पांच सौ परिवार रहते हैं। कार्यक्रम की व्यवस्थाओं में संघ की कार्यकारिणी सदस्यों के साथ श्री ब्यावर संघ युवा शाखा और ब्यावर युवा लेडीज विंग का सक्रिय सहयोग प्राप्त हुआ। युवा शाखा के महामंत्री कुलदीप छाजेड़ ने अपने वक्तव्य में युवा शाखा को संघ द्वारा मिल रहे सहयोग के लिए आभार जताया और आगे भी युवाओं को आगे बढ़ाने और प्रोत्साहन प्रदान करने की बात कही। युवा शाखा और लेडीज विंग के साथ इनके द्वारा संचालित ज्ञान वाटिका की समस्त शिक्षिकाओं को मंच पर आमंत्रित कर उनका शब्दों से बहुमान किया। जैन डाइरेक्ट के राजेन्द्र जैन ने संघ के सदस्यों को संघ की वेबसाइट और एप के बारे में बताया। कार्यक्रम का संचालन एंकर सोनम कवाड ने किया। कार्यक्रम में समस्त परिवारों के सदस्यों ने उपस्थित रहकर परस्पर मिलन के साथ आपस में मेलजोल बढाया। बच्चों ने अनेक प्रतियोगिता में हिस्सा लेकर अनेक पुरस्कार जीते।

राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर टीचर्स ऑफ बिहार ने आयोजित किया ऑनलाइन क्विज

परिवहन विशेष न्यूज

पटना। राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर टीचर्स ऑफ बिहार द्वारा स्वामी विवेकानंद के जीवन, दर्शन एवं विचारों पर आधारित एक ऑनलाइन क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस क्विज का उद्देश्य युवाओं, छात्रों एवं शिक्षकों को स्वामी विवेकानंद के प्रेरणादायक विचारों से जोड़ना तथा उनमें सकारात्मक सोच और राष्ट्र निर्माण की भावना का विकास करना रहा।

इस अवसर पर टीचर्स ऑफ बिहार के फाउंडर शिव कुमार एवं टेक्निकल टीम लीडर ई. शिवेंद्र प्रकाश सुमन ने संयुक्त रूप से कहा कि स्वामी विवेकानंद के विचार आज के युवाओं के लिए अत्यंत प्रासंगिक हैं। ऐसे शैक्षणिक एवं प्रेरणादायक आयोजनों के माध्यम से युवाओं में आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को मजबूती मिलती है।

वहीं क्विज क्रिएटर सह प्रदेश प्रवक्ता रंजेश कुमार एवं प्रदेश मीडिया संयोजक मृत्युंजय कुमार ने संयुक्त रूप से जानकारी देते हुए बताया कि इस ऑनलाइन क्विज में

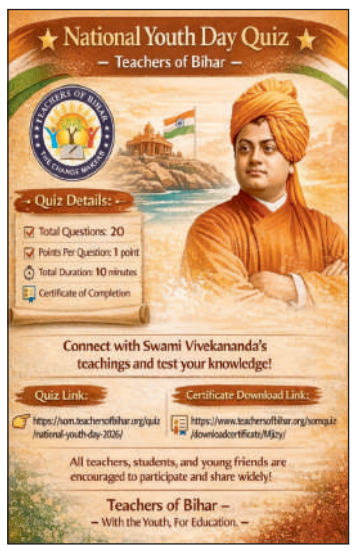

कुल 20 प्रश्न पूछे गए, जिसमें प्रत्येक प्रश्न के लिए एक अंक निर्धारित था। प्रतिभागियों को क्विज पूरा करने के लिए 10 मिनट का समय दिया गया। क्विज को सफलतापूर्वक पूरा करने वाले सभी प्रतिभागियों को डिजिटल सर्टिफिकेट भी प्रदान किया गया।

प्रदेश मीडिया संयोजक मृत्युंजय कुमार ने बताया कि यह क्विज पूरी तरह ऑनलाइन माध्यम से आयोजित किया गया। जिसमें शिक्षक, छात्र एवं सभी युवा वर्ग के लोग भाग लिए। यह पहल ज्ञानवर्धक होने के साथ-साथ युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत रहा। टीचर्स ऑफ बिहार के फाउंडर शिव कुमार ने राज्य के सभी शिक्षकों, छात्रों एवं युवा मित्रों को इस राष्ट्रीय युवा दिवस क्विज में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने और इसे अधिक से अधिक साझा करने तथा स्वामी विवेकानंद के विचार समाज के हर वर्ग तक पहुंचाने के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया।

शूर अस्पताल में मनाई गई "तीयां दी लोहड़ी", नवजात बेटियों को किया समर्पित

साहिल बेरी

अमृतसर। शूर अस्पताल, खजाना गेट, अमृतसर में रोटरी क्लब प्रीमियर एवं शूरवीर सभा के संयुक्त तत्वावधान में लोहड़ी पर्व हर्षोल्लास और सामाजिक संदेश के साथ मनाया गया। इस वर्ष लोहड़ी उत्सव को विशेष रूप से नवजात बेटियों को समर्पित "तीयां दी लोहड़ी" के रूप में मनाया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत शूर अस्पताल की निदेशक डॉ. गायत्री शूर ने उपस्थित अतिथियों का स्वागत करते हुए की। उन्होंने कहा कि यह आयोजन समाज में नारी सम्मान, कन्या सशक्तिकरण और लैंगिक समानता का सशक्त संदेश देता है।

इस अवसर पर नवजात बच्चियों को सम्मानित किया गया। सम्मान प्राचार्य डॉ.

जे. पी. शूर, डॉ. सुरज शूर, डॉ. गायत्री शूर, रोटरी क्लब प्रीमियर के सदस्यों एवं शूरवीर सभा के पदाधिकारियों द्वारा प्रदान किया गया।

कार्यक्रम के दौरान शूर अस्पताल की महिला स्टाफ द्वारा गिद्धा तथा भांगड़ा की रंगारंग प्रस्तुतियाँ दी गईं, जिससे पूरा वातावरण लोक-संस्कृति और उत्साह से भर गया।

इस मौके पर वक्ताओं ने लोहड़ी पर्व के सामाजिक महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि बेटियाँ समाज की नींव हैं और उनका सम्मान करना एक प्रगतिशील समाज की पहचान है। उन्होंने बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ के संदेश को अपनाने की अपील की।

कार्यक्रम का समापन सांस्कृतिक उल्लास, खुशियों और कन्या सम्मान के सकारात्मक संदेश के साथ हुआ। यह आयोजन समाज में नारी सशक्तिकरण की दिशा में एक सराहनीय पहल साबित हुआ।

जमशेदपुर में शुभारंभ हुआ साहित्यकारों, लेखकों, कलाकारों का सम्मेलन

कार्तिक कुमार परिच्छा

सरायकेला। पूर्वी सिंहभूम साहित्य उत्सव का शुभारंभ गोपाल मैदान में देश भर के नामचीन, जनजातीय एवं स्थानीय साहित्यकारों की उपस्थिति में संयुक्त रूप से दीप जलाकर हुआ। तीन दिन तक चलने वाले महोत्सव के पहले दिन झारखंड के जनजातीय साहित्यकारों की उपस्थिति विशेष उल्लेखनीय रही। महादेव टोप्पो, डॉ पार्वती तिर्की डॉ अनुज लुगुन, रवींद्रनाथ मुर्मू, श्रीमती जोबा मुर्मू, डॉ नारायण उरांव, देवेंद्र नाथ चांपिया, जेरी पिंटो सहित कई साहित्यकारों ने पहले दिन अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

कार्यक्रम के शुरुआत में उप विकास आयुक्त नागेंद्र पासवान ने स्वागत भाषण एवं विषय प्रवेश करते हुए बताया कि आयोजन का उद्देश्य साहित्य और समाज के बीच संवाद को सुदृढ़ करना है और युवाओं को रचनात्मक सृजन से जोड़ना है । साहित्यिक चेतना को नई दिशा देना है। उन्होंने मुख्यमंत्री, झारखण्ड का संदेश सुनाते हुए कहा कि मुख्यमंत्री ने आशा व्यक्त की है कि इस आयोजन से कोल्हान की समृद्ध भाषा को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिलेगी। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में सरकार द्वारा किये जा रहे प्रयास, खासकर सोबरन मांझी पुस्तकालयों की स्थापना की चर्चा की।

उपायुक्त, पूर्वी सिंहभूम कर्ण सत्यार्थी ने इस आयोजन को लेकर कहा कि ख्यातिप्राप्त साहित्यकारों, लेखकों एवं कलाकारों को सुनने, संवाद कर उनकी साहित्य, कला व संस्कृति को नजदीक से समझने का अवसर मिला। आशा है कि यह उत्सव रचनात्मक संवाद और सांस्कृतिक समृद्धि का सशक्त मंच बनेगा।

राष्ट्रीय साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार से सम्मानित डॉक्टर पार्वती तिर्की और डॉक्टर अनुज लुगुन ने विषय पर अपने विचार व्यक्त किये। विषय को विस्तार देते हुए डॉक्टर पार्वती तिर्की ने कहा आदिवासी साहित्य में वाचिक साहित्य और लिखित साहित्य की परंपरा रही है। वाचिक साहित्य में वाचन का दर्शन है और इस के सृजन में आदिवासी समूह के बड़े बुजुर्ग स्त्री पुरुष सभी का सृजन सामूहिक रूप से शामिल है। आदिवासी साहित्य सृजनशीलता की प्रक्रिया में समाज का सहियापन और कृति में जो सामूहिकता है यह एक तरह से अंतः संबंधित है। सृजनशीलता में सब की सहभागिता और कृति में सामूहिकता का जो विजन है यह आदिवासी साहित्य को उसके समय की विश्व दृष्टि से जोड़ती है।।

सत्र को संबोधित करते हुए डोगरो बिरुली ने कहा कि वह समाज मृत है जहां साहित्य का अस्तित्व नहीं है। प्रोफेसर डी0 एन चाम्पिया, पूर्व अध्यक्ष बिहार विधानसभा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आधुनिक भाषाएं प्राकृतिक और अपभ्रंश काल से होते हुए 12वीं शताब्दी के आसपास अस्तित्व में आई जबकि आदिवासी भाषा और उसका इतिहास इससे काफी पहले से है। यह प्रकृति प्रदत्त प्रकृति पोषित और विकसित भाषा है इसलिए इसका कोई व्याकरण नहीं है। अन्य

आधुनिक भाषाएं आदिवासी भाषाओं की संतानें है इसके प्रमाण सत्यम शिवम सुंदरम दिनाम हयाती शून्यहितम इत्यादि उद्धरणों को आदिवासी भाषाओं की दृष्टि से व्याख्यातित कर देखा जा सकता है।

तीसरे सत्र को शुरू करते हुए अक्षय बाहिबाला ने जेरी पिंटो से उनकी नई किताब पर चर्चा की । पैलियेटिव केयर के इतिहास और वर्तमान पर विस्तार से चर्चा करते हुए जेरी पिंटो ने इसकी बुनियादी जरूरत पर प्रतिभागियों का ध्यान आकर्षित किया और इसे विस्तार देने की आवश्यकता पर बल दिया।

चौथे सत्र का विषय था ओलचिकी लिपि का शताब्दी वर्ष। विषय पर चर्चा करने के लिए जोबा मुर्मू, रानी मुर्मू ,रविंद्र मुर्मू, वीर प्रताप मुर्मू मंचासीन हुए। वार्ता के दौरान ओलचिकी लिपि की जरूरत ,उत्पत्ति और विकास पर दृष्टि डालते हुए गुरु गोमके पंडित रघुनाथ मुर्मू के योगदान की चर्चा की गई। वार्ता का सफल संचालन करते हुए रविंद्रनाथ मुर्मू ने कहा कि पंडित रघुनाथ मुर्मू ने साहित्य की लगभग हर विधाओं में अपनी रचनाओं के माध्यम से न सिर्फ संथाली जीवन के हर सांस्कृतिक, दैनिक जीवन को छुआ बल्कि उनका हिस्सा बन गई।

पांचवें सत्र में कुडुख भाषा के संरक्षण और विकास में लगे तथा पेशे से चिकित्सक डॉ नारायण उरांव ने विचार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि संस्कृति तभी बचेगी, जब भाषा बचेगी। उन्होंने कुडुख भाषा और उसकी लिपि तोलोंग सिकि के इतिहास और विकास पर अपना विचार व्यक्त किया।

छठे सत्र में स्थानीय एवं देश भर में प्रतिष्ठित साहित्यकार जयनंदन के साथ अजय मेहताब ने वार्ता की। विषय था मजदूरों के शहर में साहित्य की पौध । जयनंदन ने कहा कि भले ही यह शहर मजदूरों का है, लेकिन उनकी परेशानियों और संवेदनाओं को शहर के साहित्यकारों ने शब्दों में उतारा है। उन्होंने स्वर्गीय कमल, गुरु वचन सिंह ,सी भास्कर राव ,निर्मला ठाकुर सहित कई साहित्यकारों के नाम का उल्लेख किया ,जिन्होंने शहर का नाम साहित्य के क्षेत्र में रोशन किया। उन्होंने कहा कि कंपनी ने विभिन्न भाषा और संस्कृतियों को समृद्ध करने में काफी सहयोग किया है। उन्होंने नाट्य कर्मियों के लिए प्रेक्षागृह सस्ते दर में उपलब्ध नहीं होने पर चिंता व्यक्त की । उन्होंने अपनी चर्चित कहानियों एवं उपन्यासों की रचना प्रक्रिया पर भी जानकारी साझा की। सातवां एवं अंतिम सत्र में डॉ हिमांशु वाजपेयी एवं प्रज्ञा शर्मा ने दास्तान रानी लक्ष्मीबाई की बुलंद एवं रोचक अंदाज में जिसे दास्तानगो कहते हैं उसमें प्रस्तुत की, जिसे उपस्थित लोगों ने काफी सराहा। देर शाम कस्तूरबा विद्यालय सहित विभिन्न विद्यालयों के बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

कार्यक्रमों के सफल संचालन में एसडीओ धालभूम अर्नव मिश्रा, डीटीओ धनंजय, जिला जनसंपर्क पदाधिकारी पंचानन उरांव, जिला शिक्षा अधीक्षक आशीष पांडेय व अन्य पदाधिकारियों का योगदान रहा।

जिला प्रशासन ने 101 नवजात बेटियों की लोहड़ी मनाई

साहिल बेरी

अमृतसर। कैबिनेट मंत्री सरदार हरभजन सिंह ईटीओ और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुहिंदर कौर ने आज लोहड़ी का पावन पर्व सरूप रानी कॉलेज (महिला) में नवजात बेटियों के परिवारों के साथ मिलकर हर्षोल्लास से मनाया। इस अवसर पर डिप्टी कमिश्नर श्री दलविंदरजीत सिंह, अतिरिक्त डिप्टी कमिश्नर श्री रोहित गुप्ता, जिला सामाजिक सुरक्षा अधिकारी श्री असीसइंदर सिंह, जिला प्रोग्राम अधिकारी गुरमीत सिंह, सरूप रानी सरकारी कॉलेज (महिला) की प्रिंसिपल श्रीमती किरणजीत कौर बॉल सहित बड़ी संख्या में नवजात बेटियों के माता-पिता और कॉलेज का स्टाफ मौजूद रहा।

इस अवसर पर कैबिनेट मंत्री ईटीओ ने बेटियों के परिवारों को लोहड़ी की शुभकामनाएँ देते हुए लोहड़ी वितरित की। उन्होंने कहा कि वे वाहेगुरु से प्रार्थना करते हैं कि ये बेटियाँ पढ़-लिखकर अपने परिवार और देश का नाम रोशन करें। उन्होंने कहा कि आज समाज के हर क्षेत्र में हमारी बेटियाँ अपनी पहचान बना रही हैं और अपने माता-पिता तथा देश का गौरव बढ़ा रही हैं।

ईटीओ ने कहा कि लगभग 7-8

जिलों की जिम्मेदारी भी हमारी बेटियाँ डिप्टी कमिश्नर के रूप में संभाल रही हैं। उन्होंने कहा कि हमारी बेटियाँ शिक्षा, खेल और अन्य सभी क्षेत्रों में लड़कों से आगे हैं, बस उन्हें सही अवसर दिए जाने की जरूरत है।

कैबिनेट मंत्री ने कहा कि माता-पिता को अपनी बेटियों को बोझ नहीं समझना चाहिए, बल्कि उन्हें पढ़ाई और आगे बढ़ने के बराबर अवसर देने चाहिए। उन्होंने समाज से दहेज जैसी कुरीतियों को खत्म करने का आह्वान करते हुए कहा कि तभी हम एक अच्छे और सशक्त समाज का निर्माण कर सकते हैं।

इस अवसर पर नगर निगम अमृतसर के मेयर श्री जतिंदर सिंह मोटी भाटिया ने भी लोहड़ी की शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि बेटियों की लोहड़ी अवश्य मनानी चाहिए, क्योंकि बेटियों के बिना समाज प्रगति नहीं कर सकता। उन्होंने कहा कि बेटी और बेटे में कोई फर्क नहीं किया जाना चाहिए, क्योंकि आज की बेटियाँ हर क्षेत्र में अपने माता-पिता का नाम रोशन कर रही हैं।

इस अवसर पर 101 नवजात बेटियों की सामूहिक लोहड़ी मनाते हुए अलाव जलाया गया। इसके बाद सभी 101 नवजात बच्चियों के माता-पिता को कंबल और लोहड़ी से संबंधित पारंपरिक सामग्री भेंट कर सम्मानित किया गया।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095 . newstransportvishesh@gmail.com

(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी .आर .बी . एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023